आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 71 ★ अंक : 01 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जनवरी, 2013 ★ पौष, 2069

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

दूध की धरती खून से लथपथ..!

गोमांस निर्यात का कड़वा सच

सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

वियतनाम, मलेशिया, फिलिपाइल्स, कुवैत, अंगोला, ओमन, इराक, कोंगो, सिरिया, इरान, अर्मेनिया, कोटेडआयवारै, मॉरिशस, कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, ब्रुनै, उझबेकिस्तान जैसे कई

इजिप्त, सऊदी अरब, अरब अमिराती, जॉर्डन, जॉर्जिया, लेबनॉन गॅबॉन, सेनेगल, घाणा, कतार पाकिस्तान, बहरीन, अझबैजन, तजाकिस्तान, अल्वॅनिया, नामिबिया, चीन, अफगानिस्तान, देशो में यह मांस निर्यात हो रहा है ।

पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?

अहिंसा तीर्थ

रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र

'अहिंसा तीर्थ', कुसुंबा, अजंता रोड, जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212

सौजन्य

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

''नयनतारा'', सुभाष चौक, जलगाँव
0257-2223903

''स्वर्णतीर्थ'', आकाशवाणी चौक, जालना रोड, औरंगाबाद
0240-2244520

''नयनतारा इस्टेट'', उन्टवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक
0253-2315644

जहाँ विश्वास ही परंपरा है । *मानवीय आहार शाकाहार ।*

Jai Guru Hasti Jai Guru Heera Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है ।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

कोबा (गांधीनगर) पि.३८२००९

।। महावीराया नमः ।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS &
SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Hasti Jai Guru Heera Jai Guru Maan

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

इहमेगे उ मन्नंति,
अपच्चक्खाय पावगं।
आयरियं विदित्ता णं,
सव्वदुक्खा विमुच्चइ।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.9

यों कतिपय वादी मान रहे,
पापों का बिन परित्याग किए।
आचारमात्र का ज्ञाता ही,
हो सर्वदुःख से मुक्त जिए।।

जनवरी, 2013
वीर निर्वाण संवत्, 2539
पौष, 2069

वर्ष 71 अंक 1

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	नारी की गरिमा	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
	वाग्वैभव(11)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
प्रवचन-	आर्त्तध्यान का स्वरूप (2)	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	14
	चलें अनन्त की ओर	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	21
दीक्षा-अर्द्धशती-	अनन्त की साधना : क्षमा से	-श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा.	28
	पंचाचार के निर्मल साधक आचार्य हीरा (3)	-श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.	33
	जिनकी देह भी देशना देती है	-श्रीमती अंशु सुराणा	61
	तरुवर से श्रेष्ठ गुरुवर	-श्रीमती निधि अर्पित लोढ़ा	65
	गुरुकृपा : श्रद्धापूर्वक समर्पण	-श्रीमती भावना जैन	67
	श्रद्धास्पद संयमी जीवन	-श्री आर. नरेन्द्र कांकरिया	73
जीवन-व्यवहार-	औपचारिक क्षमा-याचना की सार्थकता	-प्रो. सागरमल जैन	39
	जैन समाज की शिक्षा, शान्ति और सेवा में भूमिका	-श्री सज्जनराज मेहता	89
प्रासङ्गिक-	"जिनवाणी" मासिक पत्रिका की जीवन-यात्रा	-डॉ. श्वेता जैन	41
शोधालेख-	जैन एवं वेदान्त दर्शन में अधिकारी का स्वरूप	-डॉ. दीपमाला	49
अंग्रेजी-स्तम्भ-	The Rights of All Life forms in Acaranga Bhasyam	-Dr Samani Shashi Prajna	55
युवा-स्तम्भ-	क्रोध एक कमज़ोरी है	-श्रीमती बीना जैन	77
नारी-स्तम्भ-	दुःखी लोग टीवी ज्यादा देखते हैं	-अमृत साधना	79
स्वास्थ्य-विज्ञान -	नाभि-चिकित्सा	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	81
बाल-स्तम्भ -	तीर्थंकर पार्श्वनाथ की करुणा	-श्री गणेशमुनि शास्त्री	93
कविता/गीत-	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.	20
	बन गये अणगार	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.	27
	जय, जन-जन प्रिय गुरु मान	-श्रीमती सुशीला भण्डारी	32
	शुद्ध श्रद्धा दृढ़ता रे साथे	-श्री दिलखुशराज जैन	48
	वीतरागता के पथ पर	-सौ. छाया मनोहर भण्डारी	54
	जिनवाणी है उसका नाम	-डॉ. अंजना बैराठी	64
	आछी लागी रे थांसु प्रीतड़ी	-श्रीमती मंजु प्रसन्न भण्डारी	66
	तुमको लाखों प्रणाम	-श्री उम्मेदमल जैन	75
	शिक्षा देती जिनवाणी	-श्री मगनचन्द जैन	76
	दुःखों से गर जो बचना है, धर्म की शरण में आना	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	80
	जग जायें तो अच्छा	-श्री निर्मल जामड़	91
	कम खाना, गम खाना, नम जाना	-डॉ. दिलीप धींग	96
	गुरु फरमाते हैं	-श्री पीयूष गुप्ता	99
विचार-	बुढ़ापा : एक अच्छा अवसर	-श्री गुलाबचन्द जैन	103
संस्मरण-	सम्प्रदायवाद से दूर थे आचार्य श्री हस्ती	-प्रो. चाँदमल कर्णावट	68
	वचनसिद्ध आचार्यश्री	-श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरड़िया	88
परिचर्चा-स्तम्भ-	संवाद	-संकलित	92
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें (30)	-श्री नमन मेहता	97
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (33)	-संकलित	100
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	104
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	106
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	123

सम्पादकीय

नारी की गरिमा

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

नारी की गरिमा उसके शील से बढ़ती है। शील के अन्तर्गत सभी चारित्रिक गुणों का समावेश हो जाता है। आज भी इस सत्य का प्रतिषेध नहीं किया जा सकता। दिल्ली में घटित घटना इसकी पुष्टि करती है। 16 दिसम्बर को एक बस में कुछ सिरफिरे युवकों के द्वारा एक युवति का सामूहिक बलात्कार किया गया और उसे बस की खिड़की से फेंक दिया गया। इस घटना का जो देश में विरोध हुआ वह नारी की गरिमा को सुनिश्चित करना चाहता है। न केवल युवतियाँ और महिलाएँ, अपितु युवक भी प्रदर्शन कर यह माँग कर रहे हैं कि इस प्रकार का अपराध करने वाले व्यक्ति को मृत्यु दण्ड दिया जाना चाहिए। यह आक्रोश न केवल दिल्ली में, अपितु देश के अनेक नगरों में दिखाई दे रहा है।

यह युग विकास का युग है। पुरुष हो या स्त्री, बालक हो या बालिका, मनुष्य मात्र का जीवन सुरक्षित हो तथा सब सम्मान पूर्वक जी सकें, इसकी आज आवाज उठ रही है। न्यायपालिका एवं देश की जनता मानवाधिकार की रक्षा के प्रति जागरूक होती जा रही है। विधायिका एवं कार्यपालिका में भी जागरूकता बढ़ रही है। नारी की रक्षा हेतु दण्ड का प्रावधान बढ़ाया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति में नारी का गरिमामय स्थान रहा है। यह भी कहा गया है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं- ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः''। इसका तात्पर्य है कि जिस समाज या देश में नारी का सम्मान है वहाँ पर जीवन देव तुल्य हो जाता है। नारी का सम्मान तभी होगा जब नारी शील से सम्पन्न होगी। नारी जब शील से सम्पन्न होगी तो वह नई पीढ़ी को भी शील एवं चारित्रिक गुणों से युक्त कर सकेगी। परिवार में पति, श्वसुर, सास आदि के साथ भी उसका व्यवहार समायोजनपूर्ण होगा।

दिल्ली में घटी घटना तीन बातों का संकेत करती है- 1. आम व्यक्ति नारी के साथ दुराचार का पक्षधर नहीं है। वह उसके शील की रक्षा चाहता है। 2. वह नारी के प्रति क्रूरता एवं बर्बरतायुक्त व्यवहार नहीं चाहता। 3. नारी का विकास निराबाध रूप से होता रहे। यह एक शुभ संकेत है कि दुर्जन के विरुद्ध सज्जनों की आवाज उठने लगी है। अथवा यूँ कहें कि असत्य पर सत्य की विजय होने लगी है।

प्राचीन परम्परा के अनुसार नारी के शील एवं जीवन की रक्षा का दायित्व प्रमुख रूप से पिता, पति और पुत्र पर रहा है। कुमारी अवस्था में पिता, यौवनावस्था में पति तथा

वृद्धावस्था में पुत्र नारी की रक्षा करता है। लेकिन आज नारी शिक्षा की प्राप्ति एवं नौकरी के लिए दूसरे शहरों में जाने लगी है। वहाँ पर न पिता होता है, न पति होता है और न ही पुत्र। वहाँ नारी को अपने शील की रक्षा स्वयं करनी होती है। इसके लिए उसे अपनी योग्यता का विकास करना आवश्यक है। माता-पिता तो मात्र दूरभाष पर सम्पर्क स्थापित करके ही संतुष्ट होते रहते हैं। वे कोशिश भी करते हैं कि उनकी पुत्री जिस उद्देश्य से दूसरे शहर में रह रही है, वह उस उद्देश्य को पूर्ण करे तथा किसी प्रकार की ऐसी परिस्थिति उत्पन्न न हो कि उनकी पुत्री का जीवन संकट में पड़े और न परिवार की प्रतिष्ठा पर किसी प्रकार की आंच आए। पति भी पत्नी के प्रति इसी प्रकार की अभिलाषा रखता है।

नारी के सशक्तीकरण पर आज बल दिया जा रहा है। कतिपय ऐसे कार्यक्रम भी चलते हैं जिनमें नारी को प्रशिक्षण दिया जाता है कि वह विषम परिस्थितियों में अपने को सुरक्षित रख कर किस प्रकार अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकती है। नारी में आत्मबल, आत्मविश्वास का होना आवश्यक है।

प्रश्न यह है कि नारी अपने शील की रक्षा किस प्रकार करे? इस सम्बन्ध में कई विचारणीय बिन्दु हो सकते हैं। एक तो यह कि नारी की वेशभूषा इस प्रकार की हो कि जिससे भद्रता का बोध हो। अंगों के प्रदर्शन की भावना से वेशभूषा धारण करने पर दूसरों के मन में उद्वेलन की संभावना रहती है, जिससे उनके मन में उस महिला के प्रति कामुकता का भाव जाग सकता है। एक नारी में सुन्दरता के प्रदर्शन की भावना हो सकती है, किन्तु वह वेशभूषा एवं हावभाव में ऐसा प्रदर्शन न करे जिससे कामुकता को बढ़ावा मिले। अभिनेत्रियों एवं विश्व सुन्दरियों की वेशभूषा तथा फिल्मों एवं टीवी के विभिन्न धारावाहिकों में प्रदर्शित वेशभूषा का अनुकरण करना शील की रक्षा में सहायक नहीं है। समस्या इसीलिए उत्पन्न होती है कि एक ओर सौन्दर्य का प्रदर्शन है तो दूसरी ओर शील की रक्षा का प्रश्न है। इन दोनों में सामंजस्य बिठाना सब के लिए सहज नहीं है। ऐसी कुछ ही नारियाँ होती हैं जो इनमें सामंजस्य बिठा लेती हैं। आम नारी द्वारा उनका अनुकरण खतरे से खाली नहीं है। पाश्चात्त्य संस्कृति का खुलापन भी भारत में बढ़ता जा रहा है। जिसे हर नारी के लिए उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। दूसरे बिन्दु में सोचें तो विचारों का विकास भी शील की रक्षा में सहायक है। विचारों के विकास से ही आत्मबल, मनोबल, निर्भयता, आत्मविश्वास आदि की वृद्धि होती है। पुरातन काल में महिलाएँ बहुत कम पुरुषों से मिल पाती थी। आज उन्हें अनेक अपरिचित पुरुषों से भी मिलने का मौका मिलता है। अतः उनसे वार्ता का क्या रूप हो, तथा कितनी मर्यादा हो, यह ध्यान नारी को ही रखना होता है। उनकी वार्ता में यदि सात्त्विकता तथा परिपक्वता होगी तो वे पुरुषों से मिलने पर भी

निष्कलंक रह सकती हैं।

पुरुष और स्त्री की शरीर रचना में भेद है। इसलिए पुरुष निःसंकोच रूप से किसी भी शहर में आवागमन कर सकता है। वहाँ रह सकता है, घूम फिर सकता है। किन्तु नारी के लिए कठिनाई है। इसलिए पुरुष का भी दायित्व बनता है कि वह नारी की गरिमा की रक्षा में सहायक बने। घर हो या बाहर, नारी का सहयोग सर्वत्र आवश्यक होता है। नारी के स्वाभिमान और विकास की रक्षा हेतु पुरुष अपने आचरण को संयमित कर सकता है।

पुरुष के द्वारा नारी की गरिमा की रक्षा के लिए कुछ प्रयत्न अपेक्षित हैं। सबसे बड़ी आवश्यकता कामवासना पर नियन्त्रण की है। मनुष्य जब वासना से पीड़ित होता है तो वह भूल जाता है कि उसके द्वारा आचरण की क्या मर्यादा होनी चाहिए। भारतीय परम्परा में कहा गया है- **"मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्, आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।"** अर्थात् स्वपत्नी के अतिरिक्त स्त्रियों को माता अथवा बहिन के समान समझना चाहिए। इस दृष्टि का विकास होने पर वासना को संयमित करना सरल हो सकता है। दण्ड का विधान उन लोगों के लिए है जो किसी भी प्रकार से अपने को नियंत्रित नहीं कर पाते। दण्ड एवं भय के द्वारा ऐसे लोगों पर नियंत्रण करना सरकार का दायित्व बनता है। इसीलिए सम्पूर्ण देश में यह मांग की जा रही है कि उन सिरफिरे लोगों को मृत्यु का दण्ड दिया जाए। ताकि इस प्रकार की प्रवृत्ति को बल न मिले। जो शिक्षा और ज्ञान से नहीं समझ पाते हैं वे समुचित दण्ड से ही नियंत्रित किए जाते हैं।

स्त्री के प्रति पुरुष की दृष्टि अभी तक उदार नहीं हो पाई है। वह अपनी भार्या के प्रति भी क्रूरता पूर्वक व्यवहार करता दिखाई देता है। उसमें वासना के अतिरिक्त अहंकार का भाव अधिक आरूढ़ रहता है। वह स्त्री को पैर की जूती के समान समझता है। इसलिए उस पर अत्याचार करने में उसे संकोच नहीं होता। यह घरेलू हिंसा के अन्तर्गत आता है। नारी के प्रति हिंसा का व्यवहार जब निम्न तबके के घरों में भी बंद हो जायेगा, उस दिन समझना चाहिए कि नारी की गरिमा को सुरक्षित रखने के प्रति पुरुष जागरूक हो गया है। स्त्री-भ्रूणहत्या, दहेज प्रथा आदि बुराइयाँ भी समाज में नारी की गरिमा को कम करती हैं। आधुनिक युग में स्त्री और पुरुष में पारिवारिक स्तर पर, शिक्षा के स्तर पर तथा कुछ अंशों में आर्थिक स्तर पर भेद कम होता जा रहा है। पुत्री भी आज उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितना पुत्र। बल्कि स्त्री संतान की संख्या घटने के कारण भी कई पुरुष कुँवारे डोल रहे हैं। दिल्ली में जो घटना घटी, ऐसी कई घटनाएँ गुपचुप घटती रहती हैं। किन्तु सब प्रकाश में नहीं आ पाती हैं। इस तरह की घटनाओं के पीछे एक कारण पुरुषों की संख्या बढ़ना और उनका कुँवारा रहना भी है। मदिरा, हीरोइन आदि का नशा भी मनुष्य को बेभान बनाता है तथा उसे

नशे में वह कुकृत्य कर डालता है। कभी होटल में तो कभी सूने स्थानों पर ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह मादक वस्तुओं के प्रयोग पर भी रोक लगाए एवं स्वस्थ वातावरण का विकास करे।

नारी को उपभोग की वस्तु समझना उसका अनादर है। आज महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में पुरुषों से भी आगे बढ़ रही हैं। रोजगार की दृष्टि से भी वे कई ऐसे क्षेत्रों में पहुँची हैं जिन्हें पहले नारी के लिए कठिन माना जाता था। न्यायालय हो या विश्वविद्यालय, व्यापार हो या सेना, अस्पताल हो या विमान-सेवा, सर्वत्र महिला ने अपनी साख बनाई है। इस बढ़ते युग में शील पर जो आंच आ रही है, उसके निराकरण हेतु दोनों ही उपाय अपनाने आवश्यक है। एक तो स्त्री और पुरुष के बीच मर्यादित व्यवहार तथा दूसरा दुराचार पर दण्ड का प्रावधान। कई बार छोटी-छोटी बालिकाओं के साथ दुराचार की खबर अखबार में दिखाई देती है, तो रूह काँप जाती है। समाज में ऐसी स्त्रियाँ भी हैं जो बड़ी उम्र होने तक भी योग्य वर को प्राप्त नहीं कर पाती है। मनुष्य की वासना पर जब तक विवेक की लगाम नहीं होगी तब तक ऐसी घटनाओं को दण्ड से भी कितना रोका जा सकेगा, कहा नहीं जा सकता।

आधुनिक संचार साधनों के कारण समाज बड़ी तेजी से बदल रहा है। युवक-युवतियाँ अपने माता-पिता से पृथक् सोच रखती हैं। माता-पिता उनके साथ समायोजन करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। मोबाइल का युग जहाँ विकास को गति दे रहा है वहाँ वह दूरस्थ स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों को भी बढ़ावा दे रहा है। इसको रोकने के लिए कुछ शहरों में छात्र-छात्राओं के द्वारा मोबाइल प्रयोग पर प्रतिबंध भी लगाया गया है। कुछ समाजों में महिला द्वारा चेहरे को पूरी तरह ढक कर चलने को भी प्रतिबन्धित किया गया है। चिन्ता सम्पूर्ण समाज को है, किन्तु डोर हाथ में नज़र नहीं आ रही है। इसलिए सब सरकार की ओर मुखातिब हो रहे हैं।

नारी अपनी ओर से अपनी गरिमा को बचाये रखने का जितना उपाय स्वयं कर सकती है, उसे वह स्वयं करे तथा अपने संरक्षकों की चिन्ता का भार कम करे। वह आत्म-सामर्थ्य एवं कौशल में तो अभिवृद्धि करे ही, किन्तु उच्छृंखल युवकों को दण्डित कराने के लिए शिकायत भी दर्ज करती रहे, ताकि उनके द्वारा शर्मनाक घटनाएँ घटित न हो सकें। नारी अपने व्यक्तित्व का विकास करती हुई मान-मर्यादा का ध्यान रखे तथा ऐसे अवसरों से बचें जहाँ मनुष्य की देह में जंगली भेड़िए उसे नोंचने के लिए तैयार बैठे हों। बुद्धि, शिक्षा, कार्यनिष्ठा एवं सभी प्रकार का योगदान नारी भी उतना ही कर सकती है, जितना एक पुरुष। इसलिए वह पुरुष की सहयोगिनी है। पुरुष एवं स्त्री दोनों परस्पर सहयोग से कार्य करें तो हिंसा और उपद्रव पर विजय पाई जा सकती है तथा नारी की गरिमा सुरक्षित रह सकती है।★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

राग-द्वेष

एविंदियत्था य मणस्स अत्था, दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं, न वीयरागस्स करेंति किंचि।।
न कामभोगा समयं उवेंति, न यावि भोगा विगइं उवेंति।
जे तप्पओसी य परिग्गही य, सो तेसु मोहा विगइं उवेई।।
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोहं दुगुंच्छं अरइं रइं च।
हासं भयं सोग पुमित्थिवेयं,नपुंसवेयं विविहे य भावे।।
आवज्जइ एवमणेगरूवे, एवंविहे कामगुणेसु सत्तो।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे, कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से।।
विरज्जमाणस्स य इंदियत्था, सद्दाइया तावइयप्पगारा।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा, निव्वत्तयंती अमणुन्नयं वा।।
एवं ससंकप्प विकप्पणासुं संजायई समयमुवट्ठियस्स।
अत्थे य संकप्पयओ तओ से, पहीयए कामगुणेसु तण्हा।।

पद्यानुवादः-

इन्द्रिय और मन के विषय यहाँ रागी के दुःख-कारण होते।
वे वीतराग के लिए नहीं, किंचित् भी दुःखदायक होते।।
समता के हेतु न काम-भोग हैं, नहीं विकार हेतु होते।
उनके प्रति जिनके राग-द्वेष, वे मोह-विवश विकृत होते।।
क्रोध मान माया भय रति, और जुगुप्सा लोभ अरति।
हास्य शोक एवं नानाविध, नर-नारी-नपुंसक-वेदमति।।
जो कामगुणों में सक्त पुरुष, वह विविध विकारों को पाता।
नरकादि कष्ट से दीन-हीन, लज्जित अप्रिय हो दुःख पाता।।
विरक्त मन वाले जन को, शब्दादि-विषय जितने सारे।
अच्छे न उसे होते प्यारे, अमनोज्ञ नहीं लगते खारे।।
हैं राग-द्वेष ही दोषमूल, ना इन्द्रिय विषय करे चिन्तन।
माध्यस्थ्य-भाव-चिन्तन करने से, कामेच्छा घटती है प्रतिक्षण।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, बत्तीसवाँ अध्ययन, प्रमादस्थान, गाथा-100-103, 106-107

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

ज्ञान-अज्ञान

- ये जो भौतिक पदार्थ धन, धान्य आदि हैं, इनके कितने ही स्वामी बदल गये। फिर आप कैसे कहते हैं कि ये मेरे हैं। यह नगीना मेरा है, यह हवेली मेरी है, यह बंगला मेरा है इत्यादि। यह जो मेरेपन की बात है या जो बोध है, उसके बारे में शास्त्रों में कहा गया है कि अज्ञान के कारण प्राणी ऐसा समझ रहा है।
- अज्ञानी और ज्ञानी के जीवन में बड़ा अन्तर होता है। बहुत बार दोनों की बाह्य क्रिया एक-सी दिखाई देती है, फिर भी उसके परिणाम में बहुत अधिक भिन्नता होती है। ज्ञानी का जीवन प्रकाश लेकर चलता है, जबकि अज्ञानी अन्धकार में ही भटकता है। ज्ञानी का लक्ष्य स्थिर होता है, अज्ञानी के जीवन में कोई लक्ष्य प्रथम तो होता ही नहीं, अगर हुआ भी तो विचारपूर्ण नहीं होता। उसका ध्येय ऐहिक सुख प्राप्त करने तक ही सीमित होता है। फल यह होता है कि अज्ञानी जीव जो भी साधना करता है वह ऊपरी होती है, अन्तरंग को स्पर्श नहीं करती। उससे भवभ्रमण और बन्धन की वृद्धि होती है, आत्मा के बन्धन नहीं कटते।
- 'ज्ञा' धातु से जानने अर्थ में 'ज्ञान' शब्द की सिद्धि होती है। उसका अर्थ होता है-'ज्ञायते हिताहितं धर्माधर्मौ येन तद् ज्ञानं' अर्थात् जिसके द्वारा हिताहित या धर्माधर्म का बोध होता है, जो कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का और सत्य-असत्य का बोध कराता है, मोक्ष मार्ग का बोध कराता है, उसको ज्ञान कहते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि ज्ञान एक वह साधन है, जिसके द्वारा आत्मा अपनी शक्ति का, सत्यासत्य के बोध में उपयोग कर सके। सत्यासत्य का बोध करने वाले गुण का नाम ज्ञान है। ज्ञान सम्यक् भी होता है और मिथ्या भी होता है। संक्षेप में कहा जाये तो पदार्थों के स्वरूप की यथार्थ अभिव्यक्ति का नाम सम्यक् ज्ञान है।
- मोक्ष मार्ग में जिस प्राणी को लगना है, उसके लिए सम्यक् ज्ञान का होना परमावश्यक है। अज्ञान और कुज्ञान से हटकर सम्यक् ज्ञान में जब प्राणी का प्रवेश होगा, तब समझना चाहिए कि वह मोक्ष-मार्ग का पहला पाया या पहला चरण प्राप्त कर सकता है।
- वर्ण-ज्ञान, भाषा-ज्ञान, कला-ज्ञान, लेखन-ज्ञान, पदार्थ-ज्ञान, रसायन-ज्ञान इत्यादि भिन्न-भिन्न ज्ञान हैं। ये मानव को पदार्थ का बोध कराने में सहायक सिद्ध होते हैं, लेकिन जब तक सम्यक् ज्ञान नहीं हो जाता, तब तक ये सभी लौकिक ज्ञान भव-बंधन को काटने में सहायक नहीं होते।
- ऐसा ज्ञान जिससे भव-बंधन की बेड़ी काटना सम्भव हो, किसी पुस्तक से, किसी कॉलेज से, किसी विश्वविद्यालय से प्राप्त होने वाला नहीं है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (11)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

जीवन-विकास

- तीव्र कषायी, यहाँ और वहाँ, सर्वत्र दुःखी होते हैं।
- जब तक क्रोधादि कषायों की तीव्रता है, तब तक सन्मार्ग पर चरण नहीं बढ़ेंगे।
- बहुश्रुत बनने में पाँच महादोष हैं- अहंकार, क्रोध, प्रमाद, रोग और आलस्य।
- किसी की हँसी मत कीजिये, किसी के दुर्गुण मत देखिये। किसी में चाहे सौ बुराइयाँ हो, फिर भी कोई न कोई गुण होगा ही।
- महापुरुषों के जीवन की यह खूबी है कि वे अवगुण को गुण में बदल कर बताते हैं।
- श्रद्धा के साथ विवेक होना आवश्यक है।
- सामायिक का सन्देश है अपने समान दूसरों को समझो।
- स्वाध्याय और सामायिक आचार सुधारने वाले हैं।
- पहले अपने पर दया करो, उसके बाद संसार पर दया करो। अपने पर दया करने वाला दुनिया पर भी दया करता ही है।
- मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए व्रती बनिये।
- व्यक्ति सुधर जायेगा, समाज सुधर जायेगा, तो राष्ट्र सुधर जायेगा।
- सम्यग्दर्शनी देव निर्जरा का उपाय जानते हुए भी साधना में चारित्र के चरण नहीं बढ़ा सकते हैं।
- कोई खाने के लिए जीते हैं, कोई जीने के लिए खाते हैं, लेकिन साधक संयम-यात्रा का निर्वाह करने के लिए आहार लेते हैं।
- अपना चित्त निर्मल बनाना है तो आहार का चयन सही करना जरूरी है।
- जिस भोजन को ग्रहण करने से मन में विकार उत्पन्न न हों, चित्त में समाधि रहे तथा संयमयात्रा का निर्वाह भली प्रकार से हो, वह सात्त्विक भोजन है।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-1 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

आर्त्तध्यान का स्वरूप (2)

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

(गतांक से आगे....।)

पाप के दो कारण

आर्त्तध्यान के वशीभूत होकर मनुष्य पाप में प्रवृत्त होता है। कभी-कभी जब वह दुःखों से घबरा जाता है तो बड़े-बड़े अकरणीय कार्य कर बैठता है। पाप से फिर संताप बढ़ता है, संताप से फिर पाप का जन्म होता है और यह चक्र चलता रहता है। एक आचार्य ने बताया है-

पाप-प्रभावाच्च भवेद् दरिद्रो, दारिद्र्यभावाच्च करोति पापम्।
पाप-प्रभावान्नरके प्रयाति, पुन दरिद्रः पुनरेव पापी।।

पाप के कारण मनुष्य दरिद्र होता है। दरिद्र मनुष्य पेट भरने के लिए दर-दर की ठोकरें खाता है, अपमान, यातना एवं पीड़ाएँ सहन करता है। दुःख एवं कष्ट की ज्वाला में तिल-तिल जलकर उसे जीवन गुजारना पड़ता है। इन दुःखों एवं अभावों से छुटकारा पाने के लिए वह पुनः पाप करता है। हिंसा, चोरी आदि दुष्कर्म में प्रवृत्त होता है। इन दुष्कर्मों के कारण पुनः पाप का बंध करके नरक में जाता है। इस प्रकार पाप से दरिद्रता उत्पन्न होती है और दरिद्रता से पुनः पाप की प्रवृत्ति होती है, और यों यह चक्र चलता रहता है। पाप और दरिद्रता, दरिद्रता और पाप। यह लम्बी परम्परा चलती रहती है। इसीलिए दरिद्रता को पापों की जननी कहा है।

यह एक कारण है पाप करने का जिसे विवशता कहा जाता है। भूखा आदमी कहता है, मुझे रोटी चाहिए, मेरे पेट में भूख की ज्वाला धधक रही है, मेरे तन पर एक बिस्त कपड़ा नहीं है, सर्दी से ठिठुर कर मेरी आंतें बल खा रही हैं। मांगने से पेट भरता नहीं, इसीलिए मुझे चोरी करनी पड़ती है, हिंसा करनी पड़ती है, झूठ बोलना पड़ता है, यह मेरी विवशता है।

दूसरी ओर एक साधन संपन्न व्यक्ति है, जिसके पास मिष्ठान्नों के थाल भरे हैं। कपड़ों से संदूके भरी हैं, नोटों से तिजोरी भरी है। रहने को खूब आलीशान बंगला है, घूमने के लिए कारें हैं, मनोरंजन और भोगविलास के सब साधन उपलब्ध हैं। उससे कोई पूछे कि तुम झूठ क्यों बोलते हो? रिश्वत क्यों लेते हो? दूसरों को धोखा क्यों देते हो? इतना धन पास में है तो अब शांति से बैठकर भगवान का नाम क्यों नहीं लेते? सामायिक संवर में

ध्यान क्यों नहीं लगाते? तो वह क्या उत्तर देगा? अभी गृहस्थ हैं, बेटे पोते हैं, सबकी फिकर करनी पड़ती है। साधु थोड़े ही हो गए है सो मुँह बांधकर बैठ जायें।

यह क्या है? यह विवशता तो नहीं है। यह है मनुष्य की मोह-मूढ़ता। रागानुकूलता। तो पाप करने के दो कारण हमारे सामने आते हैं- एक विवशता और एक मोह-मूढ़ता। यद्यपि विवशता के कारण किया जाने वाला पापाचरण एवं अनैतिक कृत्य आखिर उचित तो नहीं है, क्योंकि विवशता अनैतिकता को नैतिकता का परिधान नहीं पहना सकती, किंतु फिर भी उसकी अनैतिकता की अपेक्षा एक साधन संपन्न की अनैतिकता तथा पापाचरण अधिक गर्हणीय है।

एक परचून की छोटी सी दुकान करने वाला, गली-गली फिरकर सामान बेचने वाला छोटा-मोटा व्यक्ति यदि कपट करता है, झूठ बोलता है तो यह माना जा सकता है कि वह पेट की ज्वाला शांत करने के लिए यह कर रहा है। दो मुट्ठी अनाज के लिए वह पाप करने को विवश हो रहा है, क्योंकि- **सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमूलाः**। सब पाप सिर्फ दो मुट्ठी चावल के लिए किये जाते हैं। किंतु एक लखपति जब दूसरों के गले पर छुरी चलाता है, कपट और धोखा करता है तब क्या कहा जायेगा? यही कि उसमें धन की तृष्णा प्रबल हो रही है, मोह की उछालें आ रही हैं, जैसे समुद्र में ज्वार आता है वैसे उसके हृदय में भी धन की लालसा का ज्वार उठ रहा है। भोग, यश एवं अहंकार की आकांक्षा का तूफान उठ रहा है, जिसके कारण वह पाप, अन्याय एवं अत्याचार में लीन हो रहा है। अपने कर्तव्य, अपनी आत्मा एवं परलोक के सम्बन्ध में बिल्कुल ही बेपरवाह होकर रातदिन धन एवं विषयों के चिंतन में डूबा जा रहा है।

आत्मा को भूल गये हैं

आप और हम अनादिकाल से इस प्रकार के आर्त एवं रौद्र ध्यान के वशीभूत होकर मोहग्रस्त हो रहे हैं। सांसारिक सुखों के पीछे पागल हुए दौड़ रहे हैं। रात-दिन इन्द्रियों को प्रिय लगने वाले विषयों की प्राप्ति और अप्रिय विषयों से मुक्ति पाने की चेष्टा कर रहे हैं। आर्त एवं रौद्र ध्यान के चक्र में हम अपनी अनन्त ज्ञान-दर्शन-सुखात्मक आत्मा को भूल गये हैं। आत्मा का क्या हाल हो रहा है, उसकी कोई चिंता नहीं। सिर्फ भौतिक विषयों की ही चिंता कर रहे हैं। पेट और पेटी की चिंता में, पेट का जो स्वामी है, पेटी का जो अधिकारी है, उसे भुला रहे हैं। मुझे एक सूक्ति याद आ रही है-

स्मर्तव्यं रूपं स्मरसीह नात्मन्, विस्मार्यमर्थं स्मरसि त्वमत्र।
विस्मृत्य भोक्तारमरक्षि भोग्यं, वस्तु स्वलुब्धेन गृहे प्रदीप्ते।।

आत्मन्! जिसका स्मरण करना चाहिए उसे तू भूल रहा है, और जिसको भुला देना

चाहिए उसका स्मरण कर रहा है, यह कैसा विपरीत आचरण है तेरा? घर में आग लगने पर जो भोग्य वस्तु है उन्हें तो निकाल रहा है, किंतु जो भोक्ता है, उसे भूल कर वहीं छोड़ रहा है, यह कैसी मूढ़ता है तेरी?

एक बहुत बड़े धनाढ्य सेठ के घर में अपार संपत्ति भरी थी, किसी बात की कमी नहीं थी। जो कमी थी वह भी पुण्योदय से ढलती उम्र में पूरी हो गई। घर में एक पुत्र नहीं था, बस उसी के लिए सेठ-सेठानी रात-दिन सोच करते, देवी-देवता को मनाते। भाग्योदय से सेठानी की गोद हरी-भरी हो गई। घर में पुत्र का जन्म हुआ। सेठ ने बड़ी खुशियाँ मनाई। पूरे गांव में मिठाई बांटी और तरह-तरह के उत्सव किए।

एक बार बालक कमरे में पालने में सोया था। अचानक सेठ के घर में आग लग गई। चारों और ज्वालाएँ उठने लगीं। लौग दौड़े, सेठ बचाओ-बचाओ कर रहा था। लोगों ने सोने की, जवाहरात की पेटियां धड़ाधड़ बाहर निकालीं। संदूकें, चांदी-सोने के बर्तन, बहुमूल्य जेवर आदि सब बाहर निकाल लाये। लोगों ने कहा- "सेठजी! याद करो और कोई खास चीज तो नहीं रहीं? आग जोर पकड़ रही है, हो तो जल्दी बताओ।" सेठ घबराया हुआ था, बोला-"बस आ गई सब खास चीजें।" क्षण भर में आग चारों ओर फैल गई। ज्वालाएँ आकाश को चूमने लगीं। तभी अचानक सेठ को पुत्र की याद आई।

"स्वल्प समय के बाद सेठ को स्मरण हुआ नन्दन का।
हा-हा सुत को भूल गया, मुख शब्द उठा क्रन्दन का।"

सेठ सिर पीटकर रोने लगा, "हाय! और सब कुछ निकाल लिया, लेकिन मेरा लाल, मेरे कलेजे की कोर, वह तो रह ही गया। अरे कोई उसे निकालो।"

अब कौन निकाल पाता। आग में तो सब स्वाहा हो रहा था। लोगों ने कहा-"सेठ! कैसे मूर्ख हो, जो चीज सबसे पहले निकालने की थी, उसे तो भूल गये, और ये बेकार की चीजें निकालने लगे? ये किसके काम आयेंगी? जब भोक्ता ही नहीं रहा तो भोग्य वस्तु का क्या महत्त्व है?"

मेघकुमार जब भगवान महावीर स्वामी के समक्ष अपने राजकीय सुखों एवं वैभव का त्याग कर उपस्थित होता है तो वह भगवान से प्रार्थना करता है-"**आलित्त-पलित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य**" हे भगवन्! यह लोक जरा और मरणरूप अग्नि से जल रहा है। जैसे आग की लपटों में स्वाहा होते हुए घर में कोई समझदार गाथापति छोटी-मोटी अल्पभोगी वस्तुओं को छोड़ कर जो सबसे मूल्यवान वस्तु होती है उसे ही सर्वप्रथम निकालने का प्रयत्न करता है, इसी प्रकार भगवन्! मैं भी अपनी आत्मा रूप इस महामूल्यवान वस्तु को संसार की ज्वालाओं से निकालना चाहता हूँ।"

बंधुओं! आप मेघकुमार की तरह सोचेंगे या सेठ की तरह? उस सेठ की तरह तो नहीं कर रहे हैं न? जिसने-

सब कुछ काढ लिया था, पर एक लाल को भूल गया।
वैभव पर ध्यान दिया था, पर एक बाल को भूल गया।।

संसार के विषय, भोग, धन-संपत्ति, सुख आदि की तृष्णा में कहीं अपनी आत्मा को तो नहीं भूल रहे हैं? जो आत्मा अनन्त शक्तियों की भंडार है, अक्षय अव्याबाध सुखों की निधि है, उसे भुलाकर यदि विषयों के पीछे दौड़ रहे हैं, चाहे विवशता के कारण या रागानुकूलता के कारण, दोनों ही कारणों से आत्मा की अवगणना करना मूर्खता है। जो विषय वस्तु पुण्य के उदय से प्राप्त होने की है, वह तो हो जायेगी, किंतु उसके प्रति अधीर नहीं होना चाहिए।

आप देखते हैं, कई लोग रोटी के बासी टुकड़े लेकर कुतों को डालते हैं, तो एक-एक टुकड़े के लिए कुत्ते कैसे झपटते हैं? कैसे पूछ हिलाहिला कर दौड़ते हैं? उनमें रोटी के एक सूखे टुकड़े के प्रति कितनी तीव्र लालसा है? और एक तरफ देखिए एक हाथी खड़ा है। कहा जाता है हाथी के लिए सवामण की रोटियां बनाई जाती हैं, उसके सामने रोटी लाई जाती है तो क्या वह भी कुत्तों की तरह पूंछ हिलाता है या इधर-उधर लपकता है? नहीं, उसके मन में धैर्य है। वह धीरज रखता है तो रोटी अपने आप पास में आ जाती है और कुत्ता धीरज खोता है तो रोटी के पीछे-पीछे दौड़ने पर भी कभी मिलती और कभी नहीं मिलती।

टूक एक के कारणे, कुत्ता दर-दर जाये।
रहिमन धीरज के राखे, हाथी मन भर खाय।।

जो मनुष्य विषयों के पीछे अंधा होकर दौड़ता नहीं, धीरज रखता है, मन को संभाल कर रखता है, मनोज्ञ विषय, सुख और संपत्ति उसके पास स्वयं आ जाते हैं। अनाथी मुनि का उदाहरण आपके ध्यान में है।

सयं च जइ मुच्चेज्जा वेयणा विउला इओ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वए अणगारियं।।

"यह भयंकर वेदना यदि स्वयं ही शांत हो जाए तो मैं समस्त सांसारिक बंधनों का त्यागकर शान्त-दान्त निरारंभी अणगार बन जाऊँगा, साधु बनकर साधना में लीन हो जाऊँगा।" इस संकल्प का चमत्कार देखिए, बस कुछ ही समय में वेदना कम होने लगी, आँखों में झपकियाँ आने लगी और धीरे-धीरे शांत नींद आ गई। रात-रात में वेदना कहाँ गायब हो गई। पता ही नहीं चला, प्रातः जब उठा तो देखा-"वेयणा मे खयं गया"। मेरी वेदना नष्ट हो गई, पीड़ा शान्त हो गई और मन में अपूर्व प्रसन्नता उमड़ आई।

तो यह है एक प्रकार की आध्यात्मिक चिकित्सा। रोग होने पर भी उसे मन के भीतर प्रविष्ट नहीं होने देना और उच्च एवं विशुद्ध संकल्प बल से उसका प्रतीकार कर देना।

आप सोचेंगे यदि संकल्प से ऐसे रोग शांत होता है तो फिर हम भी ऐसे ही संकल्प कर लेंगे और देखेंगे कि हमारा रोग शांत होता है या नहीं। यदि नहीं हुआ तो शायद आप धर्म को दोष देने लगेंगे, किन्तु यदि हो गया तो क्या साधु बन सकेंगे? संसार का त्याग करके अपरिग्रही भिक्षु बनने का साहस करेंगे? बहुत असंभव है। प्रायः देखा जाता है कि लोग दुःख में व्याकुल होकर संकल्प तो कर लेते हैं, किन्तु दुःख दूर होने पर उस संकल्प को पूरा नहीं कर पाते।

एक बनिया था, तेल का व्यापार किया करता था। एक बार तेल लेने के लिए किसी देहात में गया, पास में पैसा था और रास्ते में चोर आते दिखाई दिए। अब उसका कलेजा धक-धक करने लगा। सोचा-पैसा तो छीनेंगे ही, कहीं जान से भी मार डाला तो? क्या भरोसा चोर का? उसके गांव में एक देवी थी, उसी की याद करने लगा-"माई! आज बचा दे, रक्षा कर। तुझे सवा मण तेल चढ़ा दूंगा, माई! आज मेरी रक्षा कर।" और बनिया पास ही में एक झाड़ी की ओट में छुपकर बैठ गया।

चोर आगे निकल गये, पीछे से धीरे से खिसक कर बनिया भी निकला और देवी-देवी करता उस गांव में पहुँचा। वहाँ से घी लेकर वापस सकुशल अपने घर आ गया। अब देवी को सवामण तेल चढ़ाते उसका जी कटने लगा। सोचा- अपनी तकदीर से बच गया, देवी वहाँ बचाने थोड़ी आई थी? फिर क्यों उसको सवामण तेल चढ़ाना?

एक दिन बनिया जिस झौंपड़े में रहता था उस झौंपड़े में आग लग गई। उसी में कई मण तेल रखा हुआ था। अब बनिया अपनी जान बचाकर भागा। झौंपड़ा जलने लगा और बनिया चिल्लाया- "देवी माता! इसमें का सवामण तेल तेरे नाम का है, यह मैंने तो तुझे चढ़ा दिया है। तेरा तेल है जल रहा है, बचाना हो तो अपना तेल बचा ले।"

तो 'यह जलता तेल देवी के नाम' करना संकल्प पूर्ति करना नहीं है। यह तो संकल्पों का मजाक है। संकल्प में सिद्धि होती है, किंतु उसमें आत्म-बल होना चाहिए, और पवित्रता होनी चाहिए। अनाथी मुनि ने जो संकल्प किया उसमें उनका अपार आत्मबल काम कर रहा था, उसी आत्मबल से वह संकल्प सफल हो गया। यदि आप में और हमारे में भी इसी प्रकार का आत्मबल जग जाये तो बिना औषधि के रोग का नाश होना कोई बड़ी बात नहीं है। आज भी संकल्प-चिकित्सा अथवा मनोचिकित्सा की जाती है, और बिना औषधि के ही काया पलट किया जाता है।

नमि प्रत्येक बुद्ध का वर्णन भी आपने सुना है? उनके शरीर में भयंकर दाह ज्वर फूट

पड़ा था। असह्य वेदना हो रही थी। शरीर पर लेप के लिए रानियाँ चन्दन घिस रही हैं, उनके हाथ में चूड़ियाँ है, उसकी खनखनाहट होती है और नमि को वह भी असह्य हो जाती है। हलका सा शब्द भी उनकी वेदना को तीव्र बना देता है। ऐसी स्थिति में जब वे मंत्री से कहते हैं- यह कोलाहल क्यों हो रहा है, बंद करो। मुझसे सहा नहीं जा रहा है। मंत्री रानियों को संकेत करता है, और रानियाँ सौभाग्य सूचक एक-एक चूड़ी रखती है। अब शब्द नहीं होता। नमिराज मंत्री से पूछते हैं- "क्या बात है, अब चन्दन नहीं घिसा जा रहा है? ये चूड़ियों की खनखन बंद क्यों हो गई?" मंत्री सब स्थिति बताता है, एक चूड़ी है, अकेली चूड़ी शब्द नहीं करती। बस इस वाक्य से ही नमिराज का हृदय प्रबुद्ध हो उठता है, तन की असह्य वेदना के सागर में भी उनके भीतर शांति की एक अपूर्व लहर उठती है। एकत्व भावना का अमृत-रसायन उनके हाथ लग जाता है, और वे संकल्प करते हैं, बस प्रातः होते ही मैं यह सब राज्य वैभव, भोग-सामग्रियों को त्यागकर साधु बनूँगा।

यह भी एक उदाहरण है, और बड़ा अपूर्व है, कि रोग और भोग की ज्वाला में से निकलकर आत्मा किस प्रकार योग के नन्दनवन में पहुँचकर शांतिलाभ कर सकता है।

बंधुओं! रोग चिंता का कारण बनता है, किंतु उसमें चिंतित हो उठना, घबरा जाना, धीर पुरुष का लक्षण नहीं है। उस रोग का उपचार बाहरी वस्तुओं में ही खोजते रहना- बाह्य दृष्टि है। जिसकी दृष्टि अन्तर्मुखी है, वह बाह्य उपचार का निषेध नहीं करके भी उत्तर उपचार की ओर ध्यान देता है। रोग की शाखाओं को नहीं, किंतु उसकी जड़ों को ही काटने की कोशिश करता है। वह बाह्य कारणों को सिर्फ निमित्त मात्र मानता है।

कहते हैं एक बार सम्राट् कुमारपाल के तन में भयंकर रोग फूट पड़ा। उपचार करने पर भी ठीक नहीं हुआ तब वाग्भट नामक मंत्री ने कहा-"महाराज! आपने कुलदेवी के मंदिर में पशुओं की बलि बंद कर दी है, अतः कुलदेवी आप पर रुष्ट होकर ही यह पीड़ा दे रही है, अतः पुनः यज्ञ आदि करके कुलदेवी को प्रसन्न करिए।"

सम्राट् को जैन धर्म का रहस्य मिल चुका था। वह हंसकर बोला- "मंत्री! पशुओं की बलिबंद करके तो मैंने हिंसा और क्रूरता कम की है, देवी तो माता है, वह करुणा से प्रसन्न होनी चाहिए। यदि वह दूसरों की बलि लेने के लिए मेरे तन की बलि लेना चाहती है तो मुझे मंजूर है, पर अब मैं अपनी स्वस्थता और जीवन के लिए दूसरे प्राणियों का वध नहीं होने दूँगा।"

कुमारपाल की ऐसी दृढ़ता देखकर आचार्य हेमचन्द्र ने कहा-"सम्राट्! वेदना के समय भी आप अर्हत् शासन में अडिग आस्था रखते हैं, अतः आज से आप को 'परमार्हत' के विरुद से अलंकृत करता हूँ।"

आर्तध्यान के तीसरे कारण का यह विवेचन कुछ लंबा अवश्य हो गया, किंतु जो विचार यहाँ आये हैं उनको यदि आप ग्रहण करने का प्रयत्न करेंगे तो जीवन की एक बहुत विकट समस्या का सुन्दर समाधन मिल सकेगा। आज चारों ओर रोग की भयंकर वृद्धि हो रही है, नाना प्रकार के रोग, व्याधि मनुष्य को संतप्त कर रहे हैं। रोगों के उपचार भी खोजे जा रहे हैं, किन्तु मनुष्य को शांति और रोग से मुक्ति नहीं मिल पा रही है। ज्यों-ज्यों दवाएँ निकलती हैं, त्यों-त्यों रोग एवं अशांति भी बढ़ रही है। ऐसे समय में रोग आतंक आने पर आर्त्त ध्यान में तो संसार डूब ही रहा है, किंतु ज्ञानी पुरुषों ने उस वेदना के समय में भी मन को कैसे शांत रखा जाय, पीड़ा में भी प्रसन्नता कैसे प्राप्त की जाय इसकी कला बताई है। आर्त्तध्यान नहीं करना। रोग के कारण मन को अशांत नहीं होने देना। वास्तव में यही बाह्य रोगों की आन्तरिक चिकित्सा है। तन के रोगों की मानसिक चिकित्सा है। व्याधि में भी समाधि प्राप्त करने की कला है।

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

मुक्ति का उपहार

कर
कर्मों का
संहार,
बदले में
मिलेगा
मुक्ति का
उपहार।

मुक्ति में वास

उसी को
मिलता
मुक्ति में वास,
जिसको है
अपनी आत्मा
पर
विश्वास।

गुरु-विनय

उसको
नहीं
सताता भय,
जो करता
गुरु का
विनय।

पुरुषार्थ

तुम
बढ़ो तो
सही,
मार्गदर्शक
मिलेगा जरूरत
होगी वहीं।

प्रतिस्रोत

अनुकूल
प्रवाह में
छिपी है आह,
विपरीत में
मिलेगी
वाह-वाह।

ईमानदार

यह है
उन्नति का
द्वार,
अपने आपके
प्रति बने
ईमानदार।

-संकलित

प्रवचन

चलें अनन्त की ओर

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 29 सितम्बर, 2012 अनन्त चतुर्दशी को श्रीमती राजकुंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक-स्वाध्याय भवन, गजेन्द्र पथ, महावीर नगर, जयपुर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है।-**सम्पादक**

अनन्तज्ञानी-अनन्तदर्शनी अरिहन्त भगवन्त और अनन्त की राह पर चलकर ममता से समता में, योग से अयोग में, आहारक से अनाहारक बनने की साधना में लीन संत भगवन्तों के चरणों में कोटि कोटि वन्दन।

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में अनेक जगह, अनेक तत्त्वों के लिये अनन्त का कथन किया गया है। द्रव्य अनन्त हैं, क्षेत्र अनन्त है, काल अनन्त है, भाव अनन्त हैं, जीव अनन्त हैं, अजीव अनन्त हैं। ये सब अनन्त हैं, फिर भी हम अन्त को प्राप्त कर रहे हैं। हमारा आयुष्य क्षीण हो रहा है। जो कुछ लाये थे, उसका अन्त कर रहे हैं। अनन्त की बात सुनकर भी अन्त के रास्ते पर चल रहे हैं।

तीर्थंकर भगवन्तों का कहा हुआ एक-एक धर्म पथ अनन्त-अनन्त कर्मों को क्षय कर अनन्त-अनन्त गुण प्रकट करने वाला है। अभी आप महान् अध्यवसायी व्याख्याता महेन्द्रमुनिजी से अनन्त चतुर्दशी की महिमा को साधना, भक्ति, ज्ञान, समता एवं क्षमा के रूप में सुन गये। एक मात्र क्षमा अथवा समता की आराधना करने वाला निगोद का जीव साधारण योनि से प्रत्येक में अथवा सूक्ष्म से बादर में, एकेन्द्रिय से द्वीन्द्रिय में, द्वीन्द्रिय से त्रीन्द्रिय में बढ़ते-बढ़ते अनिन्द्रिय होकर मोक्ष में जा सकता है।

साधना क्या? हर स्थिति में समभाव रखना साधना है। समभाव या समता का कथन करना सरल है, किन्तु इसे अपनाना कठिन है। साधना का लक्ष्य निर्धारित है तो साधना सरल है, लक्ष्य का निर्धारण नहीं तो साधना दुष्कर है। जिसका लक्ष्य बन गया उसके लिये मुश्किल नहीं, अन्यथा मोही आदमी मोह की भावना में न जाने कितने कष्ट किस-किस रूप में सहन करता है,उसकी कोई गणना नहीं, पर फिर भी साधना नहीं होती, क्योंकि वैसा लक्ष्य नहीं होता। हम संतों के तो बाईस परीषह हैं, पर मोही जीव के कष्टों का तो कोई पार

ही नहीं । जीवन में एक नहीं, अनेकानेक कष्ट हैं, फिर भी हंसते-हंसते कष्टों को सहन कर रहे हैं । तत्त्वचिन्तक प्रमोदमुनि जी से भोपालगढ़ वाले एक श्रावक ने कहा- "आप कायर हैं, इसलिये घर छोड़ कर चल दिए, किन्तु मेरी छाती तो वज्र की है, मैं इस तरह कष्टों से घबराकर घर छोड़ कर भागने वाला नहीं।" आपने कभी यह बात सुनी होगी कि एक पोता अपने दादा के सिर पर जूते की मार रहा है। पास से गुजरने वाला व्यक्ति कहता है- आप क्यों यहां कष्ट पा रहे हो? दीक्षा ले लो। दादा कहता है- पोतो म्हारो,जूतो म्हारो,माथो म्हारो थने कांई पंचायती? मोही व्यक्ति मोह या आसक्ति के कारण क्या-क्या सहन नहीं करता? वह सहन करता रहा, सहन कर रहा है, किन्तु साधना का उसका लक्ष्य नहीं बना है, इसलिये संसार छोड़ने की भावना नहीं है ।

आज मुझे आचार्य भगवन्त (पूज्य हस्तीमल जी महाराज) द्वारा सुनाया गया रूपक याद आ रहा है। उनका फरमाना था- सुगरवाले को, ज्वर वाले को, अजीर्ण वाले को बीमारी से तत्काल उठने पर काजू की कतली, मिश्री मावा ,बिदाम का सीरा नहीं पचता, लेकिन भोज में आए लोगों के लिये इनकी पुरसगारी या मनवार बंद नहीं की जा सकती। आपको नहीं पचता है तो आप मत खाइए, किन्तु जो खाना चाहते हैं, जिनकी खाने की इच्छा है, उन्हें तो खाने दीजिए । इसी तरह प्रतिदिन संयम की, मोह छोड़ने की बात सुनाने से न जाने किस भवी व्यक्ति की भावना बन जाय एवं विरागी बन कर वीतराग के मार्ग पर बढ़ जाय तथा कर्म का अंत कर अनन्त गुण को प्रकट करले। अभिप्राय यह है कि परोसने मनवार करने की तरह वीतराग वाणी सुनाने से ही जीवों की चेतना जगी है,जग रही है और भविष्य में जगेगी। भगवान महावीर के शासन में संघ का यह रथ भविष्य में आज की बालपीढ़ी के बछड़े ही चलायेंगे, अतः इनको भी संस्कार दीजिए । जाने किसकी चेतना कब जग जाय?

आप कुछ तो निर्धारण करें । एक समता का आचरण अनन्त का पट्ट खोलने वाला है। एक संयम अनन्त का द्वार खोल सकता है । इस एक में सब समाहित हो जायेंगे। वह एक क्या है? एक जीव की रक्षा से छह काय की रक्षा कैसे होती है ? आप बोलते हैं- आज का दिन लघु से गुरु, क्षुद्र से विराट्, बिन्दु से सिन्धु ,ह्रस्व से दीर्घ, सरसों से सुमेरु और कण से मण बनने की तरह अन्त से अनन्त की ओर बढ़ने का दिन है। आज का दिन जन्म-मरण का अंत कर ज्ञानादि गुणों को अनन्त बनाने की प्रेरणा करने आया है ।

सामने दीवार है, इसमें से एक ईंट निकल जाये तो दीवार ढ़ीली हो जायेगी। कोई बांध है, उसमें एक दरार आ जाय तो....... ? नाव है, उसमें एक छिद्र हो जाय तो...... ? आप जानते हैं- दीवार से एक ईंट निकल जाय तो दीवार ढीली हो जाती है, बांध में एक

दरार आ जाए तो एक गांव नहीं, वह आसपास के गांवों को बहा ले जा सकती है। नाव में एक छिद्र है, वह नाव डूबो सकता है। जैसे एक छिद्र से नाव का अन्त हो सकता है, उसी तरह समता-संयम-ध्यान आदि अनेक में से एक मार्ग पकड़ लिया जाय तो ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का अंत होकर आत्मा के अनन्त गुण प्रकट हो सकते हैं। प्रथम कर्म ज्ञानावरणीय के उदय के कारण इन्द्रियों की शक्ति सीमित होने से अभी आपके पीछे कौन बैठा है, आप नयन से नहीं देख सकते। दीवार के बाहर कौन है, आप यहां बैठे नहीं देख सकते। आपके बाल काले हैं या धोले, आपको नहीं दिखाई देते। शरीर के पीछे का हिस्सा आप नहीं देख पा रहे हैं, लेकिन संयम की साधना से आपकी भीतरी आंख खुल जाए तो यहाँ बैठे-बैठे आप अनन्त-अनन्त जीव- अजीव आदि पदार्थों को देख सकते हैं। कल तक ललाट पर लगी टीकी नहीं देख सकते थे, साधना के चमत्कार से आज तीनों लोक को देख सकते हैं। यह ज्ञानावरणीय कर्म का अन्त कर अनन्तज्ञान प्रकट होने का फल है।

साधना का ऐसा चमत्कार है, तो क्या इस चमत्कार को पाने की कभी मन में तरंग आई? आपका क्या जबाब है? (सभा से जबाब आता है- गुरुदेव! आपको जो कहना है, सो कहिये। हम भी संयम की, तप की, साधना की बात प्रतिदिन सुन रहे हैं, किन्तु कभी पुरुषार्थ जगा नहीं पाए।) जगने वाले जगते हैं,आगे बढ़ते हैं। सतरह-अठारह साल के जवान मासखमण कर रहे हैं, तो ग्यारह साल के बच्चे भी बढ़ रहे हैं। हम कहते हैं, सुनाते हैं, उसके पीछे भावना यही है कि आप में से एक बच्चा भी तैयार हो जाय तो महाव्रत अंगीकार कर सकता है। सुनकर ही आज तक भवी जीव अनन्त की ओर अग्रसर हुए हैं, हो रहे हैं और होंगे। न जाने कितने संत हुए जिन्होंने नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह साल की उम्र में दीक्षा ली। उन बाल ब्रह्मचारी आचार्यो ने शासन की जाहोजलाली तो की ही, क्रियोद्धार जैसा काम भी किया। क्या आपके मन में देखने की भावना आई? यदि आई तो आप भी आरंभ परिग्रह को छोड़कर, घर-परिवार की ममता मोड़कर अनन्त ज्ञानी बन सकते हैं, लोकालोक को देख सकते हैं।

आपने कई ऐसे लोगों के उदाहरण भी सुने होंगे जो यह कहते हैं कि दो रात नींद नहीं आई, इसलिये सिर भारी है,आंखों में चक्कर आते हैं, शरीर सुस्त है और मन बेचैन है। यदि अच्छी नींद आ जाय तो मन शान्त हो जाय। भले आखातीज का सीजन है,कमाई के दिन हैं, फिर भी नींद लेनी पड़ती है। कोई देश का प्रधानमंत्री है, राष्ट्रपति है, उनके समस्याओं की भरमार है, फिर भी आप जानते हैं स्वास्थ्य के लिये नींद जरूरी है। वे भी नींद लेते हैं। आदमी को अगर जरूरत के अनुसार नींद नहीं आए तो कुछ दिनों के बाद वह पागल हो जाय।

साधना करने वाले साधक ऐसी साधना करते हैं कि मानो उनकी नींद को नींद आ गई। नींद को नींद कब आती है? जब दर्शनावरणीय कर्म का क्षय हो जाए। एक बार आत्मा जग जाय तो दर्शनावरणीय का क्षय हो सकता है। ध्यान में एकाग्र होकर अपने स्वभाव में रमण करने वाले के न सुबह है, न शाम। न दिन है न रात। सौ साल तो क्या वे संसार में रहें तो करोड़ पूर्व तक भी नींद नहीं लेते उन्हें नींद की गोली की जरूरत नहीं। स्वभाव में रमण करने वाले अन्तर्मुखी की साधना का ही सुफल है कि उनके दर्शनावरणीय कर्म क्षय हो गया, प्रमादभाव चला गया, निद्रा नहीं रही। आप भी जगिये। वाणी सुनकर जगें, समझकर जगें, अनन्त नारकी के जीवों के दुःख देखकर जगें । बिना प्रमाद हटाये सवेरा होने वाला नहीं है।

आप ज़रा अपनी सहनशीलता की स्थिति तो देखिये। कभी हलवा या खीचड़ी खाते समय दांत व दाढ़ के नीचे कोई कंकर आ जाय तो चेहरे की रंगत बदल जाती है। अनुभवी संत कहते हैं:-

दाढ़ा खटके कांकरो, फूस जो खटके नेण ।
कह्यो खटके आकरो, बिछड़्यो खटके सेण ।।

मात्र एक बाल आंख में गिर जाय तो जब तक वह नहीं निकले, चैन नहीं पड़ता। पांच सौ धनुष का शरीर है, उसमें एक कांटा लग जाय तो भी खटकता है? मैंने देखा है- बहिन रोटी सेकती है, कभी तवे पर हाथ लग जाय तो वह तुरन्त अंगुली के गीला आटा लगाती है। इधर अंगुली को जलन लगती है, वह उधर कान की लौ पकड़ लेती है। एक कांटे की वेदना सहन नहीं होती,एक कंकर,एक फूस सहन नहीं होता, पर साधना का चमत्कार तो देखिये, संयम की महिमा तो सुनिये खोपड़ी खीचड़ी की तरह सीझ रही है और केवलज्ञान हो रहा है। खाल उतारी जा रही है, सिर पर गीला चमड़ा बांधा जा रहा है, पर वेदना की व्यथा नहीं। उन्हें कोई पूछे-क्या कोई तकलीफ है? उनका चिन्तन होता है- वेदना जिसे हो रही है, वह मैं नहीं हूँ। जहाँ वेदना है, वहाँ मैं नहीं और जहाँ मैं हूँ, वहाँ वेदना नहीं ।

तकलीफ किसको? तकलीफ है शरीर को। आत्मा को कोई तकलीफ नहीं। वह न गलता है, न जलता है और न ही बहता है। जो भी आत्म-स्वभाव में रमण करने लगे उसे वेदना का अनुभव नहीं होता और जो बहिर्मुखी बनकर शरीर परिवार को देख रहे हैं उन्हें पग-पग पर पीड़ा का अनुभव होता है । आज अधिकांश लोग इतने अस्थिर, असहनशील हैं कि वे एक काम को अच्छी तरह से नहीं कर सकते। कारण क्या? कारण है समता,

संयम और ध्यान का अभाव। आज अधिकांश लोगों का ध्यान कहीं ओर है। जैसे पानी में पत्थर की नाव नहीं तिरती वैसे ही जिनके मन में सरलता नहीं, वहाँ समता नहीं, जहाँ समता नहीं वहाँ हर परिस्थिति पीड़ाकारी है। वे सुख में फूलते हैं, दुःख में भूलते हैं । ज्ञाता द्रष्टा बनने पर वेदना का अनुभव दुःखद नहीं होता। अतः "इदमपि गमिष्यति" यह भी नहीं रहेगा, मैंने बांधे हैं तो मैं ही तोडूँगा। इस तरह के चिन्तन से आप अनन्त सुखी बन सकते हैं।

इसी तरह आत्मा के गुणों का अंत करने वाले अनन्त संसार में भटकाने वाले चौथे कर्म मोहनीय की भयंकरता देखिए। यह कर्मो का राजा-बिच्छु सांप के ज़हर से अधिक ज़हरीला तथा चोर-लुटेरे आतंककारी से भी खतरनाक है। सभी गुणों का हरण करने वाला, हित-अहित, धर्म-अधर्म का विवेक भुलाकर निगोद का बंध कराने वाला, कोढ,हृदयरोग, ब्रेन-हेमरेज से भी भयंकर रोगी बनाने वाला तथा ज्ञानकला का नाशक महा भयंकर अन्धकार है। यह अपनी आत्मा को परायी और पराए जड़ शरीर को अपना मानकर उसके सुख हेतु 70 कोटाकोटि सागर की उत्कृष्ट स्थिति का बंध कराने वाला है । इसी मिथ्या मोह के कारण आत्मा की बजाय शरीर को अपना माना जा रहा है । शरीर सुख के लिये, पैसे-पैसे के लिये भगवान की सौगंध खाई जा रही है, नरक निगोद में पटकने वाले विषय सुख को पाने के लिये नाटक किए जा रहे हैं। धर्म पर सर्वस्व न्यौछावर करने के बजाय पाप की भट्टी में समय दिया जा रहा है। आप जरा अपने समय का नाप-तोल करके देख लें, चौबीस घंटों में कितने घंटे जड़ के लिये जाते हैं और कितने चेतन के लिये?

चेतन के लिए सदा जागरूक रहने की जरूरत है। जागरूक रहने वाला सदा सामायिक में रह सकता है। इसीलिए भगवान ने यहां तक कहा कि समुद्र में डूबते-डूबते भी सामायिक हो सकती है,कषाय का क्षय हो सकता है, मोह को जीतकर निर्मोही बना जा सकता है । कौनसा क्षेत्र है जहां से जीव मोह क्षय कर मोक्ष में नहीं गये? हर क्षेत्र में,हर काल में मोक्ष हुआ है। अतः मिथ्या मोह को हटाकर समकित का सूर्य प्रकट कीजिए,मोह को जीतकर महावीर बनिए। संसार में भटकाव वाले राग-द्वेष का अन्त कर अनन्त श्रद्धा प्रकट कीजिए । कारण कि दृष्टि बदलने पर सृष्टि बदल जाती है। फिर कोई शरीर को घाणी में पीले, चमड़ी को उधेड़े तो भी भय नहीं रहता। उसका चिन्तन चलता है- जो मेरा है वह पिलता, उधड़ता नहीं है। इस तरह वह मोह का अन्त कर अनन्त बन सकता है।

पांचवा कर्म है आयु कर्म। आयु की अवधि तक,शरीर की जेल में बंधा हुआ यह जीव तप करने की भावना होते हुए भी अन्न नहीं छोड़ पाता, विपुल धन होते हुए भी ममता के कारण दान नहीं देता, संयम के सुखों की बात सुनकर भी घर छोड़ने की मन में नहीं

आती, कुछ दिन के लिये भी पत्नी परिवार को छोड़ना भारी लगता है, किन्तु भेदज्ञान की अनन्तता से ऐसा पुरुषार्थ होता है, ऐसी हिम्मत आती है कि शरीर के भी बंधन को तोड़ कर जीव अजर-अमर अविनाशी अनन्त बन जाता है । जिनके लिए दौड़ कर चलना आश्चर्य था, चार कदम चलने की बात दूर, शय्या से उठा नहीं जाता था, वे अनन्त पुरुषार्थ कर एक समय में शरीर के बंधन को तोड़ कर लोकाग्र पर स्थित हो गए, जहां से अब कहीं जाने की, भटकने की आवश्यकता ही नहीं रही। बंधन मुक्त हो गए।

गति, जाति आदि में भटकाने वाला छठा कर्म नाम कर्म है। इसके कारण जीव को विविध शरीर, अंगोपांग आदि प्राप्त होते हैं तथा शुभ अशुभ का उदय होता है । कल तक इस जीव को पान की पीक कपड़े के लग जाय, कपड़े पर कालिख लग जाय तो सुहाती नहीं थी। काले वर्ण का साथी, मित्र, पत्नी मिल जाय तो पास बैठते, किसी स्थान पर साथ ले जाते शर्म आती थी। हरिकेशबल की तरह का छोटे ललाट, चौड़ी नासिका,लटकते होठ,टेड़े-मेढ़े हाथ पैर वाला व्यक्ति दिख जाय तो कोई हंसी-मजाक उड़ाते थकता नहीं था, वह नाक-भौं सिकोड़कर, दूसरे को दिखाकर मखौल उड़ाकर तृप्ति करता था । सामान्य व्यक्तियों की बात क्या कहें, जनक की राज सभा में अष्टावक्र के आने पर ज्ञानी कहे जाने वाले मंत्री भी हंसने लगे। ऐसा तब तक होता है जब तक दृष्टि बाहरी शरीर पर है, दृष्टि के भीतर जाने पर न जाति ध्यान में आएगी, न गति, न ही संहनन और न संस्थान। इस तरह शरीर रचना को देखकर सोचने-बोलने वाला आज के दिन कर्मों का अंत कर लोकालोक में विविध रूपों एवं रहस्यों को जानकर ज्ञाता द्रष्टा बन रहा है । अनन्त आत्म-स्वभाव में रमण करने वाला बनकर समता के सागर में अटल स्वरूप प्राप्त कर रहा है ।

अमृत और ज़हर के घड़े की तरह ऊंच-नीच जाति, कुल, रूप, ऐश्वर्य प्राप्त कर कल तक जो राग द्वेष में डूब रहे थे, प्रशंसा-निंदा के पुल बांध रहे थे, वे गोत्रकर्म का क्षय कर आज सबको ''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' अथवा ''आयतुले पयासु'' की उक्ति के अनुसार सबको अपने समान समझ रहे हैं । सबके भीतर अनन्त का खजाना देख रहे हैं और उन्हें गले लगाकर अनन्त की ओर बढ़ने की प्रेरणा कर रहे हैं ।

इसी तरह अंतराय का क्षय कर अनन्त दान-लाभ-भोग उपभोग प्राप्त करने वाले अब किसी भी समस्या या उलझन में नहीं जीकर कभी भी विपरीतता का अनुभव नहीं करते हैं।

केवलज्ञानी कौनसा पाप नहीं देखते ? वे ज्ञान में सारे पाप देखते हैं फिर भी मन में कोई घृणा नहीं । एक-एक कर्म को क्षय करने वाले अनन्त बनते हैं । अनन्त ज्ञानी अज्ञान,निद्रा,मोह के नाच को बंद करता है । जिसने मोह का अन्त कर दिया वह अनन्त

बन जाएगा । आपको अनन्त बनना है क्या ? अनन्त बनना है तो उसके लिये एक-एक कदम संभलकर चलना होगा, एक-एक मिनट की क्रिया देखनी होगी । आपको हमको एक-एक मिनट का नहीं, एक-एक सैकेण्ड का हिसाब देखना होगा, क्योंकि कर्मों की रील आंख झपके तब तक असंख्य समय पार करती है ।

आज चतुर्दशी है । चतुर्दशी भी अनन्त चतुर्दशी । यह हर जीव के लिये है । समता-संयम,तप-धर्म के माध्यम से आप-हम कितना आगे बढ़े हैं, देखकर चलने की जरूरत है। आप सुनिये, कहिये,गुणगान कीजिये, परन्तु साधना-आराधना में चरण भी बढ़ाइये। चरण बढ़ाने वाला जीवन सार्थक करता है । इस तरह जो भोग से योग की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, विषय विकार से विराग की या वीतरागता की ओर तथा समता, सहनशीलता व भेदज्ञान से अंत से अनन्त की ओर पहुंच गये, उन्हें कोटि-कोटि नमस्कार है। जो पहुँचने का पुरुषार्थ कर रहे हैं, उन्हें धन्य है। इस विचारधारा को श्रवण कर इस ओर चलने का चिंतन करके आगे बढ़ें। मैं भी, आप भी अंत से अनन्त की ओर बढ़ें। इसी मंगल मनीषा के साथ आज की प्रवचन धारा को विराम दे रहा हूँ ।

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

बन गये अणगार

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा उच्चरित

वन्दना कर जोड़ के, जग से मुखड़ा मोड़ के, बन गये अणगार ।
पुरुषार्थ अनुपम फोड़ के, पाप आस्रव छोड़ के, बन गये अणगार ।।

पीपाड़ नगर सोहनी, सौम्य वदना मोहिनी,
आप मोती प्यारे हो,गांधी कुल उजियारे हो,
बहिन का तो प्रयाण है, निष्क्रमण ही प्रमाण है, बन गये अणगार।।1।।

प्रभु बनन प्रभु की शरण, हस्ती हित हस्ती चरण,
मुक्ति नमन मुगति वरण, निज से ही निज का भरण,
लक्ष्य का निर्णय प्रथम, सही दिशा बढ़ते कदम, बन गये अणगार ।। 2।।

शिष्य जो बनता सही, सुष्ठु गुरु बनता वही,
मर्यादा पालन दक्षता, समता मुदिता मुक्तता,
अर्द्धशती दीक्षा की है, भावना जन-जन की है, बन गये अणगार ।।3।।

संकलनः- अशोक कुमार जैन, 73/46ए,मानसरोवर,जयपुर

दीक्षा अर्द्धशती पर विशेष

अनन्त की साधना : क्षमा से

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा.

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. द्वारा 29 सितम्बर, 2012 को श्रीमती राजकुंवर केवलमल लोढ़ा, सामायिक-स्वाध्याय भवन, गजेन्द्र पथ, महावीर नगर, जयपुर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी पत्रिका के सहसम्पादक श्री नौरतन जी मेहता द्वारा किया गया-**सम्पादक**

भव-भ्रमण का अंत कर, अनन्त ज्ञान,अनन्त दर्शन,अनन्त सुख में लीन, अनन्त उपकारी तीर्थंकर भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात् । खंति,मुत्ति आदि दशविध धर्म के धारी, चतुर्विध संघ का रक्षण और संवर्धन करने वाले जीवन नैया के तारक, संघ के नायक, अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त को वंदन करने के पश्चात् ।

बंधुओं,

जैन दर्शन में अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा को पर्व दिवस की संज्ञा दी जाती है । प्राचीन काल में श्रावक इन दिवसों में आरम्भ और परिग्रह का त्याग कर पौषध की आराधना करते थे । आज अनन्त चतुर्दशी है, पर्व का दिन है । आपकी भाषा में कहूँ तो छुट्टी का दिन है, होली-डे है । आप होली-डे को मौज-मस्ती में बिताते हैं, होटल में जाते हैं, पर जैन दर्शन कहता है कि पर्व का दिन पाप से निवृत्ति करने का दिन है । आज के दिन हम ऐसी साधना-आराधना करें, जिससे हम अनन्त को पा सकें । किन्तु आज का मानव आरम्भ-परिग्रह में ऐसा उलझा हुआ है कि वह न तो आरम्भ-परिग्रह से निवृत्त होता है और न ही साधना-आराधना में प्रवृत्त ।

यों तो वर्ष में चौबीस बार चतुर्दशी आती है, पर आज की चतुर्दशी को हम अनन्त चतुर्दशी कहते हैं । यह दिन प्रेरणा दे रहा है कि हम भव-भ्रमण का अन्त करके अनन्त की ओर बढें । हमारी एक परम्परा में आज का दिन दशलक्षण पर्व का अन्तिम दिन है । दिगम्बर भाई आज अनन्त की साधना करते हैं । उनका मानना है कि आज के दिन अनन्त जीव सिद्ध हुए हैं । आगम बोल रहा है-ऐसा कोई क्षेत्र नहीं तथा कोई ऐसा काल नहीं, जिस क्षेत्र व काल में जीव सिद्ध नहीं हुए हों। लाइन में लगने मात्र से कोई सिद्ध नहीं होते । साधना करने से सिद्ध होते हैं । आज के श्रावक बड़े होशियार हैं। वे कहते हैं हमें साधना करने का उतना समय नहीं, हम तो लाइन में खड़े हैं, आचार्य भगवन्त का पल्ला पकड़ लेंगे । भाई !

किसी का पल्ला पकड़ने से मुक्ति होने वाली नहीं है । किसी के जय-जयकार करने से भी मुक्ति होने वाली नहीं है। मैं जय-जयकार की मनाही नहीं कर रहा हूँ । जय-जयकार करना भी कर्म-निर्जरा का कारण हो सकता है, पर सिद्धि के लिये तो आचार्य भगवन्त जो मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं, उस पर बढ़ेंगे तो ही मुक्ति-पथ पर अग्रसर हो सकेंगे।

आज चौदहवें तीर्थंकर भगवान अनन्तनाथ की आराधना का दिन है। लोग कच्चे धागे में चौदह गांठें लगाते हैं । क्यों लगाते हैं चौदह गांठें? जैन दर्शन में चौदह का बड़ा महत्त्व है । गुणस्थान चौदह हैं। भगवान की माताओं को चौदह स्वप्न आते हैं। पूर्व भी चौदह हैं। लोक भी चौदह राजू प्रमाण है । चौदह प्रकार की विद्याएँ बताई गई हैं। चौदह गुणस्थानों को पार करके जीव अनन्त के ऐसे स्थान पर रहता है कि फिर कभी उसका अन्त आने वाला नहीं।

इस प्रकार आज अनन्त सुख मिलाने का दिन है, अनन्त ज्ञान मिलाने का दिन है। ज्ञान कहीं मंदिर, मस्जिद, उपाश्रय में नहीं मिलने वाला । अनन्त ज्ञान हमारे भीतर में रहा हुआ है । कहना होगा हमारे भीतर में अनन्त ज्ञान छिपा हुआ है । छिपे हुए ज्ञान का आविर्भाव करना है, ज्ञान कहीं से मांग कर नहीं लाना है। आज कई लोगों की धारणा बन गई कि अमुक के यहां गये तो मिथ्यात्व लग जायेगा। किन्तु यह जान लेना चाहिए कि सम्यक्त्व का संबंध आत्म -भावों से है,अन्तरवृत्ति से है, बाहर से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है ।

आपको अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख प्राप्त करना है। सुख की खोज में आप रात-दिन दौड़ लगाते रहते हैं। सुख का राजमार्ग कौनसा? अनन्तज्ञान आदि का राजमार्ग दस विध धर्म बताया जाता है। उनमें पहला धर्म है-खन्ति अर्थात् क्षमा। जिस क्षण क्षमा का उत्कृष्ट रूप आ जाय उस क्षण अनन्त ज्ञान हो सकता है। अनन्तज्ञान मिलाने के लिये जाति, वय एवं क्रिया का महत्त्व नहीं है, उसके लिये स्वयं को ज्ञाता-द्रष्टा एवं सहनशील बनना है।

एक भाई गुरुदेव के चरणों में आया । उसे धर्म-आराधना, संयम-साधना की बात कही गई । वह कहने लगा- "इस आरे में करने से क्या होगा, अभी तो मोक्ष के दरवाजे बन्द हैं।" उसकी बात मान भी लें, लेकिन नरक के दरवाजे तो खुले हैं ना? आप इस समय आराधना-साधना करेंगे तो नरक में न जाकर मोक्ष के नजदीक पहुंच सकते हैं। पंचम काल में साधना-आराधना करके हम एकभवतारी बन सकते हैं ।

आपको अनन्त चतुर्दशी पर राजमार्ग बताया जा रहा है । आप क्षमा का आराधन कर लें। क्षमा ज्ञान का अंजन है, क्षमा दर्शन का मंजन है, क्षमा चारित्र का चंदन है। क्षमा मुक्ति पथ की पहचान है। एक क्षमा का गुण आ गया तो हम आराधक हो जायेंगे। मैं तप

करने की बात नहीं कह रहा हूँ। एक मात्र क्षमा का भाव अपनाने की बात कह रहा हूँ। कोई हमारा बुरा करने वाला भी क्यों न हो, उसके प्रति भी क्षमा का भाव रहना चाहिये।

आपने अन्तकृद्दशांग सूत्र में गजसुकुमाल मुनि का वृत्तान्त सुना है । गजसुकुमाल मुनि ने सोमिल को क्षमा किया, उसी क्षण उन्हें अनन्तज्ञान हो गया। मेतार्य मुनि का नाम आपने सुना है। उनका किस कुल में जन्म हुआ? वे चाण्डाल कुल में जन्मे । जैन दर्शन बोल रहा है-जन्म से न कोई चाण्डाल होता है, और न कोई क्षत्रिय।

कम्मुणा बम्भणो होई, कम्मुणा होई खत्तिओ।
वइस्सो कम्मुणा होई, सुद्दो हवइ कम्मुणा ।।

(उत्तराध्ययन, 25.33)

जीव कर्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय,वैश्य और शूद्र होता है । जन्म से कोई शूद्र नहीं होता। चाण्डाल कौन होता है? कहा गया है-

सत्यं नास्ति तपो नास्ति, नास्ति इन्द्रियनिग्रहः।
सर्वभूतदया नास्ति, एतद् चाण्डाललक्षणम्।।

चाण्डाल के चार लक्षण बताये जा रहे हैं। जिसके जीवन में सत्य नहीं, बात-बात में जो झूठ बोलता है वह जन्म से भले ही अपने-आपको सेठ कह दे, क्षत्रिय कह दे, पर जीवन में सत्य आचरण नहीं तो, वह चाण्डाल की परिभाषा में आता है । दूसरे लक्षण में कहा- जिसके जीवन में तप नहीं वह भी चाण्डाल है। तप की बड़ी महिमा है। देवता भी तपस्वियों को नमस्कार करते हैं। तपस्वी जीव देवों के वन्दनीय-अभिनन्दनीय होते हैं । तप का मतलब उपवास से ही नहीं है । आकाश के समान बढ़ी हुई इच्छाओं का निरोध करना तप में शुमार है। अनशन करने वाले कई मिल जायेंगे, किन्तु इच्छाओं पर अंकुश लगाने वाले विरले हैं। नास्ति तो नहीं है। तीसरे लक्षण में कहा- जिनका अपनी इन्द्रियों पर निग्रह नहीं, वे चाण्डाल की श्रेणी में हैं। चौथा लक्षण बताया है कि मन में दया का, करुणा का, अनुकम्पा का भाव नहीं तो वह भी चाण्डाल की श्रेणी में है।

मेतार्य मुनि का जन्म भले ही चाण्डाल कुल में हुआ हो, किन्तु उनमें चाण्डाल का कोई लक्षण नहीं था। वे भिक्षार्थ घूमते हुए सुनार के घर पहुँच गये। महाराज को अन्य कोई चिन्ता हो न हो, लेकिन पेट-पूर्ति की आवश्यकता तो रहती ही है। जब तक शरीर है तब तक शरीर को अन्न देना पड़ेगा। संतों के लिये एक प्रहर है, आपको तो आठों प्रहर की चिन्ता है।

संत को देखा तो स्वर्णकार के मन में आया कि मुझे सुपात्रदान देना है। स्वर्णकार उस समय सोने के जौ बना रहा था, वह उन्हें छोड़कर भिक्षा देने हेतु संत के साथ घर के

अन्दर आ गया। संयोग की बात थी कि इधर स्वर्णकार जौ बनाते छोड़कर घर में आया, उधर एक मुर्गा आ पहुँचा। मुर्गे को भ्रम हुआ कि ये जौ के दाने हैं, अतः वह सोने के बने दानों को निगल गया।

भिक्षा लेकर संत वहां से निकले। सुनार दुकान पर गया, तो उसे स्वर्णनिर्मित जौ के दाने कहीं नजर नहीं आए। उसने मन-ही-मन सोचा, यहाँ महाराज के अलावा अभी कोई दूसरा तो आया नहीं । लगता है महाराज ने मन मीठा कर लिया है:-

बेटो मारे बाप ने, नारी हरे भरतार।
इण परिग्रह के कारणे, अनर्थ हुआ हजार।।

संसार में जितने भी अनर्थ हो रहे हैं उसकी वजह है- रूप और रूपया । भूतकाल में भी जितने अनर्थ हुए, उनमें एक कारण रूप रहा तो दूसरा कारण रूपया रहा। कई रूप के दीवाने हैं तो कई रूपयों के।

सुनार का एक क्षण पहले जिनके प्रति आदरभाव था, दूसरे क्षण आदरभाव संशय में बदल गया। दृष्टि बदलते ही सृष्टि बदल जाती है। स्वर्णकार को महाराज के प्रति शंका हो गई। मन में धारणा बन गई कि महाराज ने ही जौ चुराये हैं। स्वर्णकार ने महाराज की चादर पकड़ी एवं कहा-जाते कहाँ हो? महाराज ठहर गए। महाराज तो क्षमा के सागर थे। संत हर स्थिति में समभाव रखे, चाहे लाभ हो या अलाभ, सम्मान हो या तिरस्कार। मेतार्य मुनि चाण्डाल कुल में भले ही जन्मे हों, पर उनके रग-रग में संयम का, क्षमा का भाव रमा हुआ था । स्वर्णकार ने मुनि को पकड़ा और कहा- मेरे जौ आपने ही चुराये हैं, दूसरा कोई यहाँ आया ही नहीं। महाराज मौन रहे। महाराज ने जाते-जाते मुर्गा देख लिया था, इसलिये सोचा, बताऊँगा तो मुर्गे की हिंसा का कारण बन जाऊँगा।

सुनार को आवेश आ गया। पास में गीला चमड़ा पड़ा हुआ था, उसे संत के सिर पर बांधकर उन्हें धूप में खड़ा कर दिया। क्षमा के सागर मेतार्य मुनि का ज्यों-ज्यों चमड़ा सूखता गया, दर्द बढ़ता गया, पर असह्य वेदना में भी उनके चेहरे पर अपार शान्ति थी। स्वर्णकार के प्रति उनके मन में किसी तरह का अन्यथा भाव नहीं आया। आगम-ग्रन्थों में कहा गया है कि क्षमामूर्ति मेतार्य मुनि को उसी समय अनन्त ज्ञान हो गया, अनन्त दर्शन हो गया। वे आयुष्य पूरी करके अनन्त सुख सम्पन्न सिद्ध हो गए।

हमें भी अनन्त ज्ञान मिलाना है तो हम क्षमा करने की बात सीख जायें। क्षमायाचना किससे? जिससे मनमुटाव है, उससे क्षमायाचना करें। किन्तु लोग महाराज के पास आते हैं महाराज चाहे ध्यान में हों या स्वाध्याय में, हर आने वाला क्षमा याचना करता रहे तो क्या वह क्षमायाचना है या विक्षेप है? मैं क्षमायाचना की मनाही नहीं कर रहा हूँ।

आप वन्दन करें, क्षमायाचना करें, सुख-शान्ति पृच्छा करें, पर आपको विक्षेप नहीं करना चाहिये। वन्दन किस स्थिति में करना, तो कहा गया पांच स्थिति में दूर से वन्दन कर लें। पर, आज के लोगों को जब तक सिर नहीं टेके तब तक मन को सन्तुष्टि नहीं होती। आप दूर से वन्दन करते हैं, विधि सहित करते हैं तो निर्जरा हो जाएगी।

हमें आचार्य भगवन्त को सुनना है। हम अमृत वचन सुनें। हमें तीर्थंकर भगवन्तों की देशना का लाभ भले आज नहीं मिल रहा हो, फिर भी हम भाग्यशाली हैं कि हमें तीर्थंकर भगवन्तों के समान तिरने व तारने वाले आचार्य भगवन्त की वाणी सुनने को मिल रही है। हमारे आचार्य भगवन्त जितना लेते नहीं उससे कई गुना अधिक दे रहे हैं। हमें भी देने की तैयारी करनी है। 19 नवम्बर, 2012 को आचार्य भगवन्त का पचासवाँ दीक्षा-दिवस आ रहा है। मैं जयपुर वालों से पूछना चाहूँगा कि आप देने की क्या तैयारी कर रहे हैं?

संघ में उत्साह है, उमंग है। हर गांव में तैयारी चल रही है। गांव-गांव में त्याग-तप की रूपरेखा बन रही है। साध्वी प्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी महाराज ने प्रेरणा करके कई एकान्तर तप वालों को तैयार किया है। मैं जयपुरवासियों से न नोट चाहता हूँ, न वोट और न ही सपोर्ट। आप कुछ न कुछ करिये। शीलवान् या शीलवती बनिये, एकान्तर शुरू कीजिए और जो भी योजना बनाएं उसे सामने लाइये। आप सुनकर करेंगे यही अपेक्षा है ■

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

जय, जन-जन प्रिय गुरु मान

श्रीमती सुशीला भण्डारी

सरल, त्यागी, तपस्वी मान, जिनशासन की शान।
बढ़ाया जिनशासन का मान, जय, जन-जन प्रिय गुरु मान।। 1।।
शीतलता में चन्द्र समान, ज्योतिर्पुंज में भानु समान।
सहनशीलता में धरा समान, शान्ति, विस्तृतता में व्योम समान।। 2।।
ज्ञान गहनता में जलधि समान, सौरभ कोमलता में कुसुम समान।
प्रवचन पीयूष का हम करते पान, भीतर भरता आनन्द महान्।। 3।।
धर्म-साधना में रहते लीन, संयम चर्या का कठोर पालन।
तोड़े कषायों के बन्धन, आपसे दूर रहा सदा अभिमान।। 4।।
पाया गुणीजनों में शीर्ष स्थान, आपकी मांगलिक हरती विघ्न।
श्रद्धा से नतमस्तक भक्तजन, गुरु स्वीकार करो मेरा कोटिशः वन्दन।। 5।।

-1 क 9, आवासन मंडल, भगत की कोठी, जोधपुर-342005 (राज.)

दीक्षा अर्द्धशती पर विशेष

पंचाचार के निर्मल साधक आचार्य हीरा (3)

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

मधुरव्याख्यानी मुनिश्री द्वारा विशिष्ट अवसरों पर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के गुणानुवाद में प्रदत्त प्रवचनों का संयोजन कर उन्हें एक साथ धारावाहिक के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। उसी की यह तृतीय एवं अंतिम कड़ी है। इन प्रवचनों का संकलन, संयोजन और संपादन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज जी चौधरी-दिल्ली ने किया है। **-सम्पादक**

(गतांक से आगे.....)

धर्मानुरागी बन्धुओं!

कविवर सोहनलाल द्विवेदी ने एक जगह कहा है-

मैं निशा बनकर तुम्हें सोने न दूँगा,
मैं उषा बनकर जगाने आ रहा हूँ।
आज अस्ताचल तुम्हें जाने न दूँगा,
अरूण उदयाचल सजाने आ रहा हूँ।।

हमारे आचार्यश्री का भी एक महत्त्वपूर्ण मिशन है, उन लोगों को जगाने का जो सोये हुए हैं, जिन्हें पता ही नहीं है कि वे कहाँ हैं-

हम वहाँ हैं जहाँ से हमको भी,
कुछ हमारी खबर नहीं आती।
ऐसे लोगों के लिए वे दीपक बनकर आए हैं।।

व्यसन-मुक्ति एवं व्रतों के प्रबल प्रेरक

मानव जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण बात है-सदाचरण। सदाचारी जीवन जीने के लिए शास्त्रों में सात व्यसनों का निषेध आवश्यक माना गया है। ये सात व्यसन हैं- जुआ, मांसाहार, मद्यपान, वेश्यागमन, शिकार, चोरी एवं परस्त्रीगमन। जो इनका सेवन करता है वह अपना इहलोक और परलोक दोनों बिगाड़ लेता है और पतन के गहरे गर्त्त में चला जाता है। आचार्यप्रवर जीवन-शुद्धि के प्रबल प्रेरक हैं। वे अपनी पदयात्राओं में और प्रवचनों में लाखों लोगों को कुव्यसन त्याग कर सात्त्विक जीवन जीने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध करा चुके हैं। उनके संदेशों में कुव्यसनों से मुक्ति की अनूठी गूंज होती है।

आचार्यप्रवर व्यसन-मुक्त जीवन को सुखी जीवन जीने की पहली भूमिका मानते हैं। उनके अनुसार एक श्रावक बनने की पात्रता अर्जित करने के लिए सप्त कुव्यसनों का त्याग अनिवार्य है। व्यसन, व्यक्ति को कल्याण मार्ग से गिरा देते हैं। इनके सेवन से जीवन का सत्त्व चला जाता है और मानव जीवन की सार्थकता ही समाप्त हो जाती है। अतः मनुष्य के सदाचरण का प्रारम्भ ही व्यसन-मुक्ति के बाद होता है। व्यसनी का जीवन न स्वयं के लिए सुखद होता है और न उसके परिवार के लिए ही। अपने व्यसन सेवन के कारण वह अपनी संतान को भी अच्छे संस्कार नहीं दे पाता है। इस तरह वह अपने परिवार की दुःखमय परम्परा को बढ़ाने में भी कारण हो जाता है। आचार्यश्री का स्पष्ट मंतव्य है कि जीवन में धर्म एवं नीति की मर्यादाओं का पालन करने के लिए कुव्यसनों का त्याग पहली शर्त है। जो व्यक्ति इनके शिकार हो जाते हैं उनके लिए धर्म-ध्यान से आत्मोन्नति की बात तो बहुत दूर रही, वे निरन्तर आर्त्त और रौद्र ध्यान में रहते हुए इस दुर्लभ मानव भव को व्यर्थ में ही नष्ट कर डालते हैं।

सप्त कुव्यसन के त्याग के बाद जीवन को अनुशासित और संयममय बनाने के लिए व्यक्ति को व्रतों की मर्यादा में रहना आवश्यक है। व्रत से रहित जीवन उस जहाज की तरह है जिसके नाविक ने अपने गंतव्य स्थान का निश्चय न किया हो। शील अर्थात् सच्चरित्र को मनुष्य की बहुत बड़ी पूंजी कहा गया है। कहते हैं कि धन की हानि होने से कुछ हानि नहीं होती, स्वास्थ्य की हानि होने से कुछ हानि होती है, लेकिन यदि चरित्र का नाश हो गया तो व्यक्ति का सर्वनाश हो जाता है। कबीर ने तो यहाँ तक कहा है-

शीलवन्त सबसे बड़ा, सब रतनन की खान।
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन।।

जैन जीवन-शैली में एक अच्छे श्रावक के लिए बारह व्रतों का विधान है। जो बारह व्रतों को धारण करता है, वह उत्तम श्रावक होता है। परन्तु इनमें से जो जितने व्रत धारण कर सकता है, वे भी उसकी आध्यात्मिक प्रगति में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हैं। आज व्यक्ति शांति की इच्छा तो रखता है, पर अपनी इच्छाओं को शान्त नहीं करता। जब तक हम इच्छाओं को शांत नहीं करेंगे, जीवन में शांति नहीं मिल सकती। इच्छाओं को शांत करने के लिए व्रतों में रहकर साधना करनी होती है। इसलिए आचार्यश्री अधिक से अधिक लोगों को व्रती बनाने पर जोर देते हैं। ऐसे व्रती स्वयं का ही कल्याण नहीं करते, अपितु धर्म संघ में भी आचार निष्ठा को सुदृढ़ कर जिनशासन की प्रभावना करते हैं। गुरुजनों से प्रेरित होकर स्वेच्छा से धारण किया गया व्रत सदा कल्याणकारी होता है। लोकैषणा के आवेश में लिया गया व्रत फलदायी नहीं होता है। व्रत धारण करने में मुख्य बात इन्द्रियों के शोषण की

नहीं, अपितु कषायों के शोषण की होती है। इस अंतरंग भाव को जागृत करने के लिए पहले इन्द्रिय-निग्रह की साधना करनी चाहिए। व्रत भंग होने की सम्भावना उपस्थित न हो, इसके लिए व्रतों को ज्ञानी और प्रेरक गुरुजनों से ग्रहण करना ही अपेक्षित है। आचार्यप्रवर हजारों लोगों को व्रतधारी बना चुके हैं और निरन्तर बना रहे हैं।

यश-कामना से निर्लिप्त

आचारांग सूत्र में कहा गया है-"जे महं अबहिमणे" जो महान् होता है उसका मन बाहर नहीं होता है। अन्तर्वृत्तियों की शुद्धता के लिए आचार्यश्री सदैव जागरूक रहते हुए जप, तप और ध्यान में नियम पूर्वक लीन रहते हैं। आचार्यप्रवर आगमज्ञ होते हुए भी अत्यन्त विनम्र हैं और कभी भी अपनी विद्वत्ता या पांडित्य का प्रदर्शन नहीं करते हैं। यशलिप्सा और प्रसिद्धि की कामना से वे परे हैं। अपने जीवन में ज्ञान और क्रिया का सुन्दर समन्वय करने वाले इस सन्त ने कभी भी मान या नाम की स्पृहा नहीं की। संक्षेप में कहूँ तो वे प्रशस्तिप्रिय या प्रचार-प्रिय नहीं हैं, अपितु साधना-प्रिय और ज्ञानप्रिय हैं। चरित्र एक वृक्ष है और यश उसकी छाया है। असली चीज तो वृक्ष ही है। वृक्ष होगा तो छाया होगी ही। श्रेष्ठ पुरुष अपना यश न चाहते हुए भी चन्दन वृक्ष की तरह अपने परिमल से प्रगट हो ही जाते हैं। आचार्यश्री स्वयं प्रकाशमान हैं, अतः छिप नहीं सकते-

चमक रहा अपनी प्रभा से, लोक में नर हंस है।
साधना का है सुमेरु, धर्म का अवतंस है।।

संघ-संवर्धक

आचार्यश्री अपने उद्बोधन में कहा करते हैं कि जैसे घड़ी के अनेक पुर्जे होते हैं और प्रत्येक पुर्जे का घड़ी को चलाने में सहयोग होता है, उसी प्रकार धर्म संघ में भी प्रत्येक श्रावक का महत्त्व होता है। विद्वान् अपनी जगह उपयोगी है तो सेवा करने वाला अपनी जगह उपयोगी है। वे सभी मिलकर संघ को सुदृढ़ बनाते हैं और उसे गति देते हैं। संघ में किसी भी व्यक्ति की उपेक्षा ठीक नहीं। सबका क्षयोपशम एकसा नहीं होता है, अतः व्यर्थ में एक दूसरे की तुलना कभी-कभी हीन भावना को जन्म दे देती है। उससे बचना चाहिए। संघ के प्रत्येक सदस्य को अपने कर्त्तव्य और अधिकार की संधि को सम्यक् रूपेण समझ लेना चाहिए। कर्त्तव्य के अभाव में अधिकार धिक्कार का कारण हो जाता है, इसलिए अधिकार की आकांक्षा न रखते हुए सदैव कर्त्तव्य पर ही दृष्टि होनी चाहिए। मात्र सुझाव देने से ही कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती है, अपितु उसे क्रियान्वित करने के लिए समय का भोग और पुरुषार्थ भी होना चाहिए। संघ की सेवा तीर्थ की सेवा है और तीर्थ की सेवा तीर्थंकर की सेवा है। एक स्व-चालित घड़ी की तरह व्यक्ति संघ-सेवा में लगा रहे। यदि

कोई काम हाथ में लिया हैं तो अपनी प्रशंसा या निन्दा से अप्रभावित रहकर उसे पूर्ण समर्पण भाव से करें। संघ में बड़ों को कहना आना चाहिए तो छोटों को सहना आना चाहिए। आचार्यप्रवर फरमाते हैं कि नाम में नहीं, काम में विश्वास करो, प्रतिष्ठा में नहीं, निष्ठा में विश्वास करो एवं प्रसिद्धि में नहीं, सिद्धि में विश्वास करो।

आचार्यश्री में धर्म और धर्मशासन से लोगों को जोड़ने की अद्भुत कला है। जलगांव के चातुर्मास में एक बार उन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि यहाँ सामूहिक धर्म साधना के लिए बहुमंडल तो है, पर भाऊ (भाई) मंडल नहीं दिखता, इसलिए भाइयों में सामूहिक रूप से धार्मिक क्रियाएँ नहीं हो रही हैं। उनके प्रवचन का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वहाँ प्रत्येक रविवार को स्थानक में सैकड़ों की संख्या में लोग सामूहिक सामायिक करने लगे। साधु-साध्वियों की अनुपस्थिति में भी वह परम्परा कई वर्षों से अबाध रूप से चल रही है। सामूहिक सामायिक का ऐसा दृश्य विरल ही देखने में आता है।

आचार्यप्रवर का मानना है कि अतिशयज्ञानी पूर्वाचार्यों द्वारा प्रतिष्ठित परम्पराओं का अपना महत्त्व है। संघ उन्नयन में उनके पालन की अनदेखी उचित नहीं है। केवल युगानुकूलता का तर्क देकर बिना गहराई में गए, उनकी उपेक्षा करना योग्य नहीं है। यदि हम अपने मूल से जुड़े रहेंगे तो हमारे पूर्वजों के अनुभव का रस भी हमें मिलता रहेगा। आचार्यप्रवर की उत्कट अभिलाषा रहती है कि संघ का प्रत्येक सदस्य आचारनिष्ठ हो। उसमें सहिष्णुता का गुण हो ताकि संघ के कार्यों में उसका अहं आड़े नहीं आए। संघ में यदि कोई मतभेद हो भी जाए, तो उन्हें मिल-बैठकर आपस में सुलझाना ही संघ के हित में होता है। उनके वात्सल्य के प्राणमय स्पर्श से लोगों में संघ के प्रति निष्ठा सुदृढ़ हुई है एवं उनके कुशल नेतृत्व में संघ में चहुँमुखी प्रगति हो रही है। उनकी प्रेरणा से संघ में अनेक लोकोपकारी प्रवृत्तियाँ भी चल रही हैं। संघनायक के रूप में गृहस्थों की व्यक्तिगत प्रवृत्तियों में स्वयं को उलझाये बिना आप उन्हें आत्मोत्थान का मार्ग बताते रहते हैं। हमारा भी कर्त्तव्य है कि संघ के किसी कोने में यदि कोई अंधेरा है तो वहाँ आचार्यश्री के आह्वान पर हम भी अपने समर्पण और वात्सल्य के दीप जलाकर उन अंधेरों को उजालों में परिणत करने का प्रण लें-

हम अंधेरों का अमंगल, दूर अम्बर से हटाएँ।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलाएँ।।

शरणभूत

सूत्रकृतांग सूत्र में एक बहुत ही सुन्दर सूत्र आया है- अदक्खु, व दक्खुवाहियं सद्दहसु। (2.3.11)

अर्थात् नहीं देखने वालों! तुम देखने वालों की बात पर विश्वास करके चलो। आचार्यप्रवर जैसे गुणवान और ज्ञानी संत वस्तुतः हमारे मार्गदर्शक हैं, अतः शरणभूत हैं। वे करुणावान् हैं, माया से रहित हैं, उनका हृदय सरल है, विचार सरल है, वाणी सरल है और जीवन का प्रत्येक व्यवहार सरल है। वे प्राचीन परम्परा के प्रतिनिधि सन्त होते हुए भी विचारों में उदार हैं तथा हर धर्म और समुदाय का सम्मान करते हैं। वे विद्वद्जनों के प्रति सदैव प्रमोद भाव रखते हैं। ऐसे संतों की शरण में जाकर हम मानव संचेतना का पाठ पढ़ सकते हैं और उनकी आत्मरश्मियों से सम्यग्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे संत शरण में जाने के योग्य हैं। पेड़ की शरण में जाने पर पेड़ की छाया माँगनी नहीं पड़ती है, वह तो उसके नीचे आने वाले को स्वतः ही मिल जाती है। इसी तरह से गुरु की शरण में जाने पर गुरु की कृपा माँगनी नहीं पड़ती, वह तो बरसती ही रहती है। आचार्यप्रवर वीतराग महामार्ग के महापथिक हैं। कहते है- **'सा विद्या या विमुक्तये'**- विद्या वही है, जो मुक्ति के लिए हो। आगमों के मंथन से जो प्राप्त किया है वह साधकों के लिए परमार्थ-पथप्रदर्शक बनकर मुक्ति की ओर ले जाता है। उन्होंने तो अपने जीवन का, ज्ञान का, दीया जलाकर रख दिया है। जिसको जी में आए वह उससे रोशनी पा सकता है। अध्यात्म के प्रबल प्रसारक, स्याद्वाद के सच्चे अनुयायी, शास्त्रज्ञान के निरभिमानी पंड़ित, इन्द्रिय-विजेता, रत्नत्रय के साधक, ज्ञान में रमण करने वाले, वे शरणागत के लिए एक वटवृक्ष हैं, जो भी उनकी छाया में जायेगा, उसे शीतलता तो मिलेगी ही।

अभिवन्दना एवं मंगल मनीषा

हे वन्दनीय ज्योतिर्मय साधनापुञ्ज! आप तो स्वयं एक प्रकाशित दीप हैं, जिसे प्रकाशित करने के लिए अन्य किसी दीप की आवश्यकता नहीं है। जहाँ भी आप जाते हैं रोशनी लुटाते ही रहते हैं। आपके दीक्षा की स्वर्ण जयन्ती पर मेरी वन्दना के स्वर स्वयं ही मुखरित हो रहे हैं। आपके सद्गुणों की महक चारों और फैल रही है। आपका जीवन मेरी चेतना को भी अतिचेतना की ओर प्रवाहित करने की प्रेरणा देता रहे, इसी भावना के साथ-

बनकर पिता, बन्धु, गुरु, सहचर,
देते रहना बोध निरन्तर,
विचलित हो जाऊँ यदि पथ में, बढ़कर गले लगाना,
दर्शन ज्ञान चारित्र का अमृत, सदा पिलाते रहना।
स्वर्ण जयन्ती है दीक्षा की,
प्रतिबिम्बित निर्ग्रंथ कला की,
संयम की ज्योति से मुझको, चिर प्रकाश है पाना,
दर्शन ज्ञान चारित्र का अमृत, सदा पिलाते रहना।

कुछ शब्द बने पर कह न सके,
तब भावों से आँसू ढलके।
स्वीकारो इन अँसुवन को, है मन का यह छलकाना।
दर्शन ज्ञान चारित्र का अमृत, सदा पिलाते रहना।

अन्त में इस शुभ अवसर पर, मैं आपका अभिनन्दन करता हुआ, उत्तराध्ययन सूत्र (22.24) की इस सूक्ति से मंगल कामना करते हुए अपनी वाणी को विश्राम देता हूँ-

नाणेणं दंसणेणं य चरित्तेण तहेव य।
खन्तीए मुत्तीए चेव वड्ढमाणो भवाहि य।।

आप ज्ञान से, दर्शन से, चारित्र से एवं क्षमा-निर्लोभता आदि उत्तम गुणों के साथ सतत आगे बढ़ते रहें, वृद्धि पाते रहें और हमें मार्गदर्शन प्रदान करते रहें। **(समाप्त)**

पत्रिका की उत्कृष्टता हेतु लेखकों से निवेदन

जिनवाणी मासिक पत्रिका की गुणवत्ता निरन्तर अभिवृद्ध होती रहे, एतदर्थ लेखकों एवं रचनाकारों से निवेदन है कि वे अपनी रचनाएँ एवं आलेख उत्कृष्ट से उत्कृष्टतर बनाकर भिजवाने का श्रम करें। जिनवाणी पत्रिका के विविध स्तम्भों में प्रकाशित श्रेष्ठ लेखों एवं रचनाओं को पुरस्कृत किया जाता है। विगत तीन वर्षों से यह क्रम चल रहा है। शोधालेख भेजते समय प्रामाणिकता हेतु सन्दर्भ युक्त पाद टिप्पणों का पूर्ण उल्लेख आवश्यक है। आध्यात्मिक, नैतिक मूल्यों से युक्त आलेख, कविता, कथा आदि का स्वागत है। वैज्ञानिक आलेखों को तभी प्रकाशित किया जाता है जब उनकी पुष्टि/तुलना जैन धर्म-दर्शन से की गई हो। सद्गुणों के आधान, जीवन-व्यवहार के शोधन की प्रेरणा देने वाली रचनाएँ जिनवाणी में सदैव स्थान पाती हैं। नारी-स्तम्भ एवं युवास्तम्भ के लिए हमें श्रेष्ठ रचनाओं की प्रतीक्षा रहती है। बाल-स्तम्भ हेतु प्रेरक कथाओं की भी आवश्यकता रहती है।

जिनवाणी पत्रिका का अब तक जो स्तर उन्नत हुआ है, उसमें लेखकों एवं रचनाकारों का योगदान प्रशंसनीय है। आपकी रचनाएँ कदाचित् विलम्ब से प्रकाशित हो अथवा प्रकाशित न भी हो तो भी निराश न हों, अपितु आप अपना प्रयास जारी रखें। एक बार प्राप्त रचनाएँ लौटाना सम्भव नहीं हैं, अतः उनकी एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें। यदि आप कम्प्यूटर से E-mail द्वारा अपनी रचनाएं भेज सकें तो इसे प्राथमिकता दें। जिनवाणी का E-mail पता है- jinvani@yahoo.co.in यदि हाथ से लिखकर भेजें तो सुवाच्य हस्तलेख हो।

आपकी रचना श्रेष्ठता का पुरस्कार प्राप्त करे, ऐसी शुभकामना है। विभिन्न स्तम्भों में 2100 रुपये से लेकर 5100 रुपये की राशि का पुरस्कार सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.शिखरमल सुराणा की ओर से देय है।

-डॉ. धर्मचन्द जैन, सम्पादक

जीवन-व्यवहार

औपचारिक क्षमा-याचना की सार्थकता

प्रो. सागरमल जैन

मनुष्य मूलतः एक सामाजिक प्राणी है। परिवार और समाज में ही उसकी जीवन-यात्रा चलती है। जब समूह रूप में जीवन जिया जाता है, तो यह स्वाभाविक है कि व्यक्तियों या परिवार के सदस्यों के पारस्परिक हितों में टकराहट होती है, और जिसके परिणामस्वरूप पारस्परिक वैर और विद्वेष का जन्म होता है। वैर और विरोध का यह जीवन व्यक्ति की आत्मिक शांति एवं पारस्परिक सौहार्द को भंग कर देता है। विश्व के विभिन्न धर्म और परम्पराओं में इस वैर और विद्वेष को शांत करने के लिए क्षमा-याचना की परम्परा भी है। किन्तु विश्व में जैन धर्म की यह विशिष्टता है कि उसमें क्षमावाणी का एक विशिष्ट पर्व ही नियत कर दिया गया है।

वैसे तो जैन श्रावक प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल प्रतिक्रमण की साधना का निर्वाह करते हुए क्षमा याचना करता ही है, तथापि क्षमावाणी या साँवत्सरिक महापर्व के इस दिन प्रत्येक जैन धर्मानुयायी विश्व के सभी प्राणियों से अपने अपराधों के लिए क्षमा-याचना करता है। क्षमा-याचना वह अमृत है, जिसमें वैर-विरोध की सभी स्थितियाँ समाप्त हो जाती हैं। यद्यपि क्षमा-याचना की यह सम्यक् प्रक्रिया तभी सार्थक होती है, जब व्यक्ति अपने अन्तर की गहराइयों से अपने अपराधों के प्रति सजग होकर क्षमा-याचना करता है।

प्रायः यह कहा जाता है कि पर्व के इस अवसर पर क्षमा-याचना की यह प्रक्रिया हृदय से न होकर मात्र औपचारिकतावश होती है, किन्तु क्षमा-याचना की इन औपचारिकताओं का भी कुछ मूल्य और महत्त्व है, क्योंकि अपने विरोधी के प्रति सहज रूप से व्यक्ति के द्वारा क्षमायाचना का भाव प्रकट करना भी अति कठिन होता है। वस्तुतः जीवन में जब तक निर्मलता व सरलता का विकास न हो तब तक क्षमावाणी पर्व पर क्षमा-याचना कर लेना एक औपचारिकता से अधिक नहीं है, फिर भी क्षमावाणीपर्व भी एक ऐसा अवसर प्रस्तुत करता है कि इसमें औपचारिकता वश भी क्षमा-याचना करने से वैर-विरोध की कुछ गाँठें खुलती हैं। क्षमा माँगना और क्षमा कर देना दोनों ही वीर पुरुष के लक्षण माने गये हैं। प्रकट में संघ या समाज के समक्ष औपचारिक रूप से क्षमा-याचना करने में भी व्यक्ति को बहुत हिम्मत या साहस जुटाना होता है। विवेकपूर्वक उठाया गया एक कदम भी वैर का ज़हर समाप्त करने में सक्षम होता है। अतः औपचारिकतावश क्षमा-याचना कायरता का प्रतीक

नहीं है, क्योंकि इसमें भी साहस अपेक्षित होता है।

कहा भी गया है- क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो। सामान्यतया संस्कृत भाषा में क्षमा को वीर पुरुषों का लक्षण भी कहा गया है- "क्षमा वीरस्य भूषणम्।"

दबाव और भय के माध्यम से भी कभी-कभी व्यक्ति क्षमा-याचना करता है, किन्तु यह मात्र विवशताजन्य होती है। इसमें व्यक्ति अपने अन्तर की गहराइयों से न तो किसी व्यक्ति के अपराधों को माफ करता है, और न अपने अपराधों के प्रति क्षमा-याचना करता है। क्षमा एक आन्तरिक या आत्मिक मूल्य है, वह प्रदर्शन की वस्तु नहीं है।

सामान्यतया यह कहा जाता है कि क्षमा-याचना करना और क्षमा प्रदान करना दोनों ही अन्तरात्मा के द्वारा होने चाहिए। ये तभी अधिक सार्थक होते हैं, जब हृदय की गहराइयों से हों, किन्तु कभी-कभी क्षमा-याचना की औपचारिक प्रक्रिया भी ऐसे भाव जागृत कर देती है या ऐसा अवसर प्रस्तुत कर देती है कि व्यक्ति की वह औपचारिकता भी बदल कर वास्तविकता बन जाती है। अतः औपचारिक रूप से भी क्षमा-याचना करना कायरता का प्रतीक नहीं है, क्योंकि उसके लिए एक आन्तरिक शक्ति को जुटाना तो आवश्यक होता ही है। बस करना यही है कि क्षमावाणीपर्व पर क्षमा-याचना करने और क्षमा-प्रदान करने की यह प्रक्रिया हमारी अन्तर की आत्मा से जुड़ सके और उसके परिणामस्वरूप वैर एवं विद्वेष का ज़हर समाप्त हो तथा समरसता, सौहार्द और सहिष्णुता की पावन गंगा प्रवाहित होकर जन-जन में आत्म-शांति का विकास कर सके। भय और संत्रास का वातावरण समाप्त होकर सहयोग और शांति की शीतल धारा प्रवाहित होती रहे। आज विश्व अविश्वास, भय और आतंक की स्थिति में जी रहा है, अतः एक विश्वस्त और उदार दृष्टिकोण के विकास की आवश्यकता है और यह प्रकटतः क्षमा-भाव से ही सम्भव है।

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (मध्यप्रदेश)

जिनवाणी का संपादकीय कार्यालय जोधपुर में

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका का संपादकीय कार्यालय जोधपुर में प्रारम्भ हुआ है, कृपया सम्पादकीय पत्र-व्यवहार निम्नांकित पते पर करें-

जिनवाणी कार्यालय

श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन

कुम्हार छात्रावास के सामने, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन नं. 0291-2626279

70 वर्ष की सम्पूर्ति पर

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका की जीवन-यात्रा

डॉ. श्वेता जैन

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रतिमाह प्रकाशित 'जिनवाणी' पत्रिका जैन समाज की लोकप्रिय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर की पत्रिका है। जनवरी 1943 से निरन्तर अद्यतन प्रकाशित इस पत्रिका ने 70 वर्ष की सुदीर्घ अवधि पूर्णकर 71 वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। इस पत्रिका का शुभारम्भ रत्नसंघ के सप्तम पट्टधर अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पावन प्रेरणा से हुआ। प्रारम्भ में व्यवस्था का दायित्व श्रावकरत्न श्री विजयमल जी कुम्भट ने सम्हाला। उस समय पत्रिका की छपाई जोधपुर में करवाकर वितरण भोपालगढ़ से किया जाता था।

उद्देश्य एवं लक्ष्य

पत्रिका समाज का दर्पण होती है। समाज के उत्थान में सद्विचारों, सुन्दर जीवनशैली, परस्पर समन्वय की भावना एवं सही दृष्टि का योगदान होता है। भावनाओं के पोषण में धर्म-दर्शन की विशेष भूमिका होती है। अतः जैन धर्म-दर्शन एवं आगम के गूढ रहस्यों के ज्ञान, जैन संस्कृति एवं इतिहास की सही समझ, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की समाज में स्थापना आदि लक्ष्यों को लेकर जिनवाणी पत्रिका प्रारम्भ की गई। आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज श्रावकों में सामायिक और स्वाध्याय के प्रति सदैव बोध जगाते रहते थे। उनकी यह प्रेरणा ही इस पत्रिका के जन्म का बीज बनी। अतः पत्रिका के प्रकाशन का एक उद्देश्य यह रहा है कि संघ व समाज में स्वाध्याय के प्रति रुझान बढ़े।

विषय वस्तु एवं वैशिष्ट्य

जिनवाणी पत्रिका के कलेवर में समय के साथ वृद्धि होती रही। पहले यह 24 पृष्ठों में प्रकाशित होती थी। फिर यह 32 एवं उसके बाद 80 पृष्ठों में प्रकाशित होती रही। वर्तमान में यह 128 पृष्ठों में प्रकाशित होती है। इस पत्रिका में आगमवाणी, आचार्य एवं विद्वान संत-सतियों के प्रवचन, प्रासङ्गिक लेख, कविता, विचार, प्रेरक-प्रसंग, नूतन-साहित्य, कथा, विशिष्ट आयोजन-कार्यक्रमों की रिपोर्ताज, जैन समाज में चल रही गतिविधियों के समाचार, श्रद्धांजलि आदि जानकारियाँ उपलब्ध रहती हैं। इसके अतिरिक्त बाल स्तम्भ, नारी स्तम्भ, युवा स्तम्भ और अंग्रेजी स्तम्भ में समाज के प्रत्येक व्यक्ति से जुड़ने का प्रयास स्पष्ट दृग्गोचर होता है। पत्रिका की मुख्य विशेषता है कि यह सम्प्रदाय-सद्भाव को

उत्पन्न करने वाली पत्रिका है, इसमें दिगम्बर, खरतरगच्छ, तपागच्छ, तेरापंथ, स्थानकवासी सभी सम्प्रदायों के समाचार, आलेख आदि प्रकाशित होते हैं। यह सभी सम्प्रदायों की भावनाओं का आदर करते हुए एक सकारात्मक एवं नई सोच प्रदान करती है। जिनवाणी पत्रिका के अब तक बीस विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं।

सम्पादक क्रम

जिनवाणी पत्रिका के प्रथम सम्पादक डॉ. फूलचन्द जी जैन 'सारंग' थे। श्री चम्पालाल जी कर्नावट, श्री केशरी किशोर जी नलवाया, श्री चांदमल जी कर्णावट, श्री पारसमल जी प्रसून, पं. रतनलाल जी संघवी, श्री शान्तिचन्द्र जी मेहता, श्री मिट्ठालाल जी मुरड़िया, पं. शशिकान्त जी झा आदि विभिन्न विद्वानों के सम्पादकत्व में विकसित इस पत्रिका के सम्पादन का दायित्व दिसम्बर सन् 1967 से नवम्बर सन् 1993 तक हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं जैन धर्म के विद्वान् डॉ. नरेन्द्र जी भानावत ने कुशलता पूर्वक सम्हाला। इस अवधि में पत्रिका को अच्छी लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा मिली। डॉ. (श्रीमती) शान्ता जी भानावत का भी सम्पादन में पूर्ण सहयोग मिला। अक्टूबर 1994 से इस पत्रिका का सम्पादन डॉ. धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर कर रहे हैं। उनके सम्पादकत्व में यह पत्रिका दिन दोगुनी रात चौगुनी प्रगति कर रही है।

जिनवाणी पत्रिका का विकास क्रम

सत्तर वर्षो से प्रकाशित हो रही जिनवाणी पत्रिका का समग्रता से अवलोकन करने पर सम्पादक कालक्रम से इसे तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

प्रथम–जनवरी 1943 से नवम्बर 1967 तक (सम्पादक–डॉ फूलचन्द जैन, श्री चम्पालाल कर्णावट आदि)

द्वितीय– दिसम्बर 1967 से सितम्बर 1994 तक (सम्पादक - डॉ नरेन्द्र भानावत)

तृतीय– अक्टूबर 1994 से अद्यतन (सम्पादक- प्रो. धर्मचन्द जैन)

उपर्युक्त काल विभाजन के अनुसार संक्षेप में विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रथम कालखण्ड

जैन समाज की प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय मासिक पत्रिका जिनवाणी का शुभारम्भ जनवरी 1943 को भोपालगढ में हुआ। श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ के तत्कालीन प्रधानाध्यापक डॉ. फूलचन्द जैन 'सारंग' पत्रिका के प्रथम सम्पादक थे। श्री बसन्तकुमार जैन एवं श्री चम्पालाल कर्नावट ने सहयोगी सम्पादक का दायित्व सम्भाला। पंडित दुःखमोचन झा ने पत्रिका का प्रारूप तैयार करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। पत्रिका के प्रकाशन में प्रारम्भिक काल में बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ा। उस समय

द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था, फलस्वरूप कागज प्राप्ति में बहुत कठिनाई होती थी। अतः देशी कागज में पत्रिका को निकालना पड़ता था। सितम्बर 1944 में जिनवाणी के प्रकाशन पर जोधपुर सरकार के पेपर इकोनॉमी कन्ट्रोल आर्डर द्वारा रोक लगा दी गई। श्रावकों के प्रयास से पुनः दिसम्बर में यह रोक हट पायी।

इतिहास, संस्कृति और धर्म की संवाहक पत्रिका जिनवाणी 42 पृष्ठों में जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ से प्रकाशित होती थी। मुखपृष्ठ पर आधे भाग में जिनवाणी, अंक, वर्ष, प्रकाशक एवं सम्पादक का नाम अंकित होता तथा आधे पृष्ठ पर एक विचार भी छपता था। विषय सूची द्वितीय पृष्ठ पर दी जाती थी तथा साथ में जिनवाणी के आजीवन एवं स्तम्भ सदस्यों के नाम अंकित होते थे। पत्रिका का प्रारम्भ ईश-प्रार्थना, जिन-प्रार्थना आदि कविताओं के प्रेरक विचारों से तथा समापन 'सम्पादकीय' जैसे चिन्तनपरक विचारों से होता था। यह पत्रिका आदि से अन्त तक मूल्यवान विचारों से सुसज्जित होती थी। निबन्ध, संस्मरण, कविता, चिन्तनपरक लेख, नवीन प्रकाशित पुस्तकों का परिचय, समाज में घटित विशेष समाचारों से युक्त पत्रिका का प्रत्येक अंक पाठकों के मन को लुभाता था। उत्तरोत्तर पत्रिका की विषय वस्तु में नवीन विषयों का संयोजन होता रहा। इतिहास स्तम्भ, बालवाणी, चयनिका, महिला जगत्, सामाजिक समस्या, गो-रक्षा, लौकागच्छ की पट्टावली, कथापरक कविता, पाक्षिकपत्र, बुद्धिपरीक्षा आदि विषय जुड़े। बालवाणी का सम्पादन श्री नरेन्द्र कुमार भानावत करते थे। जिनवाणी के कई अंकों में नन्दीसूत्र का परिचय प्रकाशित हुआ। संत-परिचय का भी क्रम निरन्तर बना रहा, जिनमें आचार्य श्री सोहनलाल जी महाराज , तपस्वी श्री बालचन्द्र जी महाराज, श्री केशरीमुनि, श्री भोजराज जी महाराज, मुनि श्री जीवराज जी, मुनि श्री हरिकिशन जी, मुनि श्री धर्मदास जी आदि नाम उल्लेखनीय हैं। जून 1958 के जिनवाणी अंक में '18 सेर सोना किस प्रकार बनाया' गया शीर्षक से एक आश्चर्यकारी लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें संवत् 1999 चैत्रमास में पंजाब निवासी श्री कृष्णपाल शर्मा रसवैद्य द्वारा पारद से सुवर्ण बनाने की प्रक्रिया को बताया गया है।

जिनवाणी के प्रथम कालक्रम में सम्पादन की बागडोर कई हाथों में गई। डॉ.फूलचन्द जी जैन के पश्चात् पं .रतनलाल संघवी, श्री चम्पालाल कर्नावट, श्री केशरी किशोर नलवाया, पं. शशिकान्त झा, पं. बसन्त जैन शास्त्री, पुनः श्री चम्पालाल कर्नावट एवं श्री चांदमल कर्नावट ने क्रमशः नवम्बर 1967 तक सम्पादक का दायित्व निर्वहन किया।

इस अवधि में पाँच विशेषांक प्रकाशित हुए। प्रथम 'दीपावली विशेषांक' 1955 में प्रकाशित हुआ, जिसमें दीपावली के ऐतिहासिक, सामाजिक, आध्यात्मिक पक्ष उजागर हुए। 1956 में प्रकाशित 'भीनासर सम्मेलन विशेषांक' इतिहास की एक अमूल्य धरोहर

बना। तृतीय 'स्वाध्याय विशेषांक' 1964 में डॉ. नरेन्द्र भानावत के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ, जिसमें स्वाध्याय पर निबन्ध, गीतिका, संस्मरण, अनुभव और स्वाध्याय संघ की विविध प्रवृत्तियाँ समायोजित हैं। चतुर्थ विशेषांक 'सामायिक' पर 1965 में प्रकाशित हुआ, जिसके माध्यम से सामायिक के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों पक्षों से पाठक अवगत हुए। इसी क्रम में 1966 में पंचम 'तप विशेषांक' सैद्धान्तिक और तुलनात्मक दो खण्डों में विभाजित था।

प्रारम्भिक अवस्था में जिनवाणी पत्रिका को प्रतिष्ठित करने का दायित्व बहुत बड़ा था, परन्तु श्रावकों ने धैर्य एवं निष्ठा से विघ्न-बाधाओं एवं विपदाओं का दृढता से सामना किया। परिणामस्वरूप जैनधर्म, दर्शन, साहित्य और संस्कृति की मासिक पत्रिका 1943 से निरन्तर चलती रही। प्रारम्भिक अवस्था में पत्रिका के प्रचार-प्रसार में श्री दौलतरूपचन्द जी भण्डारी का बहुत बड़ा योगदान रहा। श्री मोतीलाल जी मूथा-सातारा, श्री गुलराज जी अब्बानी-जोधपुर, श्री केवलमल जी लोढा- जयपुर एवं श्री सरदारमल जी भण्डारी ने भी उल्लेखनीय सहयोग किया।

द्वितीय कालखण्ड

जिनवाणी के सम्पादन का सन् 1967 से निरन्तर 26 वर्षों तक कुशल सम्पादन राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर तथा हिन्दी, राजस्थानी और जैन साहित्य के विशिष्ट विद्वान् डॉ. नरेन्द्र भानावत ने किया। उनकी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के प्रति अगाध श्रद्धा थी और आप उनके देदीप्यमान व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित थे। आपने अपने मृत्यु के अन्तिम क्षणों तक जिनवाणी की सेवा की। आचार्य श्री की प्रेरणा से आप आचार्य विनयचन्द्र ज्ञानभण्डार के निदेशक बने और सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की विविध प्रवृत्तियों से भी जुड़े। आचार्य श्री का दिशा निर्देश प्राप्त कर डॉ. भानावत ने "अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद्" का गठन किया।

जिनवाणी के सम्पादक के रूप में डॉ भानावत ने इस पत्रिका को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया। इस पत्रिका के पचास वर्षों की इतिहास यात्रा में लगभग तीन दशक तक डॉ. भानावत इसके साथ जुड़े रहे। आपके सम्पादन में इस पत्रिका ने महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कीं। भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव पर देशभर से प्रकाशित विशेषांकों में जिनवाणी के "जैन संस्कृति और राजस्थान विशेषांक" को सर्वश्रेष्ठ मानकर दिगम्बर समाज की ओर से लक्ष्मी देवी जैन पुरस्कार के रूप में डॉ. भानावत को प्रशस्ति पत्र एवं स्वर्णपदक प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह समारोह बड़ौत में आचार्य विद्यानन्द जी महाराज के सान्निध्य में तत्कालीन विदेश मंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी के

मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

प्रो.नरेन्द्र भानावत द्वारा जिनवाणी पत्रिका में अन्तरंग और बहिरंग दोनों दृष्टियों से निखार लाने का प्रयत्न किया गया। पत्रिका का कलेवर 24 से 40 पृष्ठ कर दिया गया। वैचारिक, सामयिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, तात्त्विक, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक चिन्तन के मौलिक आलेख प्रकाशित होने लगे। जीवन-निर्माण की प्रेरणा देने वाली कविताएँ और नैतिकता से युक्त कहानियाँ भी प्रकाशित होती रहीं। अनेक स्तम्भ भी प्रारम्भ किए गए, यथा- निबन्ध, कहानी, कविता, प्राचीन साहित्य, उज्ज्वल चरित्र, प्रश्नमंच, महिला स्तम्भ आदि। उज्ज्वल चरित्र में किसी संत का जीवनवृत्त और प्राचीन साहित्य में लेखक के जीवन-परिचय के साथ उनकी कृतियाँ दी जाती थीं। समाज दर्शन के शीर्षक से समाचार दिये जाते रहे। लोक-दृष्टि के शीर्षक से पाठक-प्रतिक्रिया भी प्रकाशित होती रही। साभार-प्राप्ति-स्वीकार कवर के अन्तिम पृष्ठ पर दी जाती थी और प्रारम्भ में उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक सूत्र की गाथाएँ प्रकाशित की जाती रहीं। लेखों के मध्य बॉक्स में कुछ मुख्य अंश दिये जाते थे।

फरवरी 1968 से 'उगते सितारे' नामक स्तम्भ सम्पादक द्वारा प्रारम्भ किया गया। जिसमें नये लेखकों को स्थान दिया जाने लगा। 'प्रश्नोत्तरी स्तम्भ' को प्रारम्भ करने के पीछे डॉ नरेन्द्र भानावत की बहुत सूक्ष्म दृष्टि रही। वे अपने सम्पादकीय में लिखते हैं- ''जैनदर्शन एक वैज्ञानिक दर्शन है। उसके अध्ययन-अध्यापन की पर्याप्त सुविधाएँ समाज में प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध नहीं हैं। कई ऐसे स्थान भी हैं जहाँ संत-सतियों के दर्शन भी दुर्लभ होते हैं। इस स्थिति में जिज्ञासु स्वाध्यायियों के मन में जो सैद्धान्तिक प्रश्न उठते हैं, उनके समाधान का कोई मार्ग नहीं रह जाता। अत: ऐसे तात्त्विक प्रश्नों के उत्तर जिनवाणी के माध्यम से दिए जाएं। इसी उद्देश्य को लेकर प्रश्नोत्तर स्तम्भ प्रारम्भ किया जा रहा है।''

अप्रेल 1974 से श्री महावीर कोटिया द्वारा प्रणीत 'आत्मजयी' नामक उपन्यास चार किश्तों में प्रकाशित हुआ। यह भगवान महावीर के जीवन और उपदेश पर आधारित मानवतावादी एक लघु उपन्यास है। 'दीक्षा कुमारी का प्रवास' नामक उपन्यास भी जिनवाणी के अंकों में प्रकाशित हुआ, जिसे लोगों ने बहुत सराहा।

डॉ. भानावत द्वारा प्रारम्भ के कुछ वर्षों में सम्पादकीय शीर्षक से तथा बाद में 'अपनी बात' शीर्षक से सम्पादकीय लिखे गए। प्रो. भानावत के समय में विभिन्न विषयों पर दस विशेषांक प्रकाशित हुए। पाठकों द्वारा सभी विशेषांकों का अभिनन्दन किया गया, पाठकों की प्रतिक्रिया सकारात्मक रूप से प्राप्त हुई, जिसका प्रकाशन जिनवाणी अंकों में किया गया। वे विशेषांक निम्नलिखित हैं-(1) श्रावक धर्म विशेषांक-1970, (2) साधना

विशेषांक-1971, (3) ध्यान विशेषांक-1972, (4) जैन संस्कृति और राजस्थान-1975, (5) कर्मसिद्धांत विशेषांक-1984, (6) श्रावक धर्म और समाज-1985, (7) अपरिग्रह विशेषांक-1986, (8) आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. श्रद्धांजलि-1991, (9) आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. : व्यक्तित्व एवं कृतित्व-1992, (10) अहिंसा विशेषांक-1993।

डॉ भानावत को सम्पादन कार्य में अपनी पत्नी श्रीमती शान्ता भानावत का पूर्ण सहयोग मिलता था। 4 नवम्बर, 1993 को उनके स्वर्गगमन के पश्चात् 5-6 महीने तक उन्होंने जिनवाणी को सम्पादित किया, वे भी दिवंगत हो गईं तो उनके पुत्र डॉ. संजीव भानावत ने इस कार्य को सितम्बर 1993 तक देखा।

तृतीय कालखण्ड

प्रो. नरेन्द्र भानावत के बाद जिनवाणी को सुयोग्य हाथों में देने के लिए खोज की गई ताकि पत्रिका के स्तर को हानि न हो और इसकी लोकप्रियता बनी रहे। रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज ने अपनी पारखी दृष्टि से विद्वानों पर नज़र दौड़ाई तो उन्हें डॉ.धर्मचन्द जैन सभी दृष्टियों से उपयुक्त लगे। संस्कृतविद्, प्राकृतभाषाविज्ञ, सरल एवं शान्तस्वभावी डॉ. धर्मचन्द जैन ने आचार्यश्री की आज्ञा शिरोधार्य कर बहुत निपुणता से अपने कार्य को किया। उसी का परिणाम है कि आज जिनवाणी पत्रिका जैनपत्रिकाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। जैन-अजैन सभी वर्ग के लोग इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं और महीने के प्रारम्भ से ही नये अंक के आने का इन्तजार करते हैं।

अक्टूबर 1994 से जिनवाणी पत्रिका के सम्पादन कार्य में संलग्न डॉ.धर्मचन्द जैन जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,जोधपुर के संस्कृत विभाग में प्रोफेसर हैं। आप रत्नसंघ की कई संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। जिनवाणी के सम्पादन से पूर्व आप स्वाध्याय-शिक्षा के सम्पादन का कार्य सम्हाल रहे थे। कुछ वर्षों तक आपने 'जिनवाणी' और 'स्वाध्याय शिक्षा' दोनों पत्रिकाओं का सम्पादन किया। संघ समर्पित सुश्रावक डॉ.धर्मचन्द जैन ने आचार्य श्री हस्ती के जीवनग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' का लेखन किया। आप बहुप्रतिभा के धनी, सुलझे विचारों से युक्त, दृढ मनोबली एवं अध्यात्म विचारों से अनुप्राणित हैं।

किसी भी पत्रिका में उसके सम्पादक की दृष्टि दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले आकार की भांति स्पष्ट दृग्गोचर होती है। डॉ.भानावत के बाद जिनवाणी की पाठ्यसामग्री में कई मायनों में समय के साथ बहुत परिवर्तन हुआ। वर्तमान में जिनवाणी के विषयों का अनुक्रम इस प्रकार रहता है- आगमवाणी, विचार-वारिधि, वाग्वैभव, प्रवचन, प्रासंगिक,

शोधालेख, आध्यात्मिक/नैतिक, अंग्रेजी स्तम्भ, पत्र स्तम्भ, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ, बाल-स्तम्भ, स्वास्थ्य-विज्ञान, जीवन-व्यवहार, कविता, गीत, विचार, साहित्य-समीक्षा, मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता, समाचार विविधा। जिनवाणी में सभी वर्गों के पाठकों के लिए पठनीय सामग्री रहती है। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रवचनों के अतिरिक्त इसमें वर्तमान की आवश्यकताओं को देखते हुए हर प्रकार से नवीनता लाने का प्रयास सम्पादक द्वारा किया गया है। पत्रिका में प्रकाशित समाचार विविधा को पढने से पाठक को जैन समाज की पूरे देश में होने वाली गतिविधियों की जानकारी उपलब्ध हो जाती है। नये लेखकों को जोड़ने का प्रयास भी किया जाता है।

जिनवाणी पत्रिका का सम्पादकीय बहुत ही मार्मिक, रोचक, विविध जानकारियों से परिपूर्ण, आध्यात्मिक, व्यावहारिक, प्रासंगिक, सामाजिक जैसी कई विशेषताओं को समेटे हुए प्रभावी सम्प्रेषण के साथ पाठकों के हृदय में स्थित हो जाता है। कतिपय शीर्षक यहाँ उद्धृत हैं- लक्ष्मी की पूजा, कीर्ति का सुख, साधु-श्रावक करूँ प्रणाम, सद्गुणों की पूजा, प्रजातान्त्रिक मूल्य, क्षमाशीलता और कषाय-विजय, संघ एकता, जैन एकता, आचार्य हस्ती की दृष्टि में ज्ञान की महिमा, आचारशुद्धि के प्रेरक : आचार्य श्री हीरा, धार्मिक पाठशालाओं की आवश्यकता, धर्म की भयावहता, बालदीक्षा का औचित्य, संथारा आदि।

डॉ. जैन के समय में पाँच विशेषांक प्रकाशित हुए हैं- (1) सम्यग्दर्शन विशेषांक-1996, (2) क्रियोद्धार चेतना अंक-1997, (3) जैनागम विशेषांक-2002, (4) प्रतिक्रमण विशेषांक-2006, (5) गुरु-गरिमा एवं श्रमण जीवन विशेषांक-2011। ये सभी विशेषांक अपने आपमें उस विषय की जानकारी के लिए एक कोश के समान हैं। इन सभी विशेषांकों को पाठकों ने खूब सराहा है।

डॉ. धर्मचन्द जैन समर्पित भाव से पत्रिका की उच्चस्तरता के लिए भरसक प्रयत्न करते हैं। परिणामस्वरूप आपने 2011 में आई.एस.एस.एन. नम्बर भी पत्रिका के लिए आवंटित करवाया। अभी आप जिनवाणी पत्रिका को नेट पर लाने के लिए कटिबद्ध हैं। इण्टरनेट की प्रक्रिया चल रही है। शीघ्र ही यह पत्रिका विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुलभ होगी।

जिनवाणी पत्रिका का समाज पर सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। समय समय पर पाठकों की प्रतिक्रिया प्रकाशित होती है, जो जिनवाणी के प्रकाशन की सफलता का मापदण्ड है। जिनवाणी पत्रिका के 14000 से अधिक पाठक हैं। यह जैन धर्म, दर्शन, संस्कृति इतिहास एवं आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की वाहक पत्रिका है।

-'समता कुंज', 12/7 A, जालम विलास स्कीम, पावटा B रोड़, जोधपुर-

गीत

शुद्ध श्रद्धा दृढ़ता रे साथे

श्री दिलखुशराज जैन

(तर्जः संयम रो तो मार्ग कठिन है, शूरा बनने चालणो)

कर्मा री भाई मार जोर की, बहुत कठिन बच पावणो,
शुद्ध श्रद्धा दृढ़ता रे साथे, जैन धर्म रो पालणो।।
नित नया भोगां रा साधन, मनने खूब लुभावे है,
साता री आसक्ति में, तू इन्हें छोड़ नहीं पावे है,
मुश्किल है इण कारण सुं, पापा सुं बच पावणो।। शुद्ध श्रद्धा...........।।
जरा हुई जो ऊँच नीच तो, क्रोध भाव भर जावे है,
इणी तरह मद, लोभ भाव में, भान नहीं रख पावे है,
मुश्किल बहुत कषाया ने, शांत रख पावणो।।शुद्ध श्रद्धा...............।।
जो ज्ञान नहीं चढ़ पावे तो, हीन भाव भर जावे है,
कुछ जाण पणा रे होणा पर अहंभाव भर जावे है,
कठिन है इन दोना में, सही समझ रख पावणो।। शुद्ध श्रद्धा............।।
दोष स्वयं रा नहीं दीखता, पर दोषा ने भूंडे है,
करे प्रशंसा खुद ही खुद ही, दूजा सुं करवावे है,
मुश्किल खुद रा दोष छोड़ने, गुणग्राही बन जावणो।। शुद्ध श्रद्धा........।।
पग-पग पर जो मिले मूर्तियाँ, माथो रोज टिकावे है,
पैदा, पद, टाबर सुख खातिर, मन्नत नित ही ध्यावे है,
मुश्किल इण रो राग त्यागणो, आत्मदेव रो ध्यावणो।। शुद्ध श्रद्धा.......।।
गला पेट दूजा रा कट रया, नहीं जरा भी भान है,
भरती जाय तिजोरी अपनी, सोच यही दिन रात है,
कठिन बहुत है प्रेम भाव सुं, दुखिया ने गले लगावणो।। शुद्ध श्रद्धा.....।।
अब तो जिवड़ा जरा चेत जा, जिनवाणी समझावे है,
सद्गुरु, धर्म, देव जो मिलिया, क्यूं नहीं लाभ उठावे है,
कठिन बहुत जो अब चूका तो, मोक्ष धाम रो पावणो।। शुद्ध श्रद्धा......।।

-303, आगम फ्लेटस, सुभानपुरा, वड़ोदरा(गुजरात)

शोधालेख

जैन एवं वेदान्त दर्शन में अधिकारी का स्वरूप

डॉ. दीपमाला

भारतीय दर्शन परम्परा में आत्मा, मोक्ष, ईश्वर, कर्म, कार्य-कारण आदि सिद्धान्तों का चिन्तन मुख्य रूप से प्राप्त होता है। इन सिद्धान्तों के साथ ही आनुषङ्गिक रूप से भी कई अवधारणाएँ परम्परया प्राप्त होती हैं, जैसे अनुबन्ध चतुष्टय का चिन्तन। प्रत्येक दर्शनशाखा में अनुबन्ध चतुष्टय का विशेष रूप से विवेचन किया गया है। डॉ. बैलेण्टान ने अपने प्रबन्ध ""The List of the Vedanta as a Philosophy" में अनुबन्ध की व्याख्या करते हुए कहा- ""A bond of connection or cause"। अनुबन्ध चतुष्टय के अन्तर्गत अधिकारी, विषय, सम्बन्ध तथा प्रयोजन की गणना की गई है।[1] इनमें से 'अधिकारी' का प्रत्येक सम्प्रदाय में विशेष महत्त्व है। अतः प्रत्येक दर्शन में उस परम्परा के अधिकारी का निर्धारण प्राप्त होता है। व्याकरण की दृष्टि से अवलोकन करने पर अधि उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से 'घञ्' प्रत्यय करने पर अधिकार पद निष्पन्न होता है तथा अधिकार शब्द से मत्वर्थीय 'इनि' प्रत्यय होकर अधिकारी शब्द निष्पन्न होता है। सामान्य रूप से अधिकारी का तात्पर्य है कि शास्त्र विशेष में प्रवेश के लिए किन-किन विशिष्ट योग्यताओं की आवश्यकता है। इसी आधार को अपनाकर विभिन्न शास्त्रों में अधिकारी का विवेचन किया जाता है।

विभिन्न भारतीय दर्शनों में अधिकारी विवेचन

भारतीय परम्परा के प्रायः सभी दर्शनों में अधिकारी विषयक विचार प्राप्त होता है। अद्वैत परम्परा में तो अनुबन्ध चतुष्टय के अन्तर्गत अधिकारी का विस्तृत वर्णन प्राप्त है। वेदान्तसार में प्रवेशार्थी की तीन विशिष्ट योग्यताओं का निर्देश है[2]-

वेदान्त में वही अधिकारी हो सकता है जिसने- (1) इस जन्म या पूर्वजन्म में विधिपूर्वक वेद-वेदाङ्गों का अध्ययन करके सम्पूर्ण वेदों का अर्थज्ञान प्राप्त कर लिया हो। (2) वेदों में उल्लिखित काम्य एवं निषिद्ध कर्मों का त्यागकर नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त तथा उपासना कर्मों का अनुष्ठान करने से सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर निर्मल अन्तःकरण वाला हो गया हो। (3) साधन चतुष्टय से सम्पन्न प्रमाता ही अधिकारी है।[3] यहाँ साधन चतुष्टय से तात्पर्य नित्यानित्य वस्तु विवेक, ऐहिक तथा पारलौकिक विषयों के भोग से

वैराग्य, शम दमादि छः साधनों की सम्पत्ति तथा मुमुक्षुत्व से युक्त होना है।

अन्य दर्शनों में स्पष्ट रूप से अधिकारी का उपदेश नहीं है, किन्तु अपरोक्ष रूप से प्रवेशार्थी की योग्यता का उल्लेख अवश्य होता है। जैसे- सांख्य दर्शन में दुःखत्रय (आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक) के अभिघात से पीड़ित ऐसा व्यक्ति जो उन दुःखों की आत्यन्तिक एवं ऐकान्तिक निवृत्ति के लिए सांख्य सम्मत पञ्चविंशति तत्त्वों का जिज्ञासु है वही अधिकारी है। इसका निर्देश सांख्यकारिका में इस प्रकार प्राप्त होता है-

दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ।
दृष्टे साऽपार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात्।।[4]

न्यायदर्शन में भी अधिकारी विषयक चिन्तन सूत्ररूप में प्राप्त है। यहाँ व्याकरणादि के ज्ञान से युक्त एवं ग्रहणधारण पटु ऐसा बालक जो न्याय सम्मत षोडश पदार्थों की जिज्ञासा रखता है वह अधिकारी है। यहाँ बालक का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा गया है- "**ग्रहणधारणपटुर्बालः नार्भकः**" अर्थात् प्रमाणादि से अज्ञ व्यक्ति जो व्याकरणादि का ज्ञान रखता हो वह बालक है।[5]

तर्कभाषा के व्याख्याकार श्रीनिवास शास्त्री ने 'बालः' पद से दो प्रकार के अधिकारियों का निरूपण किया है-

1. न्याय के सिद्धान्तों से अनभिज्ञ, किन्तु उनका परिचय प्राप्त करने के इच्छुक जन।
2. न्यायशास्त्र का अध्ययन करके भी उसके सिद्धान्तों की गहराई में न जा सकने वाले व्यक्ति।

मीमांसा दर्शन का प्रथम सूत्र है- "अथातो धर्मजिज्ञासा।[6] लौगाक्षिभास्कर अपने ग्रन्थ अर्थसंग्रह में इस सूत्र की व्याख्या करते हुए कहते हैं- इस सूत्र में अथ, अतः, धर्म-जिज्ञासा ये तीन पद हैं। इनमें से 'अथ' पद वेदाध्ययन के आनन्तर्य का वाचक है। और 'अतः' शब्द वेदाध्ययन की दृष्टार्थकता का वाचक है। इस प्रकार सूत्रार्थ यह हुआ- चूंकि वेद के अध्ययन का दृष्ट फल अर्थज्ञान होता है। इसलिए वेदाध्ययन (मौखिक वेद राशि ग्रहण) के अनन्तर धर्म अर्थात् वेद के अर्थ की जिज्ञासा करनी चाहिए।[7] यहाँ विचार करने पर स्पष्ट होता है कि अथ शब्द से अधिकारी का ही निर्देश है। इस प्रकार वेदाध्ययन रूपी योग्यता मीमांसा में अधिकारी का निर्धारण करती है।

इस प्रकार प्रायः सभी दर्शनों में अधिकारी का निदर्शन प्राप्त होता है।

जैन दर्शन में अधिकारी का विवेचन

जैनदर्शन का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि इसमें स्पष्ट रूप से अधिकारी

का उल्लेख नहीं है, किन्तु आनुषङ्गिक रूप से अधिकारी का चिन्तन प्राप्त होता है। जैन दर्शन में मोक्षमार्ग का निर्देश करते हुए कहा गया है- "**सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः।**"[8]

साक्षात् रूप से तो यह सूत्र मोक्षमार्ग का प्रतिपादक है, किन्तु परम्परया अधिकारी का निरूपक भी है। इस सूत्र में प्रयुक्त 'सम्यग्दर्शन' पद से अधिकारी का ही निर्देश है। जैन परम्परा में सम्यग्दर्शन एक पारिभाषिक शब्द है। सम्यग्दर्शन का स्वरूप स्पष्ट करते हुए तत्त्वार्थसूत्रकार कहते हैं- "**तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।**"[9] तात्पर्य है कि स्वरूप के अनुसार तत्त्वों का जो श्रद्धान होता है वह सम्यग्दर्शन है। जैनमत में सात तत्त्व स्वीकृत हैं।[10] इन सप्त तत्त्वों के स्वरूप में जिनकी श्रद्धा है उनका दर्शन सम्यग्दर्शन है। चूंकि सम्यग्दर्शन से युक्त होना ही मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान है, अतः सम्यग्दर्शन से युक्त होना ही मोक्षमार्ग के अधिकारी का निर्धारक है एवं तत्त्वार्थ श्रद्धान ही जैन दर्शन में अधिकारी का स्वरूप है। यदि सूक्ष्म विचार किया जाय तो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र तीनों समेकित रूप से अधिकारी की योग्यता है, क्योंकि सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग् ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता और सम्यग्ज्ञान के अभाव में सम्यक्चारित्र प्राप्त नहीं किया जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि सम्यग्दर्शन सम्पन्न प्रमाता ही जैन दर्शन का अधिकारी है।

सम्यग्दर्शन के प्रकार एवं प्राप्ति का उपाय

सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। अतः सम्यग्दर्शन के विषय में जैनदार्शनिकों ने सूक्ष्म विचार किया है। सर्वार्थसिद्धिकार पूज्यपादाचार्य के अनुसार सम्यग्दर्शन दो प्रकार का है- (1) सराग सम्यग्दर्शन, (2) वीतराग सम्यग्दर्शन। प्रशम, संवेग, अनुकम्पा और आस्तिक्य आदि की अभिव्यक्ति लक्षण वाला सराग सम्यग्दर्शन है और आत्मा की विशुद्धि मात्र वीतराग सम्यग्दर्शन है।[12] सम्यग्दर्शन के दोनों भेद पात्र की अपेक्षा से किये गये हैं। अतः सम्यग्दर्शन को सराग और वीतराग मानना उचित नहीं है, क्योंकि सम्यग्दर्शन स्वयं न तो सराग होता है और न वीतराग। सरागता और वीतरागता का सम्बन्ध तो कषाय के सद्भाव और असद्भाव से है। सरागी व्यक्ति के सम्यग्दर्शनजन्य आत्मविशुद्धि प्रकट तो हो जाती है, परन्तु स्पष्टतः लक्षित नहीं होती। अतः इसे सराग सम्यग्दर्शन कहते हैं।

जीवादि पदार्थों को विषय करने वाला सम्यग्दर्शन किस प्रकार उत्पन्न होता है, इसका उत्तर देते हुए उमास्वाति कहते हैं- "**तन्निसर्गादधिगमाद्वा।**"[13] सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में दो हेतु हो सकते हैं- (1) निसर्ग अर्थात् स्वभाव से (2) अधिगम द्वारा।

दोनों हेतुओं में अन्तरंग कारण रूप दर्शन मोहनीय का उपशम, क्षय या क्षयोपशम समान है। इसके रहते बाह्य उपदेश के बिना होने वाला नैसर्गिक सम्यग्दर्शन है। जो बाह्य उपदेशपूर्वक जीवादि पदार्थों के ज्ञान के निमित्त से होता है वह अधिगमज सम्यग्दर्शन है।[14]

इस प्रकार जैन दर्शन ग्रन्थों में सम्यग्दर्शन जो अधिकारी का निकष है, का सूक्ष्म चिन्तन प्राप्त होता है।

वेदान्त दर्शन एवं जैन दर्शन के अधिकारी स्वरूप में साम्य

वेदान्त में साधन-चतुष्टय सम्पन्न प्रमाता अधिकारी है। जैन दर्शन में सम्यग्दृष्टि से युक्त व्यक्ति अधिकारी है। दोनों लक्षणों की तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि वेदान्त का अधिकारी भी सम्यग्दृष्टि सम्पन्न होता है। जिसे साधन चतुष्टय[15] द्वारा समझा जा सकता है-

1. **नित्यानित्य वस्तु-विवेक-** नित्य एवं अनित्य पदार्थों में भेदबुद्धि होने पर जीव अनित्य पदार्थों को हेय समझकर उनसे विरक्त होगा तथा नित्य पदार्थों का ग्रहण करेगा। इसी प्रकार जैनमत में सम्यग्दर्शन की उपलब्धि होने पर श्रेय तथा अश्रेय में विवेक होने से पुरुष अश्रेय को छोड़ देता है तथा श्रेय को ग्रहणकर मोक्षमार्ग पर अग्रसर होता है।

2. **इहामुत्रार्थफलभोग-विराग-** वेदान्त दर्शन में ब्रह्मज्ञान के लिए इस लोक एवं परलोक में प्राप्त होने वाले फलभोग से वैराग्य आवश्यक माना गया है। यह लक्षण जैनदर्शन में प्रतिपादित सम्यग्दर्शन के पाँच लक्षणों (शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा एव आस्तिक्य) में से निर्वेद से साम्य रखता है। सम्यग्दृष्टि जीव निर्वेद युक्त होने से सांसारिक (इहलौकिक एवं पारलौकिक) भोगों से विरक्त होता है।

3. **शमदमादि षटक् सम्पत्ति-** शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान इन छह सम्पत्तियों से सम्पन्न प्रमाता वेदान्त का अधिकारी है। जैन दर्शन में प्रतिपादित सम (शम) का साम्य वेदान्त के शम, तितिक्षा एवं समाधान से है। संवेग एवं निर्वेद का साम्य दम एवं उपरति से है तथा आस्तिक्य के अन्तर्गत श्रद्धा का समावेश किया जा सकता है। इस प्रकार सम्यग्दर्शन एवं शमादिषट्क का साम्य दृष्टिगोचर होता है।

4. **मुमुक्षुत्व-** जैन दर्शन में भी सम्यग्दृष्टि जीव मोक्षेच्छु होता है। यह तथ्य 'संवेग' नामक लक्षण से स्पष्ट है।

इस प्रकार वेदान्त का अधिकारी एवं जैनदर्शन का अधिकारी स्पष्ट साम्य दर्शाते हैं।

अधिकारी स्वरूप में एकसूत्रता

सभी दर्शनों द्वारा प्रदत्त अधिकारी लक्षणों का अवलोकन करने पर विदित होता है

कि सभी दर्शनों में स्वीकृत अधिकारी का स्वरूप स्थूल दृष्टि से भले ही भिन्न-भिन्न प्रतीत हो, किन्तु वस्तुतः उनमें भेद नहीं है। फिर वह सांख्यदर्शन सम्मत विवेक ख्याति हो या न्याय सम्मत तत्त्वज्ञान हो, क्योंकि तत्तद् दर्शनों में स्वीकृत तत्त्वों में श्रद्धा एवं जिज्ञासा रखने वाला ही वस्तुतः तत्तद्दर्शन का अधिकारी है और यह उचित भी है कि किसी भी परम्परा की मान्यताओं में श्रद्धा के बिना कोई भी उस परम्परा में प्रवेशार्ह नहीं हो सकता है।

अतः हमें स्थूल दृष्टि त्यागकर एकसूत्रता का ग्रहण करना चाहिए।

संदर्भ सूचीः-

1. (1) तत्र अनुबन्धो नाम अधिकारिविषय-सम्बन्ध-प्रयोजनानि।-वेदान्तसार,5
(2) ''प्रवृत्तिप्रयोजकज्ञानविषयत्वम् अनुबन्धत्वम्''-तर्क भाषा की श्रीनिवास कृत टीका
2. अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापाततोऽधिगताखिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जनपुरःसरं नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानुष्ठानेन निर्गत-निखिलकल्मषतया नितान्त-निर्मलस्वान्तःसाधनचतुष्टय-सम्पन्नः प्रमाता। -वेदान्तसार
3. नित्यानित्यवस्तुविवेकः, इहामुत्रार्थभोगविरागः, शमदमादिसाधनसम्पत् मुमुक्षुत्वं च- ब्रह्मसूत्र 1.1.1 का शांकर भाष्य
4. सांख्य कारिका, कारिका 1
5. बालोऽपि यो न्यायनये प्रवेशं, अल्पेन वाञ्छत्यलसः श्रुतेन।
संक्षिप्तयुक्त्यन्विततर्कभाषा, प्रकाशते तस्य कृते मयैषा।। - तर्कभाषा, पृष्ठ-1
6. जैमिनिसूत्र -1
7. जैमिनीय प्रथम सूत्र की व्याख्या, अर्थसंग्रह, पृष्ठ 6
8. तत्त्वार्थ सूत्र, 1.1
9. तत्त्वार्थ सूत्र 1.2
10. जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम्' -तत्त्वार्थ सूत्र,1.4
11. तत्त्वार्थ सूत्र, विवेचक- पं. सुखलाल संघवी, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, पृष्ठ 47
12. तद्द्विविधं, सरागवीतरागविषयभेदात् प्रशमसंवेगानुकम्पास्तिक्याद्यभिव्यक्तिलक्षणं प्रथमम्। आत्मविशुद्धिमात्रमितरत्। -तत्त्वार्थसूत्र-सर्वार्थसिद्धि टीका, पृष्ठ-7
13. तत्त्वार्थ सूत्र-1.3
14. उभयत्र सम्यग्दर्शने, अन्तरङ्गो हेतुस्तुल्यो दर्शनमोहस्योपशमः क्षयोपशमो वा। तस्मिन्सति यद् बाह्योपदेशादृते प्रादुर्भवति तन्नैसर्गिकम्। यत्परोपदेशपूर्वकं जीवाद्यधिगमनिमित्तं तदुत्तरम्।
-सर्वाथसिद्धि, तृतीय सूत्र की टीका।
15. ब्रह्मसूत्र 1.1.1. का शाङ्कर भाष्य।

-पोस्ट डॉक्टरल फैलो, संस्कृत-विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

अनुभव

वीतरागता के पथ पर

सौ. छाया मनोहर भण्डारी

वीतरागता के पथ पर तू अविचल गति से चल पड़,
विश्राम को तज, समता को धर,
तू अविचल गति से चल पड़।। ध्रुव।।

क्रोध का उदय हुआ, तू उसका संग ना कर,
कर्ता भोक्ता भाव न रखकर, तू बस उसे निहारता चल,
संवेदन ही मात्र करना, बहाव में न निकल पड़
वीतरागता के पथ पर तू अविचल........।।1।।

भय, लोभ मद माया यह सब एक जाल है,
अनित्य भाव दृढ़ कर, मन में समता धारना है।
मात्र द्रष्टा भाव से स्वयं को संभालना है।
वीतरागता के पथ पर तू अविचल........।।2।।

शरीर का प्रत्येक संवेदन जब विनश्वर है।
तब अपना इसे मानकर तू स्वयं ठगा जा रहा है।
समभाव में निज को रख, सहिष्णुता को पुष्ट कर।
वीतरागता के पथ पर तू अविचल........।।3।।

प्रियता-अप्रियता ही कराती है हमारा पतन।
विनय वैयावच्च और समर्पण से साधना समता को है
ध्यान, अनित्य जागरणा का मूल समता भाव ही है
वीतरागता के पथ पर तू अविचल........।।4।।

वीतराग ध्यान को स्मृति में रख, समय सफल बनाना है
रागद्वेष की ग्रंथि भेदकर, जीवन उन्नत बनाना है।
गुरुकृपा से प्रत्येक क्षण को सफल बनाना है।
वीतरागता के पथ पर तू अविचल........।।5।।

-भण्डारी मेडिकल्स, काँग्रेस भवन, जलगाँव (महा.)

English-Section

The Rights of All Life Forms in Ācārāṅga Bhāṣyam

Dr Samani Shashi Prajñā

Jainism one of the most ancient religions of the world originated and developed on Indian soil containing a profoundly progressive social attitude. Even in the antiquity start from the first tīrthaṅkar Rishabh to 24th tīrthaṅkar Mahāvīra, Jain preceptor discussed at length how one can protect the right of all the creatures. The Ācārāṅga Bhāṣyam, the earliest known Jain text describes that all the living beings namely earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, air-bodied and vegetable bodied etc. immobile beings also deserve equal rights in this universe. But the very concept of Human Rights is becoming very popular in recent years as per UN declaration of the United Nations General assembly. This UNDHR contains a comprehensive list of political, economic, social and cultural rights and aims at the protection of the freedom, equality and human dignity of all human beings, irrespective of their race, gender, language or religion. Never before in the history had there been such a far reaching and solemn undertaking to protect each and every individual from all forms of oppression and deprivation.

Ācārya Mahāpragya writes in his Ācārāṅga Bhāṣyam that the concept of Human Rights is one sided perspective as the rights of immobile beings have been neglected completely and the consequence is that human power has dominated the rights of other species of the universe. So today the natural environment is in crisis. Uptil now the rights for earth, air, water, fire and vegetable bodied beings which also possess equal consciousness as per Jain perspective from the existential point of view were not taken into consideration. But Tīrthankar Mahavira 2600 years back itself claimed that the life of least developed beings must be duly respected. An outstanding aphorism of Ācāraṅga which highly depicts the oneness of the soul i.e. 'tumaṁsi nāma sacceva Jaṁ, hantavvamti mannasi, tumaṃsi nāma sacceva Jaṁ ajjāveyavaṃti mannasi'[1] That is "which you want to kill is yourself, that which you want to satisfy is yourself, that which you want to torture is yourself."

such a oneness of souls in all the levels of beings if recognized that I am sure that violations of basic rights of all the beings can be safeguarded. In the world of today, a fresh problem needs fresh thinking and emergence of new principles for their solution. The scripture under study proclaims the effects of ambitious mentality of modern society to enjoy the pleasures of the world at the cost of other beings. So this concept of Human Rights, literary not available during the period of Mahavira, but its seeds were prevailing in the then period too.

During the age of Mahavira also the torture towards animals, men and women slaves, imprisoned people and even towards immobile beings was in existence. So in Ācārāṅga Sūtra, Mahāvira rightly commented that sometimes a person is beaten to a state of unconsciousness and sometimes tortured to death.[2] He further says that due to greed, for earning more and more money, by killing animals for tusks, hide, flesh, blood, heart, bile, fat, feathers, tail, hair, horn, tooth, Jaw, nail, sinew, bone and marrow. Some People kill with a purpose and some without any.[3] Today we see domestic violence towards wives, old persons, children's, prisoners, refugees, etc. and killing of animals for meat eating, for medical tests, for longevity and beauty of man-kind, for amusement are really heart touching, not only this but also exploitations towards vegetable life forms, earth, air, fire and water bodied beings for the self happiness is leading towards environmental pollution and global warming at large. Mahāvira was not opposed to meeting the primary needs of the rapidly growing population, but his opposition was to the ideology of unrestrained ambition. Humanity has not yet succeeded in finding a way of life that could satisfy the primary needs of all and simultaneously mitigate the inhuman cruelty, a by-product of excessive acquisition of wealth. So Mahāpragya rightly said, solve the problem of possessiveness, the problem of violence will then automatically find its own solution.[4] The effect cannot be got rid of so long as the cause is in function. Violence is an effect, possessiveness is its cause. The root cause of the problem of violence is of tying up the sense of mineness with things. This philosophy of Ācārāṅga gave a new turn to the science of ethics and advanced thought in the direction of peace announcing 'Be a seer. Look at every event and bring about a change in your attitude to

sensual objects. Do not enjoy objects like the person who doesn't seek truth. But bring about a complete change in your life style through attitudinal change.'[5] If this view is translated into reality, I think that unnecessary violence, reactive violence, physical, mental, emotional and intellectual violence at large can be avoided, which in turn can protect the right of all forms of life and not merely the human rights.

Jain understanding of Interdependence of Nature and Man

Right to live Act of 21 Article of it Human Rights can be compared with the view of Mahāvira is highlighted in his Ācārāṅga that every life form has the right to live, life is dear to everyone, nobody wants to die.[6] So nobody has the right to take away the life of other beings. The very language of the concept of right is based upon the conceptions of Justice. The Jain motto of 'Parasparopagraho Jeevānām[7] as quoted in the Tattvartha Sutra, which highlights that all living organism, however big or small, irrespective of the degree of their sensory perception, are bound together by mutual sopport and interdependence. As far as my knowledge goes due to Islamic view that God has made this creation and whatever available on the earth are made for the consumption of man. In the Bible God said, ' See, I gave you all the seed bearing plants that are upon the whole earth and this shall be your food.''[8] Due to this vague notion of Christianity, unipolar power of the entire Europe that man is a privileged supreme being in the world and nature is the main cause of present ecological imbalance. Not only this, non-vegetarian life style is the cause of the continuous degradation of environment & depletion of life-supporting natural resources but also the reckless consumerism is the matter of serious concern. On the other hand, to relieve people from pain and sufferings and to reduce the sum total of human misery unethical science of medical testing is causing misery to other innocent creatures, is a matter of serious issue. According to one estimate modern science is claiming more than five billion innocent lives every year. Jain text Ācārāṅga cities that such sort of violence is for self-harm, is for self-non-enlightenment only.[9] Jains believe as man and nature are so inter-woven with each other into the social fabric that there is a common thread, which binds us all. This principle of inter-relatedness and inter-dependence of living beings as cited in the Āchārāṅga Sūtra,

paves us towards the truth that the denial of the existence of the six classes of beings will be tantamount to the denial of the existence of the self. One cannot safeguard one's own existence by obliterating the existence of others.[10] If this philosophy of equanimity of consciousness is translated into reality, the problem arising due to the violation of Human Rights can be solved. The culture of non-violence for the better promotion of socially beneficial, peace-fostering and nature friendly way of life can be established on this earth.

Human Solidarity of Jainism:

Mahavira's philosophy of Equality of Consciousness as an intrinsic nature of each living being also claims that Human race is one. (ekka manussa Jai),[11] He never discriminated any human on the basis of his birth, colour, profession, religion, country etc. He established the novel notion of oneness of Humanity on the basis of one's action. The criteria of the human lies in the virtue of compassion, sympathy, service, affection, and in the acts of benevolence. Today we see, there is a kind of absolute notion of sexual superiority, color, caste, class, country and religious superiority which is creating reactive violence and inhuman behavior in the name of untouchable considering the other as inferior. In this context, Right to equality and non discrimination Act of 14,15,16 Article of Human Rights also claims the rights of equality of all human beings without considering above mentioned discrimination. Mahāvira rightly said that man is Brāhmaṇa, Sudra Kṣatriya and Vaiśya not by one's birth, but by one's action.[12] He abolished the prevailing concept of considering one person as high or low on the basis of one's birth no hine no airitte[13] and he initiated Harikeshbal[14] an outcaste into his religious order and a slave laywomen named Chandanbālā was also allowed to enter into the life of nunhood and paved her to the path of liberation. He provided the right to renounce for the women race. Mahāvira made and epoch making revolution by declaring the emancipation of women and re-established the merit of action in the world of social disparity prevailing in the name of sex, caste, country etc.

Māhāvira's attitude towards womenfolk was also very liberal. He saw the innate, good of both men and women and assigned them their due place in his śāsana. In his religious order, sex was no barrier to

attaining saint-hood and ultimately the liberation. Jain women had similar duties to men in performing religious rites and rituals and were allowed to read and study the scriptures. Whereas in Vedic culture and religious society, women and Sudras were considered as inferior, debarring them from the initiation rites and wearing the sacred thread, a symbol of higher caste.[15] Moreover women and manual workers (Sudras) were not allowed to listen to sacred scriptures.[16] Tīrthaṅkara Mahāvīra gave full freedom to one and all, including women and the śudras, to observe common religious practices. He gave an equal opportunity to everybody, irrespective of his class, caste, or birth, or sex, to practice religion according to one's capacity. On the other hand, Mahāvīra liberally initiated the nuns in his order, which is double in number when compared with the monks. In his order, there were only 14,000 monks but there were 36,000 nuns.[17] In the same way, the numbers of laywomen is 3,18,000 which is more than the number of 1,59,000 laymen.[18] He propounded that the difference, which we see in the world is due to the past karmas and each soul through ones pious efforts can change ones destiny.

According to my view, the very notion of the concept of Human Rights is imperfect, very limited and really violent which violates & completely negates the rights of all the non-human beings. Certainly, the non-human bodied beings are one which I want to propagate and investigate. But I found that Jains do not usually frame the matter in terms of the rights of non-human. But Jains speak of the moral duty and responsibility of human towards all the non-human beings. Every right has a corresponding duty, without duties there can be no rights. This duty and rules are most clearly enunciated in the cardinal Jain principle of Non-violence. If this view of equanimity is translated into reality, I think that reactive violence, unnecessary violence, intellectual violence, emotional violence at large can be avoided, which in turn can protect the rights of all forms of life and not merely human rights.

In nutshell, It can be concluded that flourishing together is the secret of peace from Jain perspective. Unity in diversity is the lesson of life. So let us guide ourselves and our followers not just to tolerate but to respect other person's points of view, not just to exist but to co-exist.

Let us not prosper and progress at the cost of others, but sacrifice a part of ourselves for the good of others, because in the good of others lies our own, in the progress of others rests our own and in the joy of others abides our own.

Bibliography:

- Ācārañga Sūtra. Ed. Yuvācārya Mishrimalji 'Madhukar'. With Original Text, Hindi version, Notes, Annotation and Appendices. Beawar : Shri Āgam Prakashan Samiti. 1988.
- Ādipurāṇa of Jinsenācārya. Ed. Pannālal Jain. Varaṇasī : Bhārtīya Jñānpītha 3rd edn. 1988.
- Tattvārtha Sūtraṁ of Umaswami Ed. J.L.Jaini, Delhi : Barrister Champat Raj Jain Trust. 1956.
- Uttarādhyayana Sūtra. Ed. Muni Mishrimalji Maharaj, Trans. Muni Rajendra, Beawar : Āgam Prakāśhan Samiti. 1991.
- Manusmrti with commentary of Kulluka Bhatta. Ed. Gopal Shastri Nene. Varanasi : Chowkhamba Sanskrit Series office. 1970.
- Kalpasūtra of Bhadrabahu Svami. Trans. Kastur chand, Delhi : Motilal Banarasi Dass. 1979.

Reference:

1. Ācārāñga Sūtra, 5.5.101.
2. Ācārāñga Sūtra, 1.6.139.
3. Ācārāñga Sūtra, 1.6.140
4. Mahāpragya, Mahāvīr Kā Arthaśāstra, P. 132.
5. Ācārāñga Sūtra, 2.63.
6. Ācārāñga Sūtra, 2.118.
7. Tattvārtha Sūtra of Umasavati, verse, 5.21
8. The Jesusalem Bible, verse, 1.22-23.
9. Ācārāñga Sūtra, 1.23
10. Ācārāñga Sūtra, 1.1.5
11. Ādipurāṇa, 38.45, manuṣyajātirekaiva.
12. Uttarādhyayana Sūtra, 25.31.
13. Ācārāñga Sūtra, 2.49.
14. Uttarādhyayna Sūtra, 12.1
15. Manusmrti
16. Ibid
17. Kalpa Sūtra, 1.134,135.
18. Kalpa Sūtra, 1.136,137.

-Asstt. Prof. in Deptt. of Jainology Comparative Philosophy & Religion, Jain Vishva Bharati University, Ladnun-341306 (Raj.)

दीक्षा अर्द्धशतीवर्ष

जिनकी देह भी देशना देती है

श्रीमती अंशु सुराणा

एक ऐसा व्यक्तित्व जो एक शब्द भी न बोले तो भी जिनके आनन की आभा सब कुछ बयान कर देती है, किन्तु यदि उसी शख्सियत के गुणों का वर्णन करना हो तो सम्पूर्ण शब्द और शब्दावलियाँ भी कम पड़ जाए। गुरुदेव की शरीर की आकृति हो, उनकी वाणी हो या उनकी तत्त्व चिंतन की प्रतिभा, उनके जीवन के विभिन्न आयामों में से एक भी आयाम के पुष्पों की माला गूंथनी हो तो अत्यन्त कठिन कार्य है। मेरी बुद्धि संकीर्ण है, मंद है और गुरुदेव की प्रतिभा विशाल। मेरा चिंतन सीमित है, गुरुदेव के गुण असीमित हैं। उनकी देशना तो बहती गंगा है, उस पर पाल बाँधकर उसे सीमित दायरे में बाँधने का दुःस्साहस मैं कैसे करूँ? पर हृदय के सागर में जब भावनाओं के ज्वार-भाटे आते हैं तो हिलोरें मारती लहरों को होठों में दबाकर रखना संभव नहीं हो पाता।

> ''क्या लिखूँ कैसे लिखूँ, कुछ समझ आता नहीं,
> भाव-भक्ति से भरा मन रुक भी तो पाता नहीं।
> समभावों से सब कुछ सहते, चाहे सुख हो या दुःख,
> गुरु हीरा में शक्ति इतनी, बदल दें ये जीवन का रुख।।''

भगवन्त की देह से शब्दयात्रा प्रारम्भ करने का प्रयत्न करूँ। गुरुदेव का सामान्य कद आकाश की अनन्त ऊँचाइयों से भी ऊँचा जान पड़ता है। उनका गौरवर्ण जिनशासन की उज्ज्वलता को बढ़ा रहा है। गुरुदेव का मुखमण्डल श्रद्धा का सिंचन केन्द्र है। जब कोई भी भक्त इस मनमोहक मुद्रा के दर्शन करता है तो अन्तरात्मा में श्रद्धा का सिंचन अपने आप ही हो जाता है, स्वयं को तो कुछ प्रयास करना ही नहीं पड़ता। उनके मुखमण्डल का दर्शन तो अन्तर्दर्शन कराने वाला है। उनका चेहरा चित्त को हर लेने वाला है। चेहरे पर चारित्र की चमक के आगे सूर्य की रश्मियाँ और चाँद की चाँदनी भी फीकी नज़र आती है।

आपका उन्नत ललाट उन्नति की प्रेरणा दे रहा है। गुरुदेव के ललाट की आभा तो सूर्य की आभा से भी ज्यादा आभावान है, क्योंकि सूर्य को तो भोर होने पर आना है, संध्या होने पर विलुप्त हो जाना है, परन्तु गुरुदेव के मुखमण्डल के ऊपरी भाग को तो हमेशा प्रकाश से जगमग करते ही पाया। उनके ललाट पर पड़ी रेखाएँ उनके ज्ञान की अनुभवता, दर्शन की सहजता, चारित्र की सजगता, सरलता और सहिष्णुता का बखान अपने आप ही कर रही हैं।

गुरुदेव के नेत्र निश्छलता से ओत-प्रोत हैं। भगवन् के नेत्रों में सागर की गहराइयाँ समाहित हैं। जैसे सागर में अथाह जलराशि समाई हुई है, वैसे ही नयनों में करुणा की जलराशि का अथाह भण्डार है। आपकी गहरी आँखे, अन्तर्मानस की गहराइयों में झांकने को बाध्य करती हैं। आपकी भौंहे कहती हैं बात-बेबात भौंहे मत चढ़ा, क्रोध मत कर। उनके नेत्रों में क्षमा है, ममता है जिसे देखकर उनके सामने अपनी गलतियों का प्रायश्चित्त करने में न भय लगता है, न ही लज्जा आती है। इस गौरवर्ण चेहरे पर समुन्नत नासिका उनकी लक्ष्य-प्राप्ति के प्रति एकाग्रता को बता रही है। इस मोक्षपथ के राही के ध्येय का दर्शन करवा रही है।

गुरुदेव के कान उनकी कार्यशैली में सजगता को बताते हैं। वे हमें संदेश दे रहे हैं। काम की, उपयोगी बात ही सुनो, निरर्थक बातें निंदा, चुगली, आलोचना आदि की बातें सुनो ही मत। उनके कानों से झांकती केश राशि एक ओर जहाँ विचारों, अनुभवों, सुदीर्घ दीक्षा पर्याय को दर्शाती है वहीं दूसरी ओर आचार्य की आठ सम्पदाओं में से शरीर सम्पदा के उत्तम लक्षणों का भी दर्शन कराती है।

चन्द्रमा से भी ज्यादा सौम्य चेहरे पर उपस्थित उनकी मुखवस्त्रिका चार चाँद लगा देती है। उनके चेहरे को देखकर मूक भी गुणकथन के लिए मुखरित हो उठता है। वाणी का तो कहना ही क्या? आपकी वाणी सुनने बैठा हुआ प्यासा व्यक्ति भी पानी को भूलकर वाणी का पान करने में मग्न हो जाता है। आपकी वाणी की विशेषता है कि एक बार सुनने के बाद बार-बार सुनने की तृष्णा बढ़ती ही जाती है। आपश्री कम शब्दों में काम की बात बोल देते हैं, शब्द चाहे कम हों पर सार अधिक होता है। आपकी वाणी वीतरागता के उच्च क्षितिज के नजदीक ले जाने वाली है।

गुरुदेव का कंठ (गला) नीलकंठ (महादेव) के समान है। जैसे वैदिक पौराणिक कथाओं में वर्णन आता है कि शिव ने उस गरल (ज़हर) को कंठ में धारण कर लिया, गुरुदेव भी शिष्य के दोषों को मुख से बाहर उगलते नहीं, कंठ में धारण कर लेते हैं। जिससे भूल हो गई है उसकी इज्जत बाहर जाने न पाए, भीतर में दोष रह न पाएँ, ऐसा समाधान गुरु करते हैं।

गुरुदेव की हथेलियाँ लघुता में गुरुता को धारण किए हुए हैं। भक्तों और संतों के प्रति हृदय में जो वात्सल्य है उसकी प्रतिक्रिया इस हथेली में दिखाई पड़ती है। जब गुरुदेव असीम वात्सल्य से अपना हाथ भक्त के सिर पर फेरते हैं तो उन मुक्त हस्तों से वात्सल्य का झरना फूटता हुआ जान पड़ता है। आपका वात्सल्य भरा हाथ तो हर एक भाग्य में नहीं, पर वात्सल्य भरी नज़रों से कोई वंचित नहीं रहता। कभी-कभी तो आपके हाथ में फिरती

माला से भी ईर्ष्या होती है, क्योंकि उस माला के मनकों पर तो आपका हाथ न जाने कितनी बार फिर जाता है, उसे आपके सामीप्य का कितना असीम आनन्द प्राप्त होता होगा। हमें तो शायद इस मुक्तक से ही संतोष करना पड़ेगा कि-

"मेहर नज़र हो गुरुवर की और भला हम क्या चाहें,
जब भी देखें, जहाँ भी देखें, तेरे ही दर्शन पाएँ।।

नमस्कार मंत्र के तीसरे पद पर आसीन होने के बाद भी उनके हस्त हर क्षण कार्य में संलग्न ही रहते हैं। जिसने इस हाथ को असीम श्रद्धा के साथ पकड़ लिया है, मुक्तिपुरी उससे अधिक दूर हो ही नहीं सकती।

उनका हृदय नाविक की तरह है। जैसे नाविक अपनी नाव में बैठने वाले को नदी पार करवा देता है, यात्री अपनी जिम्मेदारी उस नाविक को सौंपकर अथाह जलराशि पार करते हुए भी निश्चिन्त रहता है, ऐसे ही अनुकम्पा से परिपूर्ण उनके हृदय में जो शिष्य बस जाता है या उन्होंने जिसको शिष्य रूप में स्वीकार कर लिया है, वह शिष्य निश्चिन्त हो जाता है कि गुरुदेव उसे भवसागर से पार लगा देंगे।

पेट जिसमें बात चली जाती है ठेठ। कई गोपनीय, अकथनीय, रहस्य आपके पेट में ऐसे गहरे चले जाते हैं कि कभी जबान पर आते ही नहीं। आगमकारों ने कहा प्रायश्चित्त देने के अधिकारी में गुण यह भी होना चाहिए कि "हिया में धारण करे।" पेट की बात आई ही है तो उनके आहार की बात भी ध्यान में आई है। आपका आहार भी इतना कि स्वस्थ व्यक्ति बोले-"खाया है या चखा है।" परम श्रद्धेय, तन-मन से सेवाभावी महान् अध्यवसायी पूज्य महेन्द्रमुनि जी म.सा. भी जब आपको निवेदन करते हैं कि इतना कम अरोगे तो काम कैसे चलेगा? आपश्री उत्तर देते हैं- "कम भाड़े में ज्यादा काम निकालना हैं।"

गुरुदेव के पाँव-जो विचरण करे गाँव-गाँव। आपके पाँव संदेश दे रहे हैं-"पत्थर और बाधाओं से मत घबराओ, पावन मंजिल पाकर ही रुको।" शहर, गाँव, ढाणी एवं नगरों को पावन करते आपके चरणकमल वहाँ की भव्य आत्माओं को संसार से पार पहुँचने के लिए प्रगति पथ पर चलने के लिए चारित्र का संबल प्रदान करते हैं। गुरुदेव के चरण वैद्य के समान हैं। जैसे वैद्य तन के रोगों को दूर करने में सक्षम होता है, उसी प्रकार गुरुदेव की चरण-रज मात्र ही मन के रोगों को भगाने में सक्षम है। गुरुदेव के चरणस्पर्श मात्र से मन का विकार और व्याधियाँ समाप्त होने लगती हैं। गुरुदेव की चरण-रज जिस मस्तक पर चढ़ जाती है, उसे अपनी कर्म-रज साफ करने का उपाय सामने नज़र आने लग जाता है।

गुरुदेव की आह्लादकारी आकृति का वर्णन करने की योग्यता हममें कहाँ? वे सूर्य बनकर जीवन को विकास की ओर ले जाने वाले हैं और चन्द्र बनकर पोषण करने वाले हैं।

उन्हें सूर्य और चन्द्रमा की उपमा से उपमित करने में भी संशय नज़र आता है, क्योंकि सूर्य को भी कभी ग्रहण लगता है और उसे प्रतिदिन अस्ताचल की ओर जाना पड़ता है, चन्द्रमा में भी दाग हैं, किन्तु गुरुदेव तो अपने गुणों से प्रतिपल प्रतिक्षण देदीप्यमान, प्रकाशवान, उज्ज्वल, बेदाग हैं। उनका मुखमण्डल पुष्प के समान, वाणी की ओजस्विता पुष्प की सौरभ के समान है, किन्तु पुष्प से तुलना करना भी उचित नहीं होता, क्योंकि पुष्प एक नियत काल मर्यादा के पश्चात् मुरझा जाता है, किन्तु गुरुदेव तो कठिन परीषह में भी मुस्कुराते रहते हैं। उनकी मुखमुद्रा खिली-खिली ही रहती है। पुष्प की सौरभ भी पुष्प के सड़ने-गलने के बाद दुर्गन्ध में परिवर्तित हो जाती है, पर भगवन्त की वाणी के सौरभ से तो चहुँदिशा महकती ही रहती है।

मेरी लेखनी में इतनी शक्ति नहीं, मेरी बुद्धि में इतनी युक्ति नहीं कि उन उपमाओं को ढूँढ पाऊँ, खोज पाऊँ, जो मेरे गुरुवर के तुल्य हों, इसलिए इस लेखनी को यहीं विराम।

-एस-149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302001 (राज.)

अभिमत

जिनवाणी है उसका नाम

डॉ. अंजना बैराठी

प्रगति की राह दिखाती, अंधकार में ज्योति जगाती।
घर-घर में जागृति लाती, जिनवाणी है उसका नाम.......।।

परम्पराओं का संरक्षण करती, कुरीतियों को जड़ से मिटाती।
स्वार्थ से परमार्थ की ओर बढ़ाती, जिनवाणी है उसका नाम.......।।

आत्म-ज्ञान का बिगुल बजाती, समता में रहना सिखाती।
बच्चे, नारी, युवा, वृद्ध, सबको मन भाती, जिनवाणी है उसका नाम...।।

संस्कारों को नित संवारती, नैतिकता से सदा जोड़ती,
खुद से खुद का ध्यान कराती, जिनवाणी है उसका नाम.......।।

मैत्री स्नेह की गंगा बहाती, सामाजिक सामरस्य बढ़ाती,
रचनात्मकता को प्रोत्साहन देती, जिनवाणी है उसका नाम.......।।

जैनियों की शान बढ़ाती, समाज में नव-चेतना लाती,
जन-जन को आपस में जोड़ती, जिनवाणी है उसका नाम.......।।

-बी-133, आनन्दपुरी, मोती डूँगरी रोड़, जयपुर-302004 (राज.)

दीक्षा अर्द्धशतीवर्ष

तरुवर से श्रेष्ठ गुरुवर

श्रीमती निधि अर्पित लोढ़ा

महान् व्यक्तित्व को शब्दों में बांधना, उसे किसी उपमा से उपमित करना सहज और सरल नहीं होता। उसमें भी अपने जीवन के आसन्न उपकारी गुरु की महिमा का कथन अत्यधिक कठिन है।

आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का जीवन पत्र के समान समताशील हैं, कली के समान विकसित हैं, पुष्प के समान सुरभित हैं और फल के समान मधुर हैं। वृक्षों में 'कल्पवृक्ष' कल्पनाओं को साकार करता है, चिंता का हरण करता है उसी प्रकार गुरुवर हमारी धार्मिक कल्पनाओं को साकार करते हैं, दुःख, शोक एवं चिन्ता का हरण करते हैं। हमारे गुरुवर वटवृक्ष की जड़ों की गहराई से भी अधिक गहरी आगम वाणी, वीतराग वाणी में श्रद्धा, आस्था एवं विश्वास लिए हुए है। जिस प्रकार 'पीपल' वृक्ष की हवा दवा का कार्य करती है उसी प्रकार आचार्य भगवन्त की वाणी भवरोग समाप्त करने में समर्थ और सक्षम है।

'अशोक' वृक्ष जिस तरह घना होता है उसी तरह आपका ज्ञान भी घना है। 'नीम' का वृक्ष जैसे रोगहरण में और औषधि में उपयोगी होता है उसी प्रकार आपके द्वारा दिए गए व्रत, नियम, चारित्र, जन्म-मरण के रोग को मिटाने में अचूक रामबाण हैं। 'नारियल' वृक्ष का फल जैसे शक्ति वर्धक होता है उसी प्रकार आपके द्वारा दिए गए विचार आत्मा में शक्ति का संचार करते हैं।

'ताड़' का वृक्ष जैसे अपनी दीर्घता के लिए प्रसिद्ध है वैसे ही आपके कार्य और विचार ऊँचाई लिए हुए हैं। 'वंश' वृक्ष जैसे सीधा होता है वैसे ही आपका व्यवहार भी सीधा और सरल है। 'चंदन' के पेड़ के समान आपकी करुणा चारों दिशाओं में सौरभ फैला रही है, जिसके कारण कई भ्रमररूपी भक्तगण आपकी चरण शरण में उस करुणा को पाने के लिए दौड़े चले आते हैं।

'शीशम' वृक्ष सुदृढ़ होता है, उसी प्रकार आप नियम एवं क्रिया-पालन में सुदृढ़ हैं। श्वेत 'आक' जैसे भाग्य का संदेश देता है वैसे ही आपकी शरण हमारे सौभाग्य की सूचक है। 'आम' वृक्ष की लकड़ी घर में शुभता की सूचक है वैसे ही आपके द्वारा प्रदत्त व्रत नियम हमारे घर के लिए शुभ होते हैं। 'बबूल' वृक्ष जैसे घर की एवं खेत की सुरक्षा करता है और

मुख को मल से रहित करता है उसी प्रकार आप स्वयं को नववाड़ से सुरक्षित करते हैं और सभी को कर्ममल से रहित होने का मार्ग दिखलाते हैं। 'आम' वृक्ष की भांति आप खट्टे-मीठे फलरूपी अनुभवों में सम रहते हैं। आप शिष्यों एवं भक्तों की दुर्गुणों से रक्षा करने वाले हैं।

तरुवर जैसे स्वयं की वस्तु का स्वयं उपभोग न कर दूसरों के लिए लुटा देता है उसी प्रकार आचार्यदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा. अपनी विशेषताओं से तरुवर से भी श्रेष्ठ बनकर जिनशासन रूपी उद्यान को शोभित कर रहे हैं। यह जिनशासन रूपी उद्यान, रत्नसंघ रूपी बगिया निरन्तर ऐसे आचार्य भगवन्तों से महकती रहे। गुरु की अर्द्धशती पर हम सभी श्रद्धालु भक्तगण यही शुभ भावनाएँ भाते हैं।

-ए-8, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302001 (राज.)

आछी लागी रे थांसु प्रीतड़ी

श्रीमती मंजु प्रसन्न भण्डारी

(तर्जः- मोरिया आछो बोलियो रे ढ़लती रात में)

गुरुवर, आछी लागी रे थांसु प्रीतड़ी-2
ओ म्हारा हिवड़ा में-2, जागी जगमग ज्योत गुरुवर,
आछी लागी रे थांसु प्रीतड़ी।।
गुरुवर, थांरा दर्शन सु सुख नीपजे-2
ओ मिटे भव-भव रा-2, चक्कर ओ गुरुवर,
आछी लागी रे थांसु प्रीतड़ी।।
गुरुवर, लगणी लागी है, थांरा नाम री-2
ओ 'हीरा-मान' गुरु-2, मनडा मांय बसे है गुरुवर
आछी लागी रे थांसु प्रीतड़ी।।
गुरुवर, 'मंजु-प्रसन्न' री घणी-घणी भावना-2
थे जीओ हजारों साल, 'हीरा-मान' गुरुवर
आछी लागी रे थांसु प्रीतड़ी।।
गुरुवर, थांणे चरणां री सेवा चाहती-2
मैं तो मांगु-मांगु, थांणी कृपा गुरुवर
बरसाओ, कृपा री धार रे-2

-कार्याध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, बैंगलोर

दीक्षा अर्द्धशतीवर्ष

गुरुकृपा : श्रद्धापूर्वक समर्पण

श्रीमती भावना जैन

आज से लगभग दो वर्ष पूर्व मैं गुरुकृपा को नहीं समझती थी। जब श्रावक-श्राविकाओं से गुरुकृपा शब्द सुनती तो मन जानने को उत्सुक होता था कि यह गुरुकृपा होती क्या है?

आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के जयपुर चार्तुमास में मुझे भी गुरुकृपा को जानने एवं समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

गुरुकृपा से ही मेरा मासक्षपण निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। जहाँ मैं 12 वन्दना ठीक से नहीं कर पाती थी, वहीं मैं 108 वन्दना इतनी आसानी से कर जाती हूँ कि मुझे कुछ पता ही नहीं चलता। वास्तव में गुरुकृपा को महसूस किया जा सकता है, व्यक्त नहीं।

गुरु-कृपा श्रद्धापूर्वक समर्पण का ही नाम है। श्रद्धापूर्वक समर्पण के पश्चात् उनकी छवि को निहारने में जो आनन्द आता है, उसको सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। गुरु की जो नज़रें मिलती हैं उनसे जो रसानुभूति होती है, उसे व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

कुछ लोग गुलाब के पुष्प को प्यार करते हैं तो कुछ लोग गुलाब के पुष्प से प्रेम करते है, दोनों में बड़ा अन्तर है। जो गुलाब को प्यार करते हैं वे उसे टहनी से तोड़ लेते हैं, लेकिन जो गुलाब से प्रेम करते हैं वे उसे सींचते है और सैकड़ों गुलाब खिला देते हैं, बगीचा महकने लगता है। ठीक इसी प्रकार गुरुदेव अपने भक्तों को, अपनी नज़रों से, अपनी वाणी से इस प्रकार सींचते हैं कि वे स्वतः ही जागृत होने लगते हैं। गुरु-कृपा को प्राप्त करते हैं, लक्ष्य की ओर अग्रसर होने लगते हैं, निज का स्वरूप समझने लगते हैं।

चातुर्मास में श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. ने प्रवचन के दौरान भक्तामर की जो स्तुति की है, भक्तामर का अर्थ स्पष्ट किया है, और गुरु-भक्ति से सबको भाव-विभोर किया है उस रसानुभूति को व्यक्त करना मेरे लिए मुश्किल ही नहीं, असम्भव भी है।

श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा. ने प्रवचन में फरमाया- माँ क्यों जरूरी है? संसार में आना है तो माँ जरूरी है। गुरु क्यों जरूरी है? मोक्ष में जाना है तो गुरु जरूरी है।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने फरमाया- निज विवेक का अनादर ही सबसे बड़ा पाप है अर्थात् जाने हुए का उपयोग न करना, आचरण में न लाना ही सबसे

बड़ा पाप है। देवभक्ति, गुरुभक्ति, स्वाध्याय, संवर तप व दान, ये 6 कार्य प्रत्येक श्रावक-श्राविका को करने चाहिए।

श्रद्धेय मधुरव्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी म.सा. का भी मेरे जीवन पर अनन्त उपकार है। उन्होंने ही मुझे ऐसी दृष्टि प्रदान की कि मैं गुरु दर्शन कर पायी।

वास्तव में गुरु बिना जीवन अपूर्ण है। गुरु के महत्त्व को जानें, समझें और श्रद्धा से गुरु को नमन करें। गुरु कृपा से ही हम सम्यग्दृष्टि बन सकते हैं, नरक-निगोद से बच सकते हैं। जिन्होंने अभी तक गुरु नहीं बनाया है, वे गुरु बनाने का कष्ट करें। गुरु-कृपा को प्राप्त करें।

-द्वितीय 284, ए.जी. कॉलोनी, बजाजनगर, जयपुर-302001 (राज.)

संस्मरण

सम्प्रदायवाद से दूर थे आचार्य श्री हस्ती

प्रो. चाँदमल कर्णावट

संभवतः पाली नगर में विराज रहे थे आचार्य श्री हस्ती। दर्शनार्थियों की भीड़ लगी रहती। आचार्यप्रवर की समतामयी सौम्य हँसमुख मुखमुद्रा का दर्शन कर दर्शनार्थी असीम आनन्द का अनुभव करते थे।

मैं जोधपुर निवासी श्री पुखराज जी मुणोत को लेकर आचार्यश्री के दर्शनार्थ पहुँचा। श्री पुखराज जी मुणोत स्व. मगनमुनि जी के सुपुत्र हैं। श्री मगनमुनि जी पूज्य आचार्य श्री हस्ती के सान्निध्य में दीक्षित थे। हम आचार्य श्री के पावन दर्शन पाकर अत्यन्त प्रमुदित थे। आचार्यप्रवर से संक्षिप्त वार्तालाप हुआ-

आचार्यश्री- भाई! स्वाध्याय करते हो?

मुणोत जी- करता हूँ गुरुवर, पर अन्यत्र कहीं।

आचार्यप्रवर- कहीं भी करो। स्वाध्याय करते रहना।

आचार्यश्री कह सकते थे तुम तो मगनमुनि जी के पुत्र हो। मगनमुनि जी ने इधर दीक्षा ली थी। इधर ही स्वाध्याय किया करो। परन्तु आचार्यश्री के मन में सम्प्रदायवाद की बात ही नहीं थी, फिर उसकी अभिव्यक्ति होती कैसे? सम्प्रदायवाद का विचार भी उनके मन में नहीं था। वे अपने सम्प्रदाय और सम्प्रदाय के श्रावकों के मोह से ऊपर उठ चुके थे।

पूज्य आचार्य श्री हस्ती की इस असाम्प्रदायिकता की वृत्ति और उदार आशयता के कारण ही सभी सम्प्रदायों के उपासकों एवं जैनेतर भक्तों के मस्तक उनके चरणों में श्रद्धापूर्वक झुकते थे।

धन्य हैं ऐसे महान् आचार्य को जिनके गुणगान कर हम भी अपना जीवन पवित्र बनाते हैं।

-प्लॉट 35, अहिंसापुरी, फतहपुरा, उदयपुर-313001 (राज.)

श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु मान

गुलाबीनगरी-जयपुर में

जैन भागवती दीक्षा-महोत्सव

आदरणीय धर्मप्रेमी बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

आपको सूचित करते हुए परम प्रसन्नता है कि आगमज्ञ,प्रवचन-प्रभाकर, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 **श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** के मुखारविन्द से तथा आत्मार्थी शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी, परमश्रद्धेय उपाध्याय प्रवर पं. रत्न **श्री मानचन्द्र जी म.सा.** की मंगल मनीषा से एवं साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती **श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती **श्री तेजकंवर जी म.सा.** के शुभाशीर्वाद से गुलाबी नगरी-जयपुर के मानसरोवर क्षेत्र में

मुमुक्षु बहिन सुश्री आशा जी छल्लाणी

की भागवती दीक्षा

वि.सं. 2069 पौष शुक्ला पूर्णिमा, रविवार, दिनांक 27 जनवरी, 2013 को

अग्रांकित कार्यक्रमानुसार सम्पन्न होगी।

दीक्षा महोत्सव पर परमाराध्य पूज्य गुरुदेव आचार्य **श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**, महान् अध्यवसायी श्रद्धेय **श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.**, सेवाभावी श्रद्धेय **श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा.**, तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय **श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.** आदि ठाणा एवं विदुषी महासती **श्री सुशीलाकंवर जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती **श्री सरलेशप्रभा जी म.सा.**, सेवाभावी **श्री विमलेशप्रभा जी म.सा.** आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में आयोज्य कार्यक्रम में व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पित कर दीक्षा-महोत्सव की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

विनीत

मोफतराज मुणोत	ज्ञानेन्द्र बाफना	पी.शिखरमल सुराणा	आनंद चौपड़ा	अशोक सेठ
संयोजक संरक्षक मण्डल	अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री	क्षेत्रीय प्रधान-जयपुर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

मुमुक्षु बहिन

सुश्री आशा छल्लाणी : परिचय

जन्मतिथि– 27 अप्रेल 1988

जन्मस्थान– हीरादेसर, भोपालगढ़, जिला–जोधपुर (राज.)

व्यावहारिक शिक्षा– बी.ए.

पारिवारिक परिचय

दादा–दादी : श्री घीसुलाल जी–श्रीमती कमलाबाई जी छल्लाणी

पिता–माता : श्री प्रकाशमल जी–श्रीमती विमलादेवी जी छल्लाणी

भाई–भाभी : श्री सुदर्शन जी–संगीतादेवी जी छल्लाणी
श्री अरिहन्त जी–प्रियंका जी छल्लाणी
श्री नवीन जी, श्री रौनक जी छल्लाणी

बहन–बहनोई : श्रीमती निशा जी–सुनील जी बांठिया
सुश्री कविता, सुनीता, छवि, अदिति, रानी

नाना–नानी : स्व. श्री चम्पालाल जी–श्रीमती मांगीबाई जी लोढ़ा

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, आवश्यक सूत्र, वीरस्तुति, तत्त्वार्थ सूत्र।

आगम वाचनी : अन्तगडदसासूत्र, उपासकदशांगसूत्र, अणुत्तरोववाई, प्रश्नव्याकरण, विपाकसूत्र,उववाइय, रायप्पसेणीय, जीवाजीवाभिगम, पन्नवणा, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, निरयावलिया, कप्पवडंसिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वण्हिदसा, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नन्दीसूत्र, व्यवहार सूत्र।

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, सम्यक्त्व के 67 बोल, कर्मप्रकृति, नवतत्त्व, जीवधड़ा, लघुदण्डक, जीवपज्जवा, अजीवपज्जवा, कर्मग्रंथ भाग-2-3, वैमानिक का थोकड़ा, गुणस्थानस्वरूप आदि अनेक थोकड़े कण्ठस्थ ।

स्तोत्र : भक्तामर, कल्याणमंदिर, महावीराष्टक, रत्नाकर पच्चीसी।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, प्राकृत एवं संस्कृत।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड की प्रथम से सप्तम कक्षा उत्तीर्ण।

पर्युषण सेवा : तीन वर्ष

वैराग्यावधि : तीन वर्ष तीन माह

दीक्षा-महोत्सव-कार्यक्रम

वि.सं. 2069 पौष शुक्ला द्वितीय चतुर्दशी, शनिवार, 26 जनवरी, 2013

शोभा-यात्रा : प्रातः 9.15 बजे वीर परिवार के अस्थायी निवास स्थान 47/169, मोती पथ, किरण पथ, मानसरोवर से प्रस्थान कर प्रमुख मार्गों से होती हुई परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि प्रभृति संत-सतीवृन्द की सेवा में महावीर भवन, किरण पथ, मानसरोवर पहुँचकर मांगलिक श्रवण करेगी।

अभिनन्दन-समारोह : वीर परिवार एवं दीक्षार्थियों का

अपराह्न 1.30 बजे

स्थान- सुबोध लॉ कॉलेज केम्पस, मेट्रोमास आरोग्य हॉस्पिटल के पीछे, वीर तेजाजी रोड़, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

वि.सं. 2069 पौष शुक्ला पूर्णिमा, रविवार, 27 जनवरी, 2013

अभिनिष्क्रमण यात्रा : प्रातः 8.15 बजे महावीर भवन, किरण पथ, मानसरोवर से प्रस्थान कर दीक्षा-स्थल सुबोध लॉ कॉलेज कैम्पस, शिप्रा पथ, मानसरोवर पर पहुँचेगी, जहाँ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के पावन सान्निध्य में दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

दीक्षा पाठ : प्रातः 10.15 बजे लगभग

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से।

दीक्षा-स्थल

सुबोध लॉ कॉलेज केम्पस, मेट्रोमास आरोग्य हॉस्पिटल के पीछे, वीर तेजाजी रोड़, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर

दीक्षा-समिति

श्री कांतिलाल जी चौधरी, धुलिया

फोन : 02562-233994/234309,98231-72765

श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन, कोटा,

फोन : 0744-2381019, 2382832, 94141-77139

वीर परिवार, सम्पर्क-सूत्र

श्री घीसूलालजी प्रकाशमल जी छल्लाणी

111-संजीवरायन कोईल स्ट्रीट, एम.सी.रोड़, चेन्नई-600021 (तमिलनाडू)

अस्थाई निवास : 47/169, मोती पथ, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर

सम्पर्क सूत्र : श्री प्रकाश जी छल्लाणी-97908-30700/099404-37640

श्री दिनेश कुमार जी छल्लाणी-077373-14340

सम्पर्क सूत्र :

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) 2641445/2636763

श्री मानेन्द्र ओस्तवाल 94141-32521

अतिरिक्त महामंत्री-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

श्री विनयचन्द डागा-जयपुर 2620661/93145-06509

श्री नरेन्द्रकुमार जैन-मानसरोवर, जयपुर 98293-00138

श्री राजेन्द्र जैन 'राजा', जयपुर 94142-24209

निवेदक

वीर परिवार

घीसुलाल प्रकाशमल छल्लाणी,आसावरी (राज.), चेन्नई (तमिलनाडू)

आयोजक

प्रकाशचन्द कोठारी — अध्यक्ष
विनयचन्द डागा — मंत्री

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर

देवेन्द्रकुमार सामोता — अध्यक्ष
पारसमल दरड़ा — मंत्री

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, मानसरोवर, जयपुर

नरेन्द्रकुमार जैन — अध्यक्ष
सुधीरकुमार जैन — मंत्री

श्री पद्मावती पोरवाल जैन समिति (जयपुर), मानसरोवर, जयपुर

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

श्रद्धास्पद संयमी जीवन

श्री आर. नरेन्द्र कांकरिया

दक्षिण भारत के प्रवासकाल में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के निकट सान्निध्य में धर्मलाभ का अवसर मिला। उस समय मैंने आपके जीवन में जो विशेषताएँ देखीं, उनमें से कुछ को संकेत रूप में अभिव्यक्त कर रहा हूँ।

- **प्रदर्शन-आडम्बर के परिहर्त्ता-** आचार्यप्रवर आड़म्बर-प्रदर्शन को संघ-समाज के लिए अभिशाप समझते हैं। वेपेरी, चेन्नई के चातुर्मास में इस विषय में आपने प्रभावी शैली में अनेक बार संघ-समाज को जागृत करने का प्रयास किया। इस विषय पर प्रवचन में फरमाया- पूर्व में नगर-सेठ भी जीमन-वार में पाँच-सात द्रव्य से अधिक नहीं बनवाते थे और आज नाम एवं प्रशंसा के लिए आपने कैसी स्थिति बना दी है? आप समझदार हैं, फिर क्यों दिखावे, प्रदर्शन, नाम की भूख में फिजूल-खर्ची कर रहे हैं। अब भी संभल जाएं। आपकी प्रभावी प्रेरणा से महा-संघ, चेन्नई के अन्तर्गत समाज-सुधार के नियम भी बने। सच्चे साधक के मन में जिस तरह संघ-समाज के लिए पीड़ा होती है, उसी तरह आपके मन में हमेशा पीड़ा रहती है।
- **दृढ़ आत्म-बली-** पूज्य आचार्यप्रवर दृढ़ आत्मबली हैं। दस वर्षों पूर्व आपने राजस्थान से आगे बढ़ते हुए दक्षिण की ओर विहार किया, स्वास्थ्य में प्रतिकूलताएँ रहीं। चेन्नई चातुर्मास के पश्चात् कुछ लोग सोचते रहे कि आपका चेन्नई की सीमा को पुनः पार करना अत्यन्त दुष्कर है। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने हर बार श्रावकों के सामने अपनी भावना रखते हुए फरमाया- कि मैं थोड़ा-थोड़ा विहार करते हुए चेन्नई से बाहर जाने का प्रयास करूँगा। आचार्यश्री की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री सरलेश प्रभा जी म.सा. से जब मैंने पूछा- क्या चेन्नई में आचार्यप्रवर के चातुर्मास की सम्भावना है? महासतीजी ने फरमाया- आचार्यश्री ने कभी भी एक शहर में लगातार दो चातुर्मास नहीं किए हैं। अतः चेन्नई में चातुर्मास होने की संभावना मुश्किल है, आचार्य श्री चेन्नई की सीमा को पार करने का अवश्य प्रयास करेंगे। आचार्य श्री ने अपनी साधना से अपने दोनों चरणों को आत्म-बल एवं मनोबल का रूप देकर चेन्नई से विहार करते हुए सन् 2006 का चातुर्मास बंगारपेट (कर्नाटक) में किया। आचार्यश्री ने एक मात्र आत्मबल एवं मनोबल से तमिलनाडू, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि राज्यों को पार करते हुए गुजरात तथा राजस्थान की ओर कदम बढ़ाए।

कुशल पारखी– आपके दक्षिण विचरण एवं चेन्नई चातुर्मास में मैंने अनुभव किया कि आपने कुशल पारखी की तरह जिन-जिन कार्यकर्त्ताओं को जिन-जिन क्षेत्रों में रुचिशील देखा, उनको उन-उन क्षेत्रों में जोड़ते हुए उनकी जीवन-शैली को सुधारा तथा वे ऐसे व्यक्ति सेवा, ज्ञान, ध्यान, आराधना तप आदि से अपने को संपृक्त करते गए।

समभाव के साधक– स्वास्थ्य में अनुकूलता हो या प्रतिकूलता, संघ में सम-विषम कैसी भी परिस्थिति हो, आपने अपने जीवन की, साधना की दैनिक चर्या में कभी बदलाव नहीं किया। अनुशासन- पूर्वक हर परिस्थिति में समभाव रखा और रखते आ रहे हैं।

प्रभावी प्रवचनकार– पूज्य आचार्यप्रवर तात्त्विक बात को रुचिकर एवं सरल भाषा में फरमाते हैं, जिसे जन-साधारण भी समझ सकता है। आपकी प्रवचन शैली की विशेष एवं मुख्य बात यह है कि आप जिस विषय पर फरमाते हैं उस में विषयान्तर नहीं करते हुए सारगर्भित प्रवचन फरमाते हैं, विषय जहाँ से प्रारम्भ करते हैं, उसी विषय पर समाप्त करते हैं, जिसका प्रभावी असर श्रोताओं पर होता हैं।

'बहता-पानी-निर्मला'– आप इस कहावत को हमेशा चरितार्थ करते हुए विचरण कर रहे हैं। आपको कभी व्यक्ति विशेष या क्षेत्र का मोह नहीं रहा है। चेन्नई में चातुर्मास के पश्चात् आपके स्वास्थ्य में प्रतिकूलताएँ रहीं, विहार की स्थिति नहीं बन पाने के कारण श्रद्धालु श्रावकों ने सन् 2006 के चातुर्मास के लिए विनतियाँ आपके समक्ष कई बार रखी। किन्तु आपने साध्वाचार के अनुरूप विचरण का पथ अपनाया।

-'रिषभ कृपा' नं. 79, अडिअप्पानायकन स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079(तमि.)

जार्ज बर्नार्ड शा

-आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.

जार्ज बर्नार्ड शा महान् प्रतिभाशाली, बड़ी ही तीक्ष्ण बुद्धि वाले, गहन चिन्तक थे। जीवन और जगत् के विषय में उनकी दृष्टि बड़ी गहन थी। संसार के बिखरे और उलझे हुए झमेले में से सत्य और तथ्य को खोज निकालने में वे प्रवीण थे। इसीलिए उनके विचार जानने के लिए लोग बहुत उत्सुक रहा करते थे। कोई भी विषय हो, उस बारे में बर्नार्ड शा क्या कहते हैं, यह सभी जिज्ञासु जानना चाहते थे। एक दिन किसी जिज्ञासु ने उनसे पूछा-'आप पुनर्जन्म को मानते हैं?'

'हाँ।' यदि आपको पुनर्जन्म में विश्वास है तो पहले तो यह बताने की कृपा कीजिए कि आगामी जन्म में आप किस धर्म में उत्पन्न होना चाहेंगे?'

'निश्चित रूप से जैन धर्म में।' 'कारण?' 'इसलिए, कि जैन धर्म प्रत्येक मनुष्य को परमात्मा बन सकने की संभावना प्रदान करता है। इससे बड़ी कोई बात, किसी धर्म में हो नहीं सकती।'

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

तुमको लाखों प्रणाम

श्री उम्मेदमल जैन

पूज्यवर हीराचन्द जी तुमको लाखों प्रणाम।
पूज्य हस्ती के पट्टधर, तुमको लाखों प्रणाम।।
चेतबदी आठम दिन आया, पीपाड़ शहर में आनन्द छाया।
जन्मे हीरालाल, तुमको लाखों प्रणाम।।
मोतीलाल जी लाल दुलारे, माँ मोहिनी के नयन सितारे।
गांधी कुल उजियारे, तुमको लाखों प्रणाम।।
प्रिय बहन जब स्वर्ग सिधाई, मन में आप विरक्ति छाई।
मोह ममता दी त्याग, तुमको लाखों प्रणाम।।
गुरु हस्ती पीपाड़ पधारे, गुरु हीरा ने महाव्रत धारे।
काती सुदी छट्‌ठम दिन आया, संयम हीरा ने अपनाया।
गुरु हस्ती मन भाया, तुमको लाखों प्रणाम।।
भर यौवन के माय, तुमको लाखों प्रणाम।।
संसारी सुख वैभव छोड़ा, शिव रमणी से नाता जोड़ा।
जैन धर्म अपनाया, तुमको लाखों प्रणाम।।
हस्ती ने हीरा चमकाया, शास्त्र ज्ञान है गहरा पाया।
बहु भाषा का ज्ञान, तुमको लाखों प्रणाम।
अन्त समय एक पत्र लिखाया, हीरा को आचार्य बनाया।
बने संघ सिरताज, तुमको लाखों प्रणाम।
पूज्य हस्ती का पाट दिपाया, व्यसन-मुक्ति अभियान चलाया।
कीना धर्म प्रचार, तुमको लाखों प्रणाम।।
दीक्षा दिवस आपका आया, धर्म-ध्यान का ठाट लगाया।
जन-जन के मन भाया, तुमको लाखों प्रणाम।।
अर्ध शताब्दी दिवस मनाया, तेला सिद्धि तप अपनाया।
महावीर नगर मंझार, तुमको लाखों प्रणाम।।
उम्मेदमल चरणों का चाकर, नैया पार करो प्रभु आकर।
गुरु ही तारण हारे, तुमको लाखों प्रणाम।।

-चौथ का बरवाड़ा, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

गीत

शिक्षा देती जिनवाणी

श्री मगनचन्द जैन

मुक्ति-मार्ग के चार सूत्र हैं, शिक्षा देती जिनवाणी।
सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चारित्र, सम्यक् तप।।

राग-द्वेष दो बीज भ्रमण के समझाती है जिनवाणी।
कषाय चतुष्क का चक्र बुरा है, ध्यान दिलाती जिनवाणी।
अपना जीवन स्वयं संवारो, बात बताती जिनवाणी।
मुक्ति-मार्ग.....।।

दान, शील, तप, भाव से मिलती सिद्धि कहती है जिनवाणी।
देव, गुरु, धर्म पर श्रद्धा, करवाती है जिनवाणी।
समकित मिले उसे जीवन में, श्रवण करे जो जिनवाणी।
मुक्ति-मार्ग.....।।

सामायिक स्वाध्याय सहित कर, ज्ञान बढ़ावे जिनवाणी।
तप से कर्म-निर्जरा होगी, इंगित करती जिनवाणी।
भेद-ज्ञान का अर्थ समझ ले, चिन्तन करले जिनवाणी।
मुक्ति-मार्ग.....।।

पाप अठारह मन से त्यागो, सीख सिखाती जिनवाणी।
श्रावक-व्रत धारो जीवन में, राह दिखाती जिनवाणी।
प्रमाद तज कर करो साधना, दिशा बताती जिनवाणी।
मुक्ति-मार्ग.....।।

दीन-दुखियों के बनो सहारा दर्शित करती जिनवाणी।
धर्मीजन बन्धु-सम जानो कहती है यह जिनवाणी।
'मगन' सदैव चलो सत्पथ पर मुक्ति दिलावे जिनवाणी।
मुक्ति-मार्ग.....।।

-सेवानिवृत्त अध्यापक, फाजिलाबाद (हिण्डौन), जिला-करौली (राज.)

युवा-स्तम्भ

क्रोध एक कमज़ोरी है

श्रीमती बीना जैन

युवाओं का छोटी-छोटी बातों पर आक्रामक हो उठना आज चिंता का विषय है। यह बात कुछ सीमा तक सत्य होते हुए भी पूरी युवा-पीढ़ी पर लागू नहीं होती, क्योंकि उनके व्यवहार पर पारिवारिक पृष्ठभूमि, उनके संस्कार, शिक्षा-दीक्षा तथा सामाजिक-परिवेश भी प्रभाव डालता है। अधिकतर मामलों में युवाओं के स्वभाव में गुस्सा व उग्रता का सम्बन्ध भविष्य के बारे में उनकी अस्पष्टता, असुरक्षा की भावना तथा अपने सपनों को साकार करने की अभिलाषा से होता है।

मनोविज्ञान की भाषा में खुशी, उदासी, रोना हंसना, प्यार आदि भावों के समान क्रोध भी एक साधारण आवेग है। परन्तु खुशहाली व उदासी में सामंजस्य बनाए रखने के लिए इस आवेग पर नियंत्रण करना आवश्यक है। अन्यथा रिश्ते बिखर जाते हैं। कार्यस्थल व परिवार में क्रोधी को कोई पंसद नहीं करता। वह स्वयं को एकाकी महसूस करने लगता है, क्योंकि सब उससे दूरी बनाने लगते हैं।

व्यक्ति का 'क्रोध' उसकी हताशा की बाहरी अभिव्यक्ति होती है। हताशा और नकारात्मकता के कारण उसे ज़रा भी प्रतिकूलता सहन नहीं हो पाती, तथा धैर्य के अभाव में आक्रामकता और क्रोध उसका स्वभाव बन जाता है। कड़ी प्रतियोगिता व सूचना तकनीक के इस दौर में क्रोध की बात की जाए तो इसका मूल कारण नित नई सूचनाओं के साथ तालमेल नहीं बिठा पाना है। आर्थिक सम्पन्नता के प्रति जबरदस्त आकर्षण अथवा अपनी बात को सही ढंग से अभिव्यक्त करने की असमर्थता व्यक्ति में कुंठा और क्रोध को जन्म देती है।

मनोविज्ञान की एक अवधारणा के अनुसार मनुष्य के जीवन में दो इच्छाएँ समानान्तर रूप से विद्यमान रहती हैं। एक जीने की इच्छा जिसे 'इरोस' कहते हैं, दूसरी मरने की इच्छा जिसे 'थायनोट्रस' कहा जाता है। ये दोनों इच्छाएँ एक साथ विद्यमान होती हैं, लेकिन इनकी तीव्रता में अन्तर होता है। समस्त क्रियाएँ इनसे प्रभावित होती हैं। "इरोस" के प्रभाव में व्यक्ति सीखने के लिए उत्सुक रहता है तथा रचनाशील होता है वहीं 'थायनोट्रस' के प्रभाव से उसमें सम्बन्धों व वस्तुओं के प्रति निराशा का भाव अधिक होता है। चरम सीमा होने पर वह इन्हें समाप्त करने को भी तैयार रहता है, जिसके कारण वह स्वयं को अथवा दूसरों को नुकसान पहुँचाता है। नाखून कुतरना, अकारण कागज के छोटे-छोटे

टुकड़े करना, सूक्ष्म रूप से विद्यमान इन्हीं इच्छाओं की अभिव्यक्ति है, जिसे हम समझ नहीं पाते।

युवाओं के क्रोधी स्वभाव को समझने से पूर्व वर्तमान परिवेश में उनकी आवश्यकताओं को भी समझना जरूरी है। अनुशासन व आज़ादी के मध्य युवा शारीरिक व मानसिक स्तर पर तेजी से विकास कर रहे होते हैं। चारों ओर के परिवेश में हो रहे परिवर्तन को अनुभव करने लगते हैं। एक तरफ उनमें कार्य करने का जोश होता है तो दूसरी ओर उनमें अधिक से अधिक जानने की भूख होती है। वे स्वयं से अधिक अपेक्षा रखते हैं। आज उनकी जानकारी का आधार केवल उनके माता-पिता ही नहीं हैं, वरन् मीडिया, इण्टरनेट ग्लैमर, सहपाठी व उनकी जीवनशैली से भी वे प्रभावित होते हैं तथा उसके अनुसार चलने के लिए लालायित रहते हैं। विलासिता एवं सुख-सुविधा को अपनाने के लिए वे शीघ्रता करते हैं। अपने अभिभावकों से भी वे अपेक्षा करते हैं कि वे उनकी आवश्यकताओं को समझें, तथा उनकी समस्याओं का समाधान करें। किन्तु अधिकतर व्यस्तता, परेशानियों तथा अपने तनावों के कारण अभिभावक युवकों की भावनाओं को नहीं समझ पाते। वे उनसे अनुशासन में रहने की माँग करते हैं, जबकि स्वयं हर समय झल्लाए हुए रहते हैं। संतान की असफलता पर कभी-कभी अभिभावक उन्हें बुरी तरह शर्मिन्दा करते हैं, जिससे युवा आवेश में आक्रोशित व विद्रोही हो जाते हैं तथा कुछ भी अनिष्ट कर बैठते हैं।

युवाओं में क्रोध का जन्म लक्ष्य-हीनता के कारण भी होता है। जिन युवाओं में भविष्य को लेकर कोई स्पष्ट सोच नहीं होती उनके प्रयासों में गम्भीरता एवं समर्पण का भाव नहीं होता उनकी दिशाहीनता, निराशा एवं असुरक्षा की भावना उनकी कार्य-कुशलता को प्रभावित करती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि युवा अपनी कमियों को स्वीकारें, उन्हें दूर करने का प्रयास करें, व्यावहारिक दृष्टिकोण रखें तथा अपनी आक्रामकता व क्रोध के कारणों को जानने का प्रयास करें, माता-पिता का आदर करें उनकी विवशताओं तथा उत्तरदायित्व को समझें। मनोचिकित्सक से परामर्श लें। क्योंकि क्रोध आत्मा का दुर्भेद्य शत्रु है। क्रोध एक तरह का पागलपन है। क्रोध का प्रारम्भ नादानी से होता है, और अंत पश्चात्ताप में होता है। क्रोध का प्रवेश बुद्धि व तर्क को नष्ट कर देता है। अतः युवाओं से अनुरोध है कि वे क्रोध को अपने पर हावी न होने दें तथा संयम व समझदारी से जीवन-पथ पर आगे बढ़ कर अपनी सफलता का मार्ग प्रशस्त करें। इसके लिए प्रेरणादायी पुस्तकों का स्वाध्याय एवं संत-महापुरुषों की संगति उपयोगी सिद्ध हो सकती है। क्रोध को नियन्त्रित करने वाला व्यक्ति ही जीवन में उच्च सफलताओं को प्राप्त करता है, क्रोधी व्यक्ति कभी भी धराशायी हो सकता है।

-ज्ञान सरोवर कॉलोनी, अलीगढ़ (राज.)

नारी-स्तम्भ

दुःखी लोग टीवी ज्यादा देखते हैं

अमृत साधना

हाल ही में अमेरिका के मैरीलैंड विश्वविद्यालय ने एक अन्वेषण किया कि आधुनिक लोग टीवी ज्यादा क्यों देखते हैं? शोध के लिए 45,000 लोगों का दस साल तक अध्ययन किया गया। उनसे एक डायरी लिखने के लिए कहा गया था, जिसमें यह दर्ज करना था कि वे किस मनःस्थिति में होने पर टीवी अधिक देखते हैं। सभी ने दर्ज किया कि उदास या अशांत होने पर वे टीवी के सामने ज्यादा समय बिताते हैं। यह भी पाया गया कि जिनका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं है या कोई पारिवारिक कलह है, वे लोग भी टीवी ज्यादा देखते हैं। क्योंकि एक-दूसरे से बचने का यह बेहतरीन उपाय है। सतत टीवी देखना लोगों के मन में छाई उदासी को गहराता है।

टीवी में खबरें पढ़ने वाले प्रसन्न, प्रफुल्लित और टिपटॉप दिखते हैं। घरेलू महिलाएँ हमेशा साज सिंगार किए दिखाई देती हैं। विज्ञापनों में कुछ सेकंड के लिए झलकने वाले लोग भी सदासुखी, सदाबहार होते हैं। ये सारे झूठ दर्शकों के मन में पैठी हुई उदासी को और गहराते हैं। बच्चे सोचते हैं मेरी माँ टीवी की माँ जैसी क्यों नहीं है? पति सोचता है, ढेर सारे कपड़े धोने के बाद भी मुस्कुराने वाली पत्नी मुझे क्यों नहीं मिली? पत्नी कुढ़ती है कि काश मुझे भी सजीला फुर्तीला पति मिलता।

इस झूठी जिंदगी ने असली जिंदगी पर कब्जा कर लिया है। असली जिंदगी वह है जो हर इंसान वास्तव में जीता है। उसकी भावनाएँ, विचार, आशाएँ, स्मृतियाँ, पुराने घाव, यह उसकी जिंदगी है। इसके साथ उसका संबंध नहीं है, वह तो टीवी किरदारों की समस्याओं में उलझा है। यह खुद से बचने का उपाय है।

आप थोड़ा समय सिर्फ अपने साथ बिताएँ। अकेले बैठकर आँखें बंद करके अपनी श्वास का ध्यान रखते हुए मन की झील में उतरें। अपने साथ जुड़ना, मन को देखना, समझना बहुत आनंददायी है। उसी से आपको शांति मिलेगी। प्रसन्नता उभरेगी, एक प्रकाश उदित होगा। जीवन का प्रवाह भीतर से बाहर की ओर होता है, बाहर से भीतर नहीं। मन जितना शांत होगा मनोरंजन की जरूरत उतनी कम होगी।

-ओशो मेडिटेशन रिजॉर्ट में मैनेजमेंट सदस्य, पुणे (महा.)

कविता

दुःखों से गर जो बचना है, धर्म की शरण में आना

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

दुःखों से गर जो बचना है, धर्म की शरण में आना,
खिलेगा बाग खुशियों का, प्रभु को ध्यान में लाना।
दुःखों से गर जो बचना है.....।। टेर।।

मिटेगा गम का अंधियारा, सुखों की भोर आयेगी,
धर्म की करणी तो हमको, राहें सच्ची बतायेगी।
धर्म ही सार जीवन में, कभी इसको न बिसराना,
दुःखों से गर जो बचना है.....।। 1।।

बड़ा गतिशील जीवन है, नहीं है चैन पल भर का,
नहीं मन शांत रहता है, भिखारी है यह दर-दर का।
साधलो अपने मन को तुम, धर्म के पथ में बढ़ जाना,
दुःखों से गर जो बचना है.....।। 2।।

सुखों की खोज में हमने, व्यर्थ जीवन गंवाया है,
दौड़ता रहा बाज़ारों में, नहीं सुख चैन पाया है।
विचारों में ही सुख दुःख है, अपने मन को है समझाना,
दुःखों से गर जो बचना है.....।। 3।।

दुःखों से है भरी दुनियां, साधनों ने डूबाया है,
विकारों से भरा जीवन, समझ फिर भी न पाया है।
वीर की राह अपनाकर, नरक गतियों से बच जाना,
दुःखों से गर जो बचना है.....।। 4।।

-जनता साड़ी सेन्टर, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

स्वास्थ्य-विज्ञान

नाभि-चिकित्सा

डॉ. चंचलमल चोरडिया

मानव जीवन के विकास, संचालन एवं नियंत्रण में नाभि की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। माता के पेट में गर्भाधान से लेकर जीवन के अंतिम क्षणों तक नाभि केन्द्र सजग, सतर्क एवं क्रियाशील रहता है। मृत्यु के पहले हृदय की धड़कन रुक जाने के पांच छः मिनट बाद तक नाभि में स्पन्दन होता है। यदि कोई अनुभवी व्यक्ति किसी विधि द्वारा नाभि की प्राण ऊर्जा का संपर्क हृदय से पुनः स्थापित कर दे, तो मनुष्य की मृत्यु टल सकती है। परन्तु नाभि में स्पन्दन रुक जाने के बाद मृत्यु को नहीं टाला जा सकता। माता के गर्भ में नवजात बालक का सबसे पहले नाभि केन्द्र ही विकसित होता है। नाभि में हमारी पैतृक ऊर्जा का संचय होता है, जो बीज से वृक्ष की भांति हमारे सम्पूर्ण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गर्भस्थ बालक में नाभि के माध्यम से ही गर्भावस्था में विकास हेतु आवश्यक पोषक तत्त्वों की पूर्ति होती है।

गर्भ के बाहर आते ही सर्वप्रथम माता के शरीर को नाभि से जोड़ने वाली नली का सम्बन्ध विच्छेद करना अति आवश्यक होता है, जिससे नवजात शिशु स्वतन्त्र रूप से श्वास लेकर अपनी जीवन-यात्रा प्रारम्भ कर सके। जीवन की प्रथम श्वास बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। यदि अज्ञानवश जन्म लेते ही माता से जोड़ने वाली नली को शीघ्र न काटा जाये अथवा नली को काटते ही बच्चा न रोये तो बालक विकलांग हो सकता है।

नर से नारायण बनाने में नाभि का योगदान

नाभि में हमारे प्राणों का संचय होता है। यह शरीर का डायनेमो अथवा बैटरी है। ब्रह्माण्ड में जो भी घटित होता है, वह हमारे शरीर के अणु-अणु को प्रभावित करता है। हमारी कोशिकाएँ शरीर में ब्रह्माण्ड का लघुतम रूप होती हैं। नाभि ही ब्रह्माण्ड से ऊर्जा को अपनी आवश्यकतानुसार ग्रहण करने, संग्रह करने तथा रूपान्तरित करने की क्षमता रखती है। नाभि शरीर की धुरी है तथा शरीर में कार्यरत विभिन्न प्रकार की ऊर्जाओं का केन्द्र होती है। नाभि उठते-बैठते, दौड़ते-चलते, सोते अथवा किसी भी स्थिति में शरीर के अंगों-उपांगों को अपने स्थान पर स्थिर रखती है। हमारी अधिकांश शारीरिक एवं मानसिक तथा आध्यात्मिक क्रियाओं के संचालन में इसकी प्रभावशाली भूमिका होती है। कुण्डलिनी जागृत कर अन्य चक्रों को सजग करना हो अथवा प्राणायाम की साधना या पतंजलि योग द्वारा यम से समाधि तक की अवस्था को प्राप्त करना आदि सारी क्रियाएँ नाभि की स्वस्थता पर ही निर्भर करती हैं। योगी पुरुष अपनी नाभि को संतुलित रख मन को नियंत्रित करते हैं।

मन के माध्यम से संकल्प शक्ति को ऊपर उठाते हुए मस्तिष्क केन्द्र को स्थिर करते हैं। यही निर्विकल्प अवस्था होती है और सारी साधना का परम लक्ष्य भी इसी अवस्था को प्राप्त करना होता है।

नाभि को कमल की उपमा

जिस प्रकार कमल पानी में रहता हुआ भी उससे अपने आपको अलग रखता है ठीक उसी प्रकार नाभि जीवन की अधिकांश शारीरिक, मानसिक, आत्मिक गतिविधियों का संचालक होते हुए भी बाह्य रूप से अपना कोई सम्बन्ध नहीं दर्शाती। इसी कारण हमारे पौराणिक ग्रन्थों में नाभि को कमल की उपमा दी गई है। जिस प्रकार वृत्त का केन्द्र होते हुए भी चित्र में वह नहीं दिखता, ठीक उसी प्रकार मन व आत्मा की भांति नाभि भी एक्सरे अथवा सोनोग्राफी की पकड़ में नहीं आती। अत: आज का ऐलोपेथिक विज्ञान इसके अस्तित्व को स्वीकार करने में परेशानी अनुभव कर रहा है।

जीवनचर्या का आधार नाभि

जिस प्रकार कमल सूर्य के प्रकाश में खिलता है और सूर्यास्त के पश्चात् अपने आप में सिमट जाता है, ठीक उसी प्रकार सूर्यास्त के पश्चात् नाभि की सक्रियता मंद पड़ जाती है। जिससे रात्रि में हमारी क्षमताएं अपेक्षाकृत कम हो जाती हैं तथा निद्रा लेकर विश्राम करना पड़ता है। हमारी दिनचर्या एवं रात्रिचर्या में अन्तर होता है। इसी कारण लम्बे समय तक रात्रि में कार्य करने वालों का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। यदि कभी कारणवश पूर्ण रात्रि जागृत रहना पड़े तो दूसरे दिन हमारा पाचन बिगड़ जाता है।

नाभि और पाचन

नाभि का हमारे पाचन से गहरा सम्बन्ध होता है। अत: हमें, जब नाभि सक्रिय हो, अर्थात् दिन में ही सूर्यास्त से पूर्व भोजन करना चाहिये।

नाभि केन्द्र खिसकने के प्रभाव

यदि नाभि अपने स्थान से अन्दर की तरफ हो जाए, तो उस व्यक्ति का वजन दिन प्रतिदिन घटता चला जाता है और यदि किसी कारण नाभि अपने स्थान से बाहर की तरफ हो जाती है तो शरीर का वजन न चाहते हुए भी अनावश्यक बढ़ने लगता है। किसी कारण नाभि यदि अपने स्थान से ऊपर की तरफ चढ़ जाती है तो खट्टी डकारें, अपच आदि की शिकायतें रहने लगती हैं, कब्ज़ी हो सकती है। परन्तु यदि नाभि अपने स्थान से नीचे की तरफ चली जाती है तो दस्तों की शिकायत हो जाती है। इसी प्रकार नाभि कभी दायें, बायें अथवा तिरछी दिशाओं में भी हट जाती है, जिससे शरीर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होने लगते हैं। कभी-कभी यदि सारे परीक्षण एवं पेथोलोजिकल टेस्ट करने के पश्चात् भी रोग पकड़ में नहीं आता है, तो ऐसी स्थिति में नाभि केन्द्र को अपने केन्द्र में लाने से पेट के

अनेक रोगों में तुरन्त राहत मिलने लग जाती है।

नाभि असंतुलन के कारण

गलत ढंग से उठने-बैठने, चलने-फिरने, वजन उठाने, श्वसन क्रिया करने, शरीर का संतुलन बिगाड़ने वाली अन्य प्रवृत्तियों के कारण भी नाभि अपने केन्द्र से हट जाती है।

तनाव का नाभि पर प्रभाव

गलत खान-पान एवं जीवन चर्या के साथ प्रतिदिन की चिंताएँ, दु:ख, तनाव, आवेग, क्रोध, द्वेष, घृणा आदि प्रवृत्तियाँ विभिन्न मानसिक विकारों के माध्यम से शरीर पर अपना प्रभाव निरन्तर छोड़ती रहती हैं। इससे नाभि क्षेत्र में विजातीय तत्त्वों का जमाव होने लगता है। यदि इन दुष्प्रवृत्तियों के दुष्प्रभावों का प्रायश्चित्त एवं सम्यक् चिन्तन किया जाए तथा समभाव पूर्ण जीवन जीया जाए तो भविष्य में इन दोषों के दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। इसी कारण जैन साधुओं एवं श्रावकों के लिए प्रतिदिन प्रात: एवं सायंकाल अपने दोषों का परिमार्जन करने के लिए प्रतिक्रमण को आवश्यक बतलाया गया है। परन्तु कभी-कभी महीनों अथवा सालों के बीत जाने के बाद भी जो घृणा, द्वेष, क्रोध से उत्पन्न उन विजातीय तत्त्वों को प्रायश्चित्त एवं सकारात्मक सोच द्वारा दूर करने का प्रयत्न नहीं करते, उनके नाभि क्षेत्र में विजातीय तत्त्वों का जमाव बढ़ने लगता है। नाभि के आसपास जो नाड़ियाँ (रक्त की सिरायें) एक-दूसरे से अलग-अलग फैली हुई हैं, वे आपस में चिपक जाती है, उलझ जाती है अथवा गुच्छों का रूप ले लेती हैं। फलत: नाभिक्षेत्र से पूरे शरीर में प्रवाहित होने वाली प्राण ऊर्जा के मार्ग में अवरोध उत्पन्न होने लगता है। शरीर के संतुलन का मुख्य आधार नाभि केन्द्र होता है। नाभि केन्द्र में स्थित मणिपुर चक्र ब्रह्माण्ड से सर्वाधिक ऊर्जा ग्रहण करता है और बाकी शरीर भी जो प्राण ऊर्जा ग्रहण करता है वह सर्व प्रथम मणिपुर चक्र (नाभि केन्द्र) में होकर अन्य ऊर्जा चक्रों में प्रवाहित होती है। गर्भकाल में सारा पोषण नाभि के माध्यम से ही मिलता है। अत: यदि नाभि की धड़कन अपने केन्द्र में न हो तो शरीर असंतुलित होने लगता है।

मानव को दु:खी होना पसन्द नहीं। परन्तु सुखी होना आता नहीं तथा सुखी होने के लिए जैसा सम्यक् पुरुषार्थ आवश्यक है, वह होता नहीं। अत: व्यक्ति प्राय: दु:खी होता है।

निद्रा के समय शरीर निश्चित अवस्था में सतत लम्बे समय तक रहता है। अत: सोने का सही ढंग शरीर के संतुलन के लिए आवश्यक होता है। यही रोग की प्रारम्भिक स्थिति होती है। यदि नाभि क्षेत्र को पुन: स्वस्थ बनाकर नाभि को अपने केन्द्र में स्थित कर दिया जाए तो अधिकांश रोग ठीक होने लगते हैं, भले ही वे कितने ही पुराने अथवा असाध्य क्यों न हों।

स्वास्थ्य के लिए सम्यक् आचरण आवश्यक

प्रारम्भ से ही नाभि के केन्द्र में मौलिक प्राण ऊर्जा रहती है। जितना ज्यादा ब्रह्माण्ड से सम्पर्क रहता है उतनी ज्यादा ऊर्जा मिलती है। इसी ऊर्जा से शरीर की रोग अवरोधक क्षमता बढ़ती है। श्वेत रक्त कोशिकाओं तथा T.Cells का निर्माण होता है, जो शरीर को दीर्घायु एवं नीरोग बनाते हैं। नाभि चेतना का मूल केन्द्र होती है। इसके असंतुलन से मन और आत्मा भी स्वस्थ नहीं रह सकती। अत: आरोग्य के लिए हमारी दिनचर्या एवं रात्रिचर्या में आहार, निद्रा एवं ब्रह्मचर्य का सम्यक् पालन आवश्यक होता है। प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिए आवश्यक है- सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् आचरण। सर्वप्रथम हमें स्वास्थ्य के बारे में अपनी सोच बदलनी होगी।

नाभि के आकार से रोग निदान

जब नाभि का स्पन्दन नाभि केन्द्र में होता है तब चित्त में प्रसन्नता और मन में सात्त्विक विचारों का सर्जन होता ही रहता है, जो शारीरिक संतुलन के लक्षण होते हैं। परन्तु जब नाभि का स्पन्दन अपने केन्द्र में न हो तो शरीर असंतुलित होने लगता है। लम्बे समय तक नाभि का स्पन्दन केन्द्र में न रहने से नाभि केन्द्र के जिस ओर स्पन्दन होता है, उस ओर ऊर्जा का प्रवाह ज्यादा होने लगता है । उसके विपरीत दिशा में ऊर्जा का प्रवाह कम होने से नाभि क्षेत्र की मांशपेशियों में लगातार खिंचाव रहने लगता है। परिणामस्वरूप नाभि का आकार बदल जाता है और शरीर में रोग के लक्षण स्थायी रूप से प्रकट होने लगते हैं।

आजकल हमारी अप्राकृतिक, असंयमित, अनियन्त्रित जीवन शैली के कारण अधिकांश व्यक्तियों का नाभि केन्द्र अपने स्थान पर प्राय: नहीं होता। नाभिक्षेत्र विजातीय तत्त्वों से पूर्णतया स्वच्छ नहीं होता। लम्बे समय तक ऐसी स्थिति बनी रहने से नाभि क्षेत्र का आकार स्थायी रूप से बदलने लगता है। स्वस्थ नाभि का आकार गोलाकार, मांसपेशियाँ सुडौल तथा स्पन्दन इसके केन्द्र में होता है। परन्तु यदि नाभि अपने केन्द्र में स्थित न हो, त्वचा में लचीलेपन के स्थान पर कठोरता हो, नाभि सक्रिय एवं सजग न हो, नाभि एक तरफ खिंची हुई, उभरी हुई अथवा दबी हुई हो अथवा उसका आकार स्थायी रूप से बदल गया हो तो यह उस व्यक्ति में लम्बे समय से किसी न किसी रोग की तरफ इंगित करता है। शरीर में अनन्त क्षमता होने से साधारण स्थिति में हमें उन रोगों का आभास तक नहीं होता। परन्तु जब परिस्थितियाँ अनियंत्रित हो जाती हैं तब रोग के लक्षण बाहर दिखाई देने लगते हैं। हम अपने आपको रोगी मान उसके उपचार हेतु सजग हो जाते हैं। परन्तु वास्तव में रोगों के स्पष्ट लक्षण प्रकट होने से पूर्व हम कितने स्वस्थ होते हैं? अपनी क्षमताओं का कितना उपयोग करते हैं? सभी स्वास्थ्य प्रेमियों के लिये चिन्तन का विषय है।

जिस प्रकार किसी गोलाकार अथवा वृत्ताकार क्षेत्र में उसके केन्द्र से परिधि तक

अनन्त रेखायें खींची जाए तो वे आपस में नहीं कटती। परन्तु जब केन्द्र अपने स्थान से हट जाये और पुनः उसी प्रकार केन्द्र से परिधि तक रेखायें खींची जाए तो कुछ रेखायें आपस में कटने लग जाती हैं। ठीक उसी प्रकार नाभि हमारे प्राण ऊर्जा का केन्द्र बिन्दु होती है तथा यहीं से सारे शरीर को प्राण ऊर्जा का वितरण, नियन्त्रण एवं संतुलन होता है। अतः जब नाभि केन्द्र अपने स्थान से खिसक जाता है तो सभी अंगों को मिलने वाली प्राण ऊर्जा का संतुलन बिगड़ने लगता है। शरीर में किसी भाग को आवश्यकता से ज्यादा, तो किसी भाग को आवश्यकता से कम ऊर्जा मिलती है। फलतः ऐसे अंगों की कार्यप्रणाली असंतुलित हो जाती है। अलग-अलग लक्षण प्रकट होने लगते हैं। जिन्हें अलग-अलग रोगों के नाम से पुकारा जाता है। यदि इस संतुलन को पुनः ठीक कर दिया जाए तो हम स्वस्थ हो जाते हैं। जितनी-जितनी नाभि अपनी वास्तविक स्थिति में आती है, हम उतनी-उतनी स्वस्थता का अनुभव करने लगते हैं। मात्र थोड़े समय के लिए किसी विधि द्वारा नाभि केन्द्र को पुनः अपने स्थान पर लाने से रोग में राहत अवश्य मिलती है। परन्तु ऐसी स्थिति बना दी जाए जिससे नाभि केन्द्र स्थायी रूप से अपने केन्द्र पर स्थिर हो जाए तो हम पूर्ण स्वस्थ हो जाते हैं। जिस प्रकार किसी तालाब के मध्य में कोई पत्थर डाला जाये तो, वहाँ से उठने वाली लहरें वृत्ताकार बन चारों तरफ फैलती है। परन्तु यदि पत्थर बीचों-बीच में न डालकर तालाब की किसी एक दीवार से थोड़ी दूरी पर डाला जाए, तो वृत्ताकार फैलने वाली लहरें दीवार से टकराकर ठीक उस दीवार के विपरीत दिशा में वृत्ताकार परिधि से बाहर की तरफ बढ़ जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि अवरोध आने से लहरें अपना आकार बदल देती हैं। ठीक उसी प्रकार नाभि केन्द्र से प्रभावित होने वाली ऊर्जा के मार्ग में जिस ओर लम्बे समय से अवरोध बना रहता है, नाभि का वह क्षेत्र सिकुड़ने लगता है। उस तरफ स्थित अंग पूरी ऊर्जा न मिलने के कारण रोग ग्रस्त हो जाते हैं। इसके विपरीत जिस ओर लम्बे समय से ऊर्जा का प्रवाह आवश्यकता से ज्यादा हो रहा है, उस ओर नाभि का गोलाकार क्षेत्र खुल जाता है। वहाँ स्थित अंगों में आवश्यकता से अधिक प्राण ऊर्जा मिलने से संतुलन बिगड़ जाता है और वे रोग ग्रस्त होने लगते हैं।

नाभि निरीक्षण की विधि

नाभि अपने स्थान पर है अथवा नहीं, पता लगाने की अनेक विधियाँ होती हैं, परन्तु यहाँ एक ही प्रमुख विधि का तरीका बताया जा रहा है। जिस व्यक्ति की नाभि की जाँच करनी हो, उस व्यक्ति को जमीन पर पीठ के बल सुला दीजिये। फिर अपने बायीं अथवा दाहिनी हथेली की पांचों अंगुलियों को एक साथ मिलाकर ठीक नाभि पर दबाव देते हुए रखिये। यदि नाभि अपने स्थान पर होती है तो पांचों अंगुलियों के बीच में स्पन्दन का

आभास होता है। यदि नाभि थोड़ी हटी हुई हो तो नाभि का स्पन्दन पांचों अंगुलियों में किसी अंगुली के नीचे प्राय: अनुभव होता है। परन्तु यदि नाभि अपने केन्द्र से अधिक हटी हुई हो तो नाभि क्षेत्र के आसपास पांचों अंगुलियों से दबाव देते हुए, उस स्थान को मालूम करें, जहाँ स्पन्दन आ रहा हो। जहां पर स्पन्दन आता है, नाभि केन्द्र उसी स्थान पर होता है। परन्तु जिन लोगों का पेट मोटा अथवा कठोर होता है, उन लोगों के नाभि केन्द्र का स्पन्दन आसानी से पता नहीं चलता तथा ढूंढने वाले को नाभि क्षेत्र में पर्याप्त दबाव डालकर ढूंढना पड़ता है।

नाभि केन्द्र ठीक करने की विधियाँ

रात्रि में सोते समय नाभि केन्द्र में शुद्ध देशी गाय का घी 2-3 बूंद डालने से नाभि केन्द्र के आसपास जमे विजातीय तत्त्व दूर हो जाते हैं। नाभि के अन्दर और चारों तरफ दाना मेथी स्पर्श कर रखने से तथा आवश्यकतानुसार, चुम्बक का मसाज करने से भी नाभि संबंधी रोगों से शीघ्र आराम मिलता है।

नाभि केन्द्र को अपने स्थान पर लाने के लिये भारत में अनेक विधियाँ प्रचलित हैं। वे इतनी सरल हैं कि कोई भी जिज्ञासु, शिक्षित, अशिक्षित, बच्चा, बूढ़ा आसानी से उन विधियों को सीख सकता है। नाभि के केन्द्र में स्पन्दन का अनुभव होने पर वह अपने स्थान पर मानी जाती है। परन्तु यदि स्पन्दन केन्द्र में न हो तो, बोलचाल की भाषा में हम धरण का टलना, पेचुटि अथवा नाभि का खिसकना कहते हैं। इसको ठीक करने की विधियाँ इस प्रकार हैं-

1. प्रात:काल खाली पेट रोगी को सीधा सुलाएँ। नाभि के आसपास बाल हों तो उन्हें साफ कर लें, अथवा पानी से गीला करलें। उसके पश्चात् रोगी को पांच सात बार गहरा एवं लम्बा श्वास लेने को कहें। उसके पश्चात् नाभि के केन्द्र पर जलता हुआ दीपक रख उसको कांच की ग्लास से ढ़क दें तथा पेट पर ग्लास को हल्का सा दबाव देकर रखें। थोड़ी देर बाद ग्लास के अन्दर की ऑक्सीजन समाप्त हो जाने से दीपक बुझ जाता है तथा ग्लास पेट के चिपक जाती है, तथा उसके अन्दर की वायु नाभि के स्पन्दन को अपनी जगह पर लाने के लियें खिंचाव करती है। जब नाभि का स्पन्दन अपने केन्द्र में आ जाता है तो ग्लास अपने आप पेट से हट जाती है। जितनी देर से ग्लास हटती है, उतने ही अनुपात में नाभि क्षेत्र में प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध होता है। रोग ज्यादा अथवा कम, पुराना अथवा तत्कालीन होता है। अगर नाभि का स्पन्दन अपने केन्द्र में होता है तो ग्लास दीपक बुझने के पश्चात् या तो पेट से नहीं चिपकती है अथवा तुरन्त हट जाती है। ग्लास हटने के पश्चात् पुन: नाभि के स्पन्दन की उसके केन्द्र में जांच कर

लें। ग्लास हटने के पश्चात् उसी स्थान पर रोगी को बैठा कर कुछ सात्त्विक ठोस पौष्टिक भोजन कराना चाहिये, ताकि पेट में भोजन के दबाव से नाभि का स्पन्दन अपने स्थान पर ही केन्द्रित रहे। आजकल दीपक के स्थान पर पंप खिंचाव का उपयोग भी किया जाता है। विशेषकर उन रोगियों के लिये जिनके तोंद ज्यादा हों अथवा नाभि का स्पन्दन बहुत गहरा अथवा केन्द्र से बहुत दूर हो। जैन श्रमण अग्नि का उपयोग नहीं लेते। उनके भी नाभि खिसक गई हो तो खिंचाव पंप द्वारा उसे केन्द्र में लाया जा सकता है। पम्प द्वारा खिंचाव उतना ही देना चाहिये जितना रोगी सहन कर सके।

2. सुबह खाली पेट कमर सीधी करके सीधे लेट जायें। सर्व प्रथम 25-30 बार सीधी एवं उल्टी साइकलिंग का व्यायाम करें। फिर रीढ़ के घुमावदार राजा और रानी आसन (सीधे लेटकर दोनों पैरों के घुटने मोड़ कर एक बार दायीं ओर तथा दूसरी बार बायीं ओर झुकाकर किया जाने वाला आसन) 25-30 बार करें। दोनों पैरों को धीरे-धीरे ऊपर उठायें तथा 90 डिग्री के कोण पर रखें। फिर सिर को बिना जमीन से उठाए दोनों पैरों को सीधे रखते हुए धीरे-धीरे जमीन पर लाएं। ऐसा उत्तानपादासन 5-6 बार करें। उसके पश्चात 5-6 बार नौकासन विधि पूर्वक करें। ऐसा करने से खिसकी हुई धरण अपने स्थान पर आ जाती है।
3. सुबह भूखे पेट पीठ के बल सीधे लेट जायें। दोनों टखनों तथा घुटनों को साथ-साथ रखें। यदि धरण अपने स्थान पर नहीं होती है तो एक पैर का अंगूठा दूसरे पैर के अंगूठे से कुछ बड़ा होता है अर्थात् दोनों अंगूठे बराबर नहीं होते हैं। जो अंगूठा नीचे हो उसे हाथ से ऊपर की ओर खीचें। दो तीन बार खींचने से दोनों अँगूठे बराबर हो जाते हैं और धरण अपने स्थान पर आ जाती है। यदि छोटे पैर को खींचना किसी कारण संभव न हो तो पैरों को संतुलन करने की विधि से दोनों पैरों को बराबर करने से नाभि अपने केन्द्र में आ जाती है।
4. गर्मियों के दिनों में नाभि पर बर्फ रखने से नाभि क्षेत्र में संकुचन होने लगता है और हटी नाभि अपने स्थान पर आ जाती है।

स्वस्थ रहने की कामना रखने वालों को प्रतिदिन नाभि केन्द्र की स्थिति का परीक्षण कर लेना चाहिये। यदि नाभि केन्द्र अपने स्थान से विचलित हो गया हो तो प्रमाद छोड़ उसको केन्द्र में लाने का प्रयास करना चाहिये। जो व्यक्ति अपने नाभि केन्द्र के बारे में पूर्ण सजग रहते हैं, उनके जीवन में किसी असाध्य रोग होने की संभावना बहुत कम हो जाती है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन: 0291-2621454, 94141-34606
E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com,
Website: www.chordiahealthzone.com, www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी में 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ में प्रकाशित आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर 15 फरवरी 2013 तक श्री चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते हैं। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

1. नाभि का हमारे जीवन में क्या स्थान है? समझाइये।
2. नाभि को कमल क्यों कहते हैं?
3. क्रोध और आवेश की वृत्ति से नाभि पर क्या प्रभाव पड़ता है?
4. नाभि सदैव संतुलित रहे, इसके लिए क्या ध्यान रखना चाहिए?
5. नाभि की स्थिति ठीक होने पर आध्यात्मिक क्षेत्र में क्या-क्या लाभ होते हैं।
6. नाभि केन्द्र ठीक करने की दो विधियाँ बताइये।

वचनसिद्ध आचार्यश्री

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरड़िया

औरंगाबाद से बाई कंचन मिलने आई थी। बातों ही बातों में उन्होंने परम श्रद्धेय पूज्य आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा. की बात बताई। कोसाणा के श्री सायरचन्द जी मूथा (मेरे मासोसा) बहुत ही सरल, सीधे-सादे इन्सान थे। वे आचार्यश्री के परम भक्त थे। आचार्यश्री जहाँ भी विराजते वे साल में एक बार दर्शन करने अवश्य जाते थे। ऐसा उन्होंने नियम बना लिया था। एक बार वन्दना करते समय सामने वाली जेब से उनका चश्मा नीचे गिर गया। जब वे चश्मा उठाने लगे तो आचार्यश्री ने फरमाया कि अब तुम्हें चश्मे की जरूरत नहीं पड़ेगी। न मालूम क्या चमत्कार हुआ कि उस दिन के बाद से उन्हें चश्मे की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। नज़र तेज हो गई। बाई ने बताया कि आखिरी पांच सालों में उन्हें माला फेरने और साहित्य का स्वाध्याय करने की रुचि बढ़ गई। वे किताबें बड़े आराम से, बिना किसी तकलीफ के पढ़ लिया करते थे। गुरु कृपा के ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं। कोसाणा के मुथा परिवार पर आचार्यश्री की विशेष कृपा थी।

श्रद्धा व आस्था से हर फूल खिलते हैं।
जो नहीं मिला अब तक वे भी मिलते हैं।।

-52, कालार्थी पिल्लै, स्ट्रीट, चेन्नई-600079

समाज-सेवा

जैन समाज की शिक्षा, शान्ति और सेवा में भूमिका

श्री सज्जनराज मेहता

समूचे भारतवर्ष में जैन समाज का अपना एक स्थान है, अपनी एक महत्ता है। जैनियों की रग-रग में व्यापारिक गुण विद्यमान हैं, पर उनके रोम-रोम में जन-जन के लिए करुणा, सेवा, शांति भावना का वास है तथा हर तबके के लोगों को प्राथमिक शिक्षा सहज सुलभ हो, उस दिशा में समाज द्वारा अनुमोदनीय प्रयास किये गए हैं। तीर्थंकर महावीर के जन-कल्याणकारी उपदेशों से प्रभावित होकर ही सही, जैन समाज के हजारों साधु-साध्वियों (चलते-फिरते तीर्थ कह दूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी) के मुखारविंद से श्रवण की गई जिनवाणी तथा जैन आगमों के निरन्तर स्वाध्याय से अपने भीतर की आत्मा को प्रकाशित करते हुए देश के कोने-कोने में जैन समाज द्वारा संचालित स्वयंसेवी संस्थाएँ, विद्यालय, विश्व-विद्यालय, चिकित्सालय, औषधालय, मंदिर, स्थानक भवन, सभा भवन अपने-अपने स्तर पर सदुपयोगी सेवाएँ सहज सुलभ करा रहे हैं। व्यापार जितना जीवन यापन के लिए जरूरी है, व्यापारिक गतिविधियाँ जितनी सामाजिक स्तर पर अपना वज़ूद कायम रखने के लिए नितान्त आवश्यक हैं, व्यापारिक गतिविधियाँ जितनी सरकारी कोषों के संरक्षण हेतु आवश्यक हैं, सरकारी राजस्व के आंकड़ों पर गौर फरमाएँ तो जैनियों का योगदान सराहनीय, अनुमोदनीय, अनुकरणीय तथा अतुलनीय ही ठहराया जाएगा।

जैन समाज के सदस्य बिना किसी लाग लपेट, भेदभाव एवं राजनीति के अपना सर्वस्व अपने उद्यमों को प्रदत्त करते हुए भी सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सेदारी निभा रहे हैं। उन्होंने कभी राजनीति में जरुरत से ज्यादा दिलचस्पी दिखाते हुए स्वाभिमान को ठेस नहीं पहुँचने दी। चाहे वस्त्र व्यापार, रसायन, कागज, बिजली, कंप्यूटर, ज्वैलरी, सर्राफा, वित्त या बड़े-बड़े कल कारखाने हों या किसी भी व्यवसाय में रत हों, हर जगह अपनी अमिट छाप छोड़ी है। स्वस्थ प्रतिद्वन्दिता के साथ व्यापार में रत रह कर वे कई सामाजिक और धार्मिक संस्थानों का कुशल संचालन भी कर रहे हैं। जैसे बैंगलोर में भगवान् महावीर कॉलेज, अस्पताल, जैन विद्यालय, सुराना कॉलेज, आदर्श कॉलेज में मात्र जैन समाज के ही नहीं वरन दूर-दूर से समूचे दक्षिण भारत के वाशिंदे लाभान्वित हो रहे हैं। इसी तरह जैन युवा संगठन, भारतीय जैन संगठन, कर्णाटक मारवाड़ी

यूथ फेडेरशन, जैन यूथ एसोशिएशन, राजस्थान संघ, तेरापंथ समाज, जैन कॉंफेरेंस, जैन नेत्रालय तथा भगवान महावीर नेत्रालय के माध्यम से जनता जनार्दन को प्रचुर मात्रा में सेवा सुलभ करायी जा रही है। कई सरकारी विद्यालयों को गोद लिया जा चुका है। कई अनाथ-आश्रमों में हर क्षेत्र के नवयुवक-नवयुवतियाँ अपनी जेब खर्च की राशि से सेवा-शुश्रूषा में संलग्न हैं। कई महिला मंडल निरन्तर शिविरों के माध्यम से ज्ञान ज्योति जला रही हैं। व्यापारी बंधु कई बड़ी-बड़ी TRADE ASSOCIATIONS से जुड़कर उनका प्रतिनिधित्व करते हुए समूचे व्यापारी वर्ग को राहत प्रदान करा रहे हैं। कुछ सामाजिक गतिविधिओं में जैसे रोटरी, लोयंस, जेसीज, क्लबों के माध्यम से भी स्वैछिक सेवाएँ सुलभ करा रहे हैं। जैन समाज के सैकड़ों से ज्यादा अनुभवी और विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉक्टर, चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट, तकनीकी विशेषज्ञ, प्रशासनिक सेवाओं में संलग्न हैं। यह बैंगलोर की झलक है, देश के इस प्रकार विभिन्न नगरों में जैन समाज द्वारा लोक कल्याणकारी कार्य किए जा रहे हैं।

पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण में जैन समाज ने लाखों भारतीयों को रोज़गार उपलब्ध कराया है। समय-समय पर जैन समाज के सत्कार्यों की गूंज सरकार के सिपहसालारों से तथा अन्य समाज के प्रबुद्ध नागरिकों से सुनने को मिलती है। जैन समाज आज समूची जनसंख्या से प्रतिशत में कम होते हुए भी कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। कामयाबियाँ जैनियों के स्वस्थ नज़रिये का परिणाम है। उनकी सेवाओं का प्रतिफल है, स्वस्थ मानसिकता की परिणिति है। जैन समाज ने एक हाथ से लिया तो दूसरे हाथ को देने के लिए खुला भी छोड़ा है।

नई पीढ़ी की सोच भी व्यापक बदलाव को आतुर है और आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि उनके संकल्पों की बदौलत कुछ महत्त्वपूर्ण योजनाओं में अधिक दिलचस्पी बढ़ेगी। विद्यालयों, अस्पतालों, गौशालाओं के संरक्षण में भी वे पीछे नहीं रहना चाहते। वे ज्यादा सतर्कता तथा बुजुर्गों के अनुभवी मार्गदर्शन में अपनी रोटी बराबर सेंक लेंगे, ऐसी आशा है। जरूरत है कि युवा सही दिशा में निरंतर आगे बढ़ते हुए समाज की दशा को बदलने में अपनी क्षमताओं का उपयोग करें।

आज समाज अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। आग्रह, विग्रह, आवेश, क्रूरता, आसक्ति, असंयम, अनास्था, पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण की वृत्ति, भ्रूण-हत्या, दहेज हत्या, वैवाहिक सम्बन्ध-विच्छेद, संग्रह मनोवृत्ति, श्रम की उपेक्षा, हिंसाजन्य प्रसाधन-सामग्री का प्रयोग आदि अनेक समस्याएँ लगातार परेशान कर रही हैं। जैन समाज

को एक बार फिर ऐसे आयोजनों या तीर्थंकर महा-पुरुषों के जन्म-कल्याणक महोत्सवों पर संत-सतियों से उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर युवा पीढ़ी को राहभ्रमित की बीमारी से बचाने का सुप्रयास करना है। जैन जीवन शैली के महत्त्वपूर्ण आयामों का जीवन में प्रवेश आवश्यक है। सम्यग्ज्ञान, दर्शन और चारित्र के गुणों को आत्मसात् कर समाज अनवरत रूप से सुख, शांति और सद्भाव को कायम रख सकता है। सामाजिक व्यवस्थाओं से जुड़े होने के कारण अन्य समाज एवं संघ के सदस्यों को हमसे अपेक्षाएँ होना स्वाभाविक है, जिस पर हमारा दृष्टिकोण सुधारात्मक हो तो सोने में सुहागा हो जायेगा। यदि हम सब मिलकर, अपनी-अपनी क्षमताओं का योगदान देकर कुछ सामाजिक रीति-रिवाजों में हो रहे विलासितापूर्ण प्रदर्शनों पर अंकुश लगाने की बात मिल कर सोचें तथा युवावर्ग आगे बढ़कर जन हितार्थ कुछ पाबंदी की सोचे एवं आम सहमति के साथ सुप्रयास करे तो समाज को उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचाया जा सकता है।

-लाल बिल्डिंग, मामूलपेठ, बैंगलोर-53 (कर्नाटक)

जग जायें तो अच्छा

श्री निर्मल जामड़

यह जन्म मरण का दुःख, मिट जाये तो अच्छा।
घट घट में यही चिन्तन, उतर जाये तो अच्छा।।
डूबेंगे कहाँ तक हम, कर्मों के भँवर में।
संयम के सहारे से, तिर जायें तो अच्छा।।
आपस के वैर-भाव से, दूषित है यह दुनिया।
सद्भाव की खुशबू से, महक जाये तो अच्छा।।
युग दोष अहंकार है, यह जान लें हम सब।
सद्गुरुओं की शिक्षा से, गल जाये तो अच्छा।।
करने को तो करते हैं, हर रोज सामायिक।
सामायिक जीवन में, उतर जाये तो अच्छा।।
सोयी है आत्मा मेरी, संसार-सुखों में।
समता की साधना से, जग जायें तो अच्छा।।

-2/175, जवाहरनगर, जयपुर-302004 (राज.)

परिचर्चा-स्तम्भ

संवाद

आधुनिक युग में समाज में विवाह सम्बन्धों को लेकर अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। कई बार ज्योतिष से जन्मपत्री नहीं मिलने के कारण विवाह नहीं होते हैं, तो कभी आयोजित विवाह से पूर्व ही लड़का या लड़की अन्य जाति के लड़के-लड़की से विवाह रचा लेते हैं, तो कभी लड़के-लड़कियाँ उपयुक्त वर-वधू नहीं मिलने के कारण तीस-पैंतीस वर्ष की आयु के हो जाते हैं। कभी विवाह हो जाने के पश्चात् कुछ माह/वर्षों में विवाह-विच्छेद की स्थिति बन जाती है। एक दूसरे को सन्देह की नज़र से देखा जाता है, परस्पर विश्वास उत्पन्न होना कठिन हो रहा है। गाँवों में लोग बेटियाँ देना पसन्द नहीं करते, तो कभी लड़कियाँ अधिक पढ़ी-लिखी एवं लड़के कम पढ़े लिखे होने से सम्बन्ध नहीं हो पा रहे हैं। आज स्वयं के धन्धे की अपेक्षा नौकरी पेशा वाले को प्राथमिकता दी जा रही है। ऐसा भी नहीं है कि लड़के-लड़कियों के मन में कोई वैराग्यभाव हो। लड़के-लड़की अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करना पहली प्राथमिकता समझते हैं तथा विवाह एक बन्धन की तरह समझा जा रहा है। इस प्रकार की अनेक समस्याएँ समाज को घेर रही हैं। समाज का प्रबुद्धवर्ग इन समस्याओं से परिचित भी है, किन्तु किंकर्त्तव्यविमूढ बना हुआ है। इससे समाज की व्यवस्था में विघटन उत्पन्न हो रहा है तथा भावी समाज का स्वरूप विखण्डित दिखाई देता है। इस प्रकार की विभिन्न समस्याएँ हैं, जिनका समय रहते समाधान खोजना हम सबका कर्त्तव्य है। 'संवाद-स्तम्भ' जिनवाणी में पुनः प्रारम्भ किया जा रहा है, ताकि हम सब मिलकर विभिन्न समस्याओं की गहराई में जाकर उनके समाधान खोज सकें, तथा समाज एवं युवापीढ़ी की कुछ अंशों में रक्षा कर सकें। इस सम्बन्ध में श्री नरेन्द्र कक्कड़, जयपुर द्वारा प्रेषित लेख से उठे निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर आप 15 फरवरी, 2013 तक **'जिनवाणी कार्यालय'**, श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुमार छात्रावास के सामने, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.) के पते पर भिजवाकर अनुगृहीत करें। उपयोगी उत्तरों का जिनवाणी में प्रकाशन किया जायेगा।

प्रश्न 1. विवाह-सम्बन्ध के लिए क्या जन्म-पत्रियों का मिलान आवश्यक है? क्या मात्र नामों के आधार पर राशि का मिलान करने से विवाह सम्बन्ध हो सकता है? दो पण्डितों के अलग-अलग मत होने पर आपके निर्णय का आधार क्या रहेगा? क्या जन्म-पत्रियों के मिलान से किए गए सभी विवाह सफल होते हैं?

बाल-स्तम्भ

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की करुणा

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 15 फरवरी 2013 तक श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुमार छात्रावास के सामने, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

पौष कृष्णा दशमी* को जन्मे तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के युग में अज्ञान जनित साधनाओं का बाहुल्य था। धर्म के नाम पर कई तरह की विकृतियों को प्रश्रय देना, उस युग में सामान्य बात हो गई थी। भद्रजन-मानस को धर्म के नाम पर ठगना, तथाकथित धर्म गुरुओं का प्रमुख कार्य बन गया था।

उन्हीं दिनों का एक प्रसंग है। कमठ नामक एक तापस तपस्या के नाम पर धूनी रमा रहा था। लकड़ियाँ जलाकर वह उसके ताप से अपने-आपको तपा रहा था। हजारों लोगों की भीड़ कमठ तापस के दर्शनों के लिए बरसाती नदी की तरह उमड़ती चली जा रही थी। राजकुमार पार्श्व भी घूमते हुए वहीं पहुँच गए, जहाँ कमठ तपस्या कर रहा था। कुमार पार्श्व ने वहाँ पर धूनी में जल रहे एक बड़े लक्कड़ के पोलार में अपने ज्ञान से नाग-नागिन का जोड़ा देखा। उनका करुणापूरित हृदय इसे सहन नहीं कर पाया। उन्होंने तापस को चुनौती देकर उसकी इस तथाकथित तपस्या को अधर्म की संज्ञा देते हुए विरोध किया।

कुमार पार्श्व की इस बात को सुनकर कमठ आगबबूला हो उठा। क्रुद्ध स्वरों में वह कुमार पार्श्व से कहने लगा-"यहाँ से चले जाओ, अन्यथा अभी तुम्हें भस्म कर दूँगा।" इस तरह के आतंक और भय की वह वृष्टि कर रहा था। कुमार पार्श्व की बात में सच्चाई थी। वे कमठ के क्रोध से कंपित होने वाले नहीं थे। तत्काल कुमार पार्श्व ने जलती धूनी से दग्ध हुए नाग-नागिन को निकालकर उनके प्राणों की रक्षा की। अर्द्धदग्ध नाग-नागिन अपूर्व शान्ति के साथ मरण को प्राप्त हुए। अंत समय में निर्मल भावों के बल पर देवलोक में

*इस बार यह तिथि 7 जनवरी, 2013 को उपस्थित हो रही है।

धरणेन्द्र देव एवं पद्मावती देवी के रूप में समुत्पन्न हुए।

तापस कमठ ने अपने मन में प्रतिशोध की गाँठ बाँध ली। उसने निश्चय कर लिया कि कुमार पार्श्व ने मेरा अपमान किया है। अतः मैं इस अपमान का बदला अवश्य लूँगा। कमठ मरकर मेघमाली देव के रूप में पैदा हुआ। जब राजकुमार पार्श्व दीक्षित हो गए एवं विपिन में ध्यान-साधना में लीन थे, उस समय अवसर देखकर मेघमाली देव के रूप में उसने मूसलाधार वर्षा की। उद्देश्य यही था कि पार्श्वनाथ को मरणांतक कष्ट दिया जाय।

उसने इतनी जबर्दस्त वर्षा की कि चारों ओर पानी-ही-पानी हो गया। पानी प्रभु पार्श्वनाथ के शरीर के ऊपरी भाग तक आ पहुँचा। अपने उपकारी पार्श्वनाथ को इस स्थिति में देखकर नाग धरणेन्द्र ने देव के रूप में छत्र बनकर और नागिन ने पद्मावतीदेवी के रूप में कमल बिछाकर पार्श्व प्रभु के प्रति अपनी भक्ति प्रकट की।

मेघमाली देव प्रभु को सता रहा था और धरणेन्द्र-पद्मावती प्रभु पर आए संकट को दूर करने के लिए तत्पर थे, पर प्रभु पार्श्व समभाव में लीन थे। उनके मन में मेघमाली के प्रति किसी तरह का द्वेष नहीं और धरणेन्द्र-पद्मावती के प्रति थोड़ा-सा भी राग नहीं था। राग और द्वेष दोनों ही परभाव हैं। परभाव में दुःख है, जबकि समभाव और स्वभाव में सुख है।

भगवान पार्श्वनाथ ने विचार शून्य आचार को, ज्ञान और विवेक शून्य क्रिया-काण्डों को जरा भी महत्त्व नहीं दिया। उनका स्पष्ट अभिमत था कि जो भी क्रिया की जाए, वह क्रिया विवेक और ज्ञान से जुड़ी हुई होनी चाहिए। जिस क्रिया के साथ ज्ञान नहीं होता, वह क्रिया निरर्थक सिद्ध होती है। कहा भी है-

यदि विवेक की ज्योति नहीं है, अंधकार अति अंधकार है।
उग्र उग्रतम क्रिया-काण्ड भी, बुझे दीप-सा सब असार है।।

आज समाज में क्रियाओं की बाढ़ सी आ रही है। क्रियाएँ निश्चित रूप से होनी चाहिए। क्रियाओं की आराधना से किसी को तनिक भी विरोध नहीं होना चाहिए, पर वे क्रियाएँ स्वीकार्य नहीं हो सकती, जिनका आराधना के साथ ज्ञान नहीं है अथवा उनमें केवल साम्प्रदायिक विधि-निषेध, कषाय और विषमता की वृद्धि के हेतु हैं। इस ओर जागरूकता के साथ ध्यान दिया जाना चाहिए। भगवान पार्श्वनाथ की जन्म-जयंती के अवसर पर हमें चाहिए कि हम ज्ञान के पक्ष को सम्यक् बनाने के लिए प्रयत्नशील बनें। ज्ञान का पक्ष जिस साधक का सम्यक् बन जाता है वह स्वयं भी तिरता है एवं अन्यों को भी भव पार होने में सम्बल का कार्य करता है। ज्ञान और विवेक हैं तो जीवन में सब कुछ है। ज्ञान और विवेक के लुप्त होने पर जीवन में एक ऐसा भटकाव प्रारम्भ होता है कि व्यक्ति जन्म-जन्मान्तरों तक दुःखों का शिकार बनता चला जाता है।

ज्ञान का बल श्रद्धा से प्राप्त होता है। इसलिए यथार्थ एवं सही जीवन जीने वालों के लिए श्रद्धा भी आवश्यक है। श्रद्धा में बहुत बड़ी शक्ति होती है। हमारी साधना श्रद्धाभाव से परिपूर्ण होनी चाहिए। श्रद्धा से असंभव कार्य को भी संभव किया जा सकता है। कवि की भाषा में-

आँखों में अगर मुस्कान है तो इंसान तुमसे दूर नहीं।
पांखों में अगर उड़ान है तो आसमान तुमसे दूर नहीं।
शिखर पर बैठकर विहग ने यही गीत गाया-
श्रद्धा में अगर जान है तो भगवान तुमसे दूर नहीं।।

पार्श्वनाथ जयंती हमें प्रतिवर्ष सेवा-श्रद्धा-साधना की त्रिवेणी में अवगाहन कर पवित्र बनने की सौगात देती है। हम पार्श्वप्रभु को श्रद्धा भाव से स्मरण कर उनका संगान करें और व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र में अमन चैन की सदैव शुभ भावना भाएं।

प्रश्नः-

1. पिछले वर्ष 2011 में पौष कृष्णा दशमी को क्या वार एवं दिनांक थी?
2. कमठ तापस किस प्रकार तपस्या कर रहा था?
3. विलोम शब्द लिखिए- विकृति, क्रोध, समभाव, विरोध, संभव, अपमान, वृद्धि।
4. अर्थ बताइये- विपिन, करुणापूरित, मूसलाधार, क्रिया-काण्ड, जन्मान्तर, पांख, अवगाहन, संगान।
5. प्रतिशोध की गाँठ बाधने से क्या अभिप्राय है?
6. अविवेक से किए गए कार्य परेशानी के कारण बनते हैं। उदाहरण देकर समझाएँ।
7. इस कहानी के आधार पर तीर्थंकर पार्श्वनाथ की विशेषताएँ लिखिए।

बाल-स्तम्भ [नवम्बर-2012] का परिणाम

जिनवाणी के नवम्बर-2012 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'त्रिविध मनुष्य' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 43 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 30 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	अर्पित जैन-जोधपुर(राज.)	26.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	रुचिका श्रीश्रीमाल-जोधपुर (राज.)	26
तृतीय पुरस्कार- 150/-	स्नेहा खींचा-जयपुर (राज.)	25.5
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	अतिका मेहता-जोधपुर (राज.)	25
	तनिष्क जैन-आलनपुर-सवाईमाधोपुर(राज.)	24.5
	विशाल सिंघवी-जोधपुर (राज.)	24.5
	सात्विक जैन-जयपुर (राज.)	24
	नवीन बैद-भीनासर, बीकानेर(राज.)	23.5

बाल-कविता

कम खाना, गम खाना, नम जाना

डॉ. दिलीप धींग

बड़े काम की बात बताऊँ, सन्तों से इसको जाना।
गाँठ बाँध लो अपने मन में, कम खाना, गम खाना, नम जाना।।

कम खाने से सेहत अच्छी, तप ऊनोदरी हो जाता है।
हल्के-फुल्के रहते तन-मन, आलस दूर भगाता है।
खाने में ऐसा विवेक हो, ना हो जूठन एक भी दाना।
कम खाना, गम खाना, नम जाना।।1।।

गम खाने से घर चलता है, गम खाने से समाज चलता।
टल जाती है खटपट सारी, सदा प्रेम का दीया जलता।
यह भी तप है बड़ा अनूठा, जिसने जाना, उसने माना।
कम खाना, गम खाना, नम जाना।।2।।

जहाँ बजे नहीं प्रेम बाँसुरी, वह परिवार उजड़ता है।
रुके उन्नति उस समाज की, जो प्रपंच में पड़ता है।
गम का अर्थ समर्थ है बनना, गम से क्षमा-धर्म पाना।
कम खाना, गम खाना, नम जाना।।3।।

छोटा जीवन, काम बहुत हैं, अकड़ नहीं है अच्छी बात।
विनय सभी को प्यारा लगता, अहंकार का छोड़ो साथ।
अनुशासन का बीज विनय है, बोना, मीठे फल खाना।
कम खाना, गम खाना, नम जाना।।4।।

तीन सूत्र अनमोल रत्न हैं, फिर भी लगता कुछ नहीं दाम।
बड़े ध्यान से इन्हें संभालो, पग-पग पर आएँगे काम।
बड़े मजे से जीवन चलता, जैसे हो संगीत सुहाना।
कम खाना, गम खाना, नम जाना।।5।।

-सीईओ-ए.टी.फाउंडेशन, 53-बी, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित
'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (30) का परिणाम

आगम सूत्र, लेख-प्रलेख से, स्तम्भों से ज्ञान का वर्द्धन।
प्रतियोगिता से सार-संभाल, पढ़ी बातों का हुआ संरक्षण।।
पढ़कर के कुछ पाया ही पाया, अंकों से क्या फर्क पड़े।
स्वाध्याय का लक्ष्य लेकर के, जिनवाणी को सदैव पढ़ें।।

जिनवाणी के नवम्बर-2012 के अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (30) में 105 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के अगस्त-सितम्बर-अक्टूबर-2012 के अंकों पर आधारित थी। परिणाम लक्की ड्रॉ के आधार पर निकाला गया है। परिणाम इस प्रकार है-

प्रथम पुरस्कार- 1100/- रुपये भगवानराज सिंघवी-पाली (47)

द्वितीय पुरस्कार- 750/- रुपये राजुल आर कोठारी-धुलिया (47)

तृतीय पुरस्कार- 500/- रुपये (प्रत्येक) बेबी जैन-भरतपुर (47)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये (प्रत्येक)

विद्या संघवी-बदनावर	(47)	दिलखुशराज जैन-बड़ौदा	(47)
पंकज जैन-सोडाला	(46.5)	नीति संघवी-बदनावर	(46.5)
हेमराज सुराणा-जयपुर	(46.5)		

अन्य 46.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-बबीता जैन-भरतपुर, जया जैन-भरतपुर, प्रवीणचन्द जैन-हिण्डौन सिटी, डॉ. पदमचन्द मुणोत-जयपुर, कमलादेवी सेठिया-मसूदा।

46 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:- पूर्णिमा तलेसरा-वापी, मंजुला जैन-भायंदर, रतनचन्द मेहता-जोधपुर, मंगला गादिया-चालीसगांव, विद्या संचेती-जोधपुर, अंजली जैन-हिण्डौन सिटी, चन्दनमल पालरेचा-जोधपुर, पुष्पा गोलेच्छा-ब्यावर, प्रमिला बोहरा-जैतारण, चित्रा जैन-आलनपुर, गीता जैन-जालन्धर, अनुराग सुराणा-अजमेर, कपिल कोठारी-जयपुर, भारती मंडलेचा-पूना, धर्मेन्द्र जैन-सवाईमाधोपुर, उपमा चौधरी-अजमेर, सरोज नाहर-दिल्ली, सरिता गाँधी-पीपाड़ सिटी, हेमलता जैन-ब्यावर, ज्ञान कोठारी-अजमेर, कमलेश गेलड़ा-अजमेर, वीरेन्द्र कुम्भट-जोधपुर, विजयलक्ष्मी-अजमेर, जयमाला कांकरिया-पाली, किरण कुम्भट-जोधपुर, राजकुमार बांठिया-पाली, पारसमल बाघमार-पाटोदी, नीलम जैन-अजमेर, हेमा जैन-जयपुर।

45 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-विनिता जैन-सवाईमाधोपुर, सीमा जैन-सवाईमाधोपुर, अनिल जैन-लाडपुरा, सरोज रूणवाल-धुलिया, शशिकला लुणावत-नासिक, भूमि सिंघवी-जोधपुर, श्रेया मेहता-जोधपुर, अमीता जैन-इन्दौर, सुरेशचन्द जैन-खेरली, सुधीर कुमार जैन-फरीदकोट, भरतसिंह जैन-जयपुर, सैना जैन-कुश्तला, निर्मला सुराणा-बीकानेर, सोनाली बेदमुथा-धुले, जयमाला जैन-सवाईमाधोपुर, पंकज जैन-सवाईमाधोपुर, सोनल अलीझाड़-नासिक, वर्षा जैन-सवाईमाधोपुर, सपना जैन-आलनपुर, कंवलराज मेहता-जोधपुर, नेणचन्द बाफणा-जोधपुर, सुषमा सिंघवी-जोधपुर।

44 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-जेठमल जैन-जोधपुर, मोनिका जैन-सुल्तानपुर, लता आंचलिया-धुलिया, प्रमिला पोखरणा-धुलिया, कविता बांठिया-जोधपुर, निर्मला लुणावत-पुणे, पारस जैन-वल्लारी, शिल्पा सुराणा-अजमेर, राकेश सिंघवी-जोधपुर, अंजू संचेती-अजमेर।

43 अंक एवं इससे कम अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:–मुन्नालाल भण्डारी–जोधपुर, सुगनचन्द छाजेड़–जोधपुर, राजेन्द्र जैन–भुसावल, चेरी बोहरा–जोधपुर, बाबूलाल जैन–भरतपुर, रेणु बोहरा–दिल्ली, शालिनी जैन–आगरा, सविता बोहरा–जोधपुर, सुनीता कुमठ–अजमेर, वनमाला राठौड़–धुले, रोमा मेहता–जोधपुर, सोना छाजेड़–अजमेर, जौहरीमल छाजेड़–जोधपुर, पदमचन्द गाँधी–जोधपुर, आर.टी.जैन–भुसावल, शोभा सुराणा–चेन्नई, शकुंतला खींवसरा–अमलनेर, देवेन्द्रनाथ मोदी–जोधपुर, कमला मोदी–जोधपुर, पुष्पा गाँधी–जोधपुर, संतोष सिंघवी–जोधपुर, दिलरूपचन्द भंडारी–जोधपुर, सरोज खाबिया–मैसूर, सुनील जैन–मैसूर, संगीता खाबिया–मैसूर, विमला एन. मेहता–जोधपुर, पीरचन्द चौरड़िया–जोधपुर, दिपा बोरा–जलगांव, श्रीमती मोहन लोढ़ा–अजमेर।

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (30) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं –

प्र.	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	प्र.	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
1.	मित्ती	सितम्बर/17	2.	भोगों	अक्टूबर/10
3.	कारक	सितम्बर/70	4.	सत्संग	अक्टूबर/08
5.	वाद	सितम्बर/52	6.	दुष्कर	अगस्त/11
7.	तिरेगा	अक्टूबर/13	8.	शमन	सितम्बर/42
9.	दर्शन	अगस्त/19	10.	अयोगी	अक्टूबर/38
11.	यश	सितम्बर/12	12.	अज्ञान	अगस्त/30
13.	असुविधा	अक्टूबर/45	14.	आदर	अगस्त/39
15.	क्लेशमय	अक्टूबर/40	16.	पचा	अगस्त/70
17.	जीवन प्रगति हेतु	अगस्त/72	18.	आक्रोश/आतंक	सितम्बर/78
19.	समाज	अक्टूबर/13	20.	ज्योतिष	अगस्त/86
21.	शाकाहार	सितम्बर/62	22.	भावना	अक्टूबर/18
23.	गुरु	अगस्त/22	24.	सती	अक्टूबर/43
25.	शब्द	सितम्बर/80			
26.	स्नातक में सयोगी केवली	अक्टूबर/39			
27.	अच्छवि स्नातक	अगस्त/61	28.	अनुप्रेक्षा	सितम्बर/11
29.	सच्चा साधक	अक्टूबर/56	30.	क्षमा	अगस्त/12
31.	सत्य	सितम्बर/26	32.	गणधर	सितम्बर/30
33.	लब्धि	सितम्बर/29	34.	अभ्युत्थान	अक्टूबर/24
35.	औषधि	अगस्त/39			
36.	श्रोत्रेन्द्रिय/श्रवणेन्द्रिय/कान	सितम्बर/71			
37.	प्रत्याख्यान	अगस्त/44	38.	कामना	सितम्बर/66
39.	प्रकाश	अक्टूबर/45	40.	वीर	अक्टूबर/07
41.	लोकैषणा	अगस्त/32	42.	गुरुकृपा	सितम्बर/74
43.	सम्मेलन	अक्टूबर/99	44.	विचार	अगस्त/68

45. समय अक्टूबर/49 46. अविनय अगस्त/29

47. अहिंसा सितम्बर/62 48. पुलाक सितम्बर/49

49. "दक्षता" = कला
"बदल" = परिवर्तन जैसे विष का अमृत में।
अतः उचित शीर्षक 'विष को अमृत बनाने की कला' अक्टूबर/14

50. "योग" = वाणी (वचन)
"नियंत्रण" = संयम
अतः उचित शीर्षक 'वाणी का संयम' अक्टूबर/47

-नमन सुमतिचन्द मेहता, पीपाड़ (राज.)

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

गुरु फरमाते हैं

श्री पीयूष गुप्ता

(तर्ज:- हमारी शादी में.......।)

गुरु फरमाते हैं, जीवन के तत्त्वों का सार,
जो भी यह सुनता है, वह हो जाता है भव से पार,
श्रद्धा से सुनते हैं, गुरु के वचनों को नर-नार,
तो सुन लो ओऽऽ.....।। टेर।।

इस संसार से वैरागी ये हीरा गुरुवर हैं,
ज्ञानी ध्यानी आचार्य ये कल्प तरुवर हैं।
दरश की जल्दी है, हृदय में श्रद्धा बहुत अपार,
हम तो श्रावक हैं, गुरुवर पालें पाँच आचार,
गुरु की वाणी से, हो जाए जीवन उद्धार,
तो सुन लो ओऽऽ.....।। 1।।

हीरा गुरु दिखाते हैं हमें मोक्ष मार्ग की राह,
जो चरणों में आया उसको नहीं किसी की चाह।
ज्ञान को पाकर हम, हो गए धन्य बहुत ही आज,
हीरा गुरु का तो, प्रवचन का अद्भुत अंदाज,
गुरुवर करते हैं, इस 'पीयूष' के दिल में राज।
तो सुन लो ओऽऽ.....।। 2।।

-आचार्य हस्ती आ. शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (33)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह छट्ठी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 फरवरी 2013 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.301 से 375 तक से प्रश्न)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये:-

1. ....के शासनकाल में जैन धर्म खूब फला फूला।
2. भगवन्! वह आचार्य........गति से क्यों नहीं चला?
3. वेल्लूर ताल्लुक के .... के पास धरित्रि फट गई।
4. तीसरा वर्ग मूर्ति पूजा का .... ही विरोध करता है।
5. राजाओं के धर्म प्रेम से प्रेरणा लेकर प्रत्येक जैन ....की सेवा का व्रत ले सके।
6. हे भगवन्! ....का अध्ययन किस विधि से करें।
7. प्रसुत .... का नाम विजय नरसिंह देव रखता हूँ।
8. यात्रा में जाने वाले .... के दोष से लिप्त हो जाते हैं।
9. जिन .... से पत्थर निकाले गये वे .... आधे हो गये।

10. विष्णुवर्द्धन के आठों ही सेनापति आदर्श ....थे।

निम्नांकित के पर्यायवाची शब्द लिखिये:-

11. सन्यसन
12. अंगडि
13. हन्तूर
14. तप्त मुद्रा
15. जीर्णोद्धार

संख्या में उत्तर दीजिये:-

16. गंगवाडी .... को कोपण के समान चमकाया।
17. परन्तु साध्वी ....वस्त्र (चादरें) धारण करें।
18. भगवान् शान्तिनाथ की .... फुट ऊँची मूर्ति की प्रतिष्ठा की।
19. .... शिष्य तीर्थ यात्रा के लिए प्रस्थित हुए।
20. ....पैगोड़ा प्रतिवर्ष की आय वाले गांव भी दे देंगे।

इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये:-

21. विक्रमादित्य 'षष्ठ' के वंशवर्ती राजा 'चालुक्य राज' के गुरु का नाम क्या था?
22. गृहस्थ कौन से स्वर्ग तक जा सकता है?
23. विष्णुवर्द्धन के लिए कौन सा विशेषण प्रयुक्त किया गया?
24. किनके प्रयास आंशिक रूप में ही सफल हुए थे?
25. साहसी, शक्तिशाली और लोकप्रिय 'नरेश' कौन थे?

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (31) का परिणाम

जिनवाणी नवम्बर, 2012 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 173 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- चेतना बी. बोथरा-मलाड-मुम्बई (महा.)

द्वितीय पुरस्कार- अरूणा संजीव जैन-होशियारपुर (पंजाब)

तृतीय पुरस्कार- कमला सिंघवी-जयपुर (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. कल्पना अजयकुमार धाकड़-गुडगांव (हरियाणा)

2. कन्हैयालाल जैन-भीलवाड़ा (राज.)

3. लीना महेन्द्र जैन-चिपलोन,रत्नागिरी (महा.)

4. रीमा दिनेश जैन-लुधियाना (पंजाब)

5. सुरेशचन्द जैन-खेरली (राज.)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता- Smt.Vimala Bhansali-Surat, Aarti Rajendra Kumarji Mutha-Amravati, Amita Tamby-Jaipur, Anil Kumar Jain-Kota, Anita Atul Munot-Ichalkaranji, Anjana Devi-Coimbatore, Anshu jain-Beawar, Anurag Surana-Ajmer, Ashish Kumar Tater-Nagaur, Balwant Singh Chordia-Jhalara Patan, Bhagwan Raj Singhvi-Pali, Bharti Sandeepji Mandlecha-Poona, Bhavika M.Shah-Belgaum, Deepmala Singhvi-Pali, Devi Lal Bhanawat-Udaipur, Dharmesh punamia-Pali, Dilkhush Raj Jain-Vadodara, Dr.Padam Chand Munot-Jaipur, Gyan Kothri-Ajmer, H.Vinod jain-Shimoga, Hans Raj Jain Mohnot-Jaipur, Hema Kishore Bagmar-Secunderabad, Hema Kothari-Jaipur, Hemaj Surana-Jaipur, Hemlata Jain-Beawar, Indu Kamaleshji Jain-Mumbai, Jaya Bhandari-Beawar, Johari Mal Chajer-Jodhpur, Kamla Surana-Jodhpur, Kanak jain-Delhi, **Kanhaiya lal jain-Bhilwara**, Kiran Kothari-Jaipur, Kuntal Kumari Jain-Jaipur, Kusum Pareshji Ponmia-Ichalkaranji, Kusum Singhvi-Jodhpur, Lata S Aanchaliya-Dhule, Lekh raj Jain-Ajmer, M.Shakuntala Devi Tater-Chennai, Maya Alijar-Secunderabad, Meena Bai Rajkumarji Nahar-Ichalkaranji, Meena Chordia-Chennai, Meenakshi Lodha-Gurgaon, **Mrs.Aruna Jain-Hoshiarpur, Mrs.Chetana B.Bothra-Mumbai, Mrs.Kamla Singhvi-Jaipur**, Natmal Kothri-Balod, Neetu Gulechha-Secunderabad, Nen Chand Bafna-Jodhpur, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nutan Ajitji Bhandari-Kolhapur, Padam Chand Gandhi-Jodhpur, Palak jain-Hyderabad, Pooja Jain-Chennai, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Prakash Bai Premchandji-Bhandara, Prakash Jain-Hyderabad, Pramila B Pokarna-Dhulia, Pramila Vinod Kumar Bohra-Pali, Prem Jain-Alwer, Priya Mukeshji Chopra-Ichalkaranji, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, Pushpa Jain-Jaipur, R.T.Jain-Jalgaon, Raj Kumar Banthiya-Pali, Rajendra Tejmal Jain-Jalgaon, Ratan Karnawat-Jaipur, **Reema Jain-Ludhiana**, Rekha Kothari-Ajmer, Renumal jain-Jodhpur, Rikhab Raj Bohra-Delhi, Sadhana Dilipji Gugale-Ichalkaranji, Sangita Satish Chhajed-Jalgaon, Sarla Rameshji Jian-Jalgaon, Saroj Nahar-Delhi, Seema Dhing-Udaipur, Shabnam Khan-Jaipur, Shakuntala Bohra-Secunderabad, Shashikala Pradeepji Lunawat-Nasik, Shilpa P Surana-Jalgaon, Shilpa Surana-Ajmer, Shobha Nahar-Secunderabad, Shobha Nandalalji Gugale-Ichalkaranji, Smt. Harsha Jain-Pali, Smt. Kamalesh Gailda-Ajmer, Smt. Lad Devi Hirawat-Jaipur, Smt. Milap .p. Lunawat-Ahmedabad, Smt.Chanchal Gollechha-Jaipur, Smt.Chandrakala Dilipji Ranka-Jalgaon, Smt.Chandrakala Mehta-Bangalore, Smt.Chandralata Mehta-Jaipur, Smt.Jyoti Bhansal-Bangalore, **Smt.Kalpana Dhakad-Gurgaon, Smt.Leena Mahendra jain-Chiplon,** Smt.Madhuji Pipda-Bhilwara, Smt.Manju N.Bafna-Jalgaon, Smt.Neelamji Chippad-Dudu, Smt.Pramila Kailash Kothari-Jodhpur, Smt.Pramila Mehta-Jaipur, Smt.Prem Lata Lodha-Jaipur, Smt.Sapna Hinger-Mysore, Smt.Vidya sanghvi-Badnawer, Smt.Vimla Mehta-Jodhpur, Sudha Daga-Bikaner, Sugan Chand Chajjed-Jodhpur, Sunita Doshi-Beawar, Sunita Navlakha-Kota, Sunita Singhvi-Chennai, **Suresh Chand Jain-Kherli (Raj)**, Suresh kumar Saand-Pali, Sushila Tater-Bhilwara, Suvarna Nitinji Bora-Kolhapur, Tanuja Prashant Kothari-Dhule, Upma Chodhary-Ajmer, Vandana

Punamia-Pali, Vidhya Sanghvi-Badnawer, Vijaya Lakshmi Munot-Jaipur, Vijaya Laxmi-Ajmer, Vimal Ranulal Kochar-Nasik.

24 अंक प्राप्तकर्ता- Aditya Kumar Jain-Nagpur, Babu Lal Jain-Bharatpur, Basanta Madanlalji Sanklecha-Dhuliya, Dal Chand Jain-Jaipur, Ghewarchand Chhajed-Bellary, Icheraj D Banthiya-Sirkali, Kamal Chordia-Jaipur, Khimji R.Shah-Mumbai, Kusum Bafna-Chennai, Lad Mehta-Bhilwara, Leela Prakashchandji Munot-Ichalkaranji, Madhubala Pramodkumarji Bohra-Ichalkaranji, Manila Parakh-Jaipur, Mrs.Renu Virendra Jain-Mumbai, Neelam Jain-Gurgaon, Nirmala H.Surana-Bikaner, Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Nirmalaji Lunawat-poona, Paras Chand Jain-Bharatpur, Pawan Jain-Belgaum, Premlata Saand Pali-Priti Gugaliya-Bhilwara, Pushpa Surana-Jaipur, Rajendra Kumar Chopra-Jabalpur, Rajkumarji Lodha-Jaipur, Ratan Chand Mehta-Jodhpur, Rohit Oswal-Jaipur, Shanta Mahendraji Bafna-Nasik, Shrenik Rajendra Jain-Jalgaon, Shri R.T.Jain-Bhusawal, Smita Nileshji Muthiyan-Ichalkaranji, Smt. Tarakumari Runiwal-Jaipur, Smt.Pista Golecha-Jaipur, Smt.Prasan P.Gang-Mumbai, Smt.Seema Kothari-Balod, Smt.Shiromani Jain-Shajapur, Smt.Siddhi Kothari-Balod, Smt.Sushila Devi Begani-Bikaner, Sunita Oswal-Jaipur, Ugam Mulchand Dosi-Secunderabad, Ugama Devi Dugar-Bangalore, Usha Lunawat-Ajmer, Veena Jain-Delhi, Veenaji Tarunji Kimtee-Rampura (M.P), Vijaya Devi Rikabchandji Bagmar-Gajendragad, Vikram Kumar Chopra-Coimbatore.

23 या उससे कम अंक प्राप्तकर्ता- Tarachandji Hemant Kumar Tater-Nagaur, Manju Dilip Jain-Mumbai, Prabha Gulecha-Bangalore, Pushpa Devi Bardia-Jaipur, Smt.Mohan Bai Prakashmal Lodha-Ajmer, Trupti Pritamji Bora-Ichalkaranji, Vasantha Bai-Hospet, Pramila Mehta-Ajmer, Nilima Yogeshji Chopra-Ichalkaranji.

बुढ़ापा : एक अच्छा अवसर

श्री गुलाबचन्द जैन

सदा सीखने की भावना रखने वाला व्यक्ति कभी बूढ़ा नहीं होता। साथ ही साथ भोजन कम खाना, नियमित घूमना, जन-जन की सेवा करना, स्वयं के दैनिक कार्यों को स्वयं सम्पन्न करना बुढ़ापे के प्रभाव को रोकता है तथा व्यक्ति अपने को युवा अनुभव करता है। बुढ़ापे को उम्र से नहीं आंकना चाहिए। अब बूढ़े हो गये, यह सोचकर अपने को दुःखी करना निहायत गलत है। समय के साथ उम्र का बढ़ना नियति है, किन्तु महसूस न हो तो बुढ़ापा प्रभावित नहीं करता। बुढ़ापे को सही मायने में जीने के लिए अपने अहम् को छोड़कर फिजूल सोच को बदलना आवश्यक है-

(1) जीवन एक चुनौती है- इसे स्वीकारें
(2) जीवन एक सपना है- महसूस कीजिए और पूरा कीजिए
(3) जीवन एक वादा है- निभायें
(4) जीवन एक मौका है- लाभ उठाइये

-51, वन विहार कॉलोनी, टोंक रोड़, जयपुर

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

द्रव्य लोकप्रकाश (लोकप्रकाश-भाग प्रथम), ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) दूरभाष-0141-2575997, 2571163, फैक्स-2570753, Email-sgpmandal@yahoo.in, ***पृष्ठ***- 8+580 (बड़ा आकार), ***मूल्य***-100 रुपये मात्र, प्रथम संस्करण-2012

उपाध्याय विनयविजय जी द्वारा 17 वीं शती ई. में 'लोकप्रकाश' नामक विशालकाय ग्रन्थ की 37 सर्गों एवं लगभग 18000 संस्कृत श्लोकों में रचना की गई। यह ग्रन्थ प्रायः समग्र जैनदर्शन का प्रतिपादक ग्रन्थ है, क्योंकि इसमें द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, चरणानुयोग एवं धर्मकथानुयोग की विषय वस्तु उपलब्ध है। विनयविजय जी ने लोकप्रकाश में द्रव्यलोक, क्षेत्रलोक, काललोक एवं भावलोक का विशद एवं व्यापक विवेचन किया है। उसी लोकप्रकाश के प्रथम भाग 'द्रव्यलोकप्रकाश' का हिन्दी अनुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा उपलब्ध कराया गया है, जिससे जैनधर्म के तात्त्विक ज्ञान के जिज्ञासु लाभान्वित हो सकेंगे। प्रथम भाग में 11 सर्ग तथा 3297 श्लोक हैं, जिनमें षड्द्रव्यों के अन्तर्गत मुख्यतः जीव एवं पुद्गल के विविध भेदों का विविध दृष्टियों से विवेचन हुआ है। प्रथम सर्ग में उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुल का तथा संख्यात, असंख्यात एवं अनन्त का निरूपण है। द्वितीय सर्ग में क्षेत्रापेक्षया लोक का स्वरूप निरूपित करते हुए सिद्धों की अवगाहना आदि का विवेचन है। तृतीय सर्ग में भेद, स्थान, पर्याप्ति, योनि आदि 37 द्वारों से संसारी जीवों का विवेचन किया गया है। चौथे सर्ग से लेकर दसवें सर्ग तक एकेन्द्रिय जीवों से लेकर पंचेन्द्रिय जीवों का, स्थावर से लेकर नारक एवं देवों का विविध दृष्टियों से विवेचन किया गया है। दसवें सर्ग में भव संवेध एवं कर्मसिद्धान्त विषयक निरूपण भी उपलब्ध है। ग्यारहवें सर्ग में पुद्गलास्तिकाय का विशद विवेचन हुआ है।

लोकप्रकाश ग्रन्थ का यह वैशिष्ट्य है कि इसमें आगमों एवं उत्तरकालीन साहित्य का आधार लेकर विषय का प्रतिपादन किया गया है। मूल ग्रन्थों से उद्धरण भी प्रस्तुत किए गए हैं। मान्यता भेद का उल्लेख भी उन्होंने निष्पक्ष रीति से किया है।

जैनधर्म के सम्बन्ध में विशेष तत्त्वजिज्ञासु साधु-साध्वीवृन्द, विरक्त एवं विशिष्ट स्वाध्यायी श्रावक इस ग्रन्थ से आगमों का सार प्राप्तकर अपने ज्ञान को व्यवस्थित कर सकते हैं। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल ने उदारता का परिचय देकर सम्राट् अकबर के प्रतिबोधक श्रीमद् हीरविजयसूरि की शिष्य परम्परा के सन्त उपाध्याय विनयविजय जी के

ग्रन्थ का प्रकाशन कर जैन तत्त्वज्ञान को हिन्दी पाठकों के लिए सुलभ बनाया है। हिन्दी अनुवाद का कार्य श्री चमनलाल जी मूथा, रायचूर एवं मुमुक्षु सुश्री नेहा ईश्वरलाल जी चोरड़िया, जलगांव ने सम्पन्न किया है।

जैन चरणानुयोग- साध्वी डॉ. विजय श्री आर्या, ***प्रकाशक***- श्री दिवाकर प्रकाशन, ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम.जी.रोड़, आगरा-282002 दूरभाष-0562-2851165, मो. 9319203291, ***पृष्ठ***-208 (बड़ा आकार), ***मूल्य***-250 रुपये, सन्-2012

उपाध्याय मुनि श्री कन्हैयालाल जी 'कमल' ने द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग एवं चरणकरणानुयोग- इन चारों अनुयोगों को आगमों के आधार पर तैयार किया था, जो प्रकाशित हैं। साध्वी डॉ. विजय श्री ने चरणानुयोग के प्राकृत मूल पाठ को छोड़कर हिन्दी में संक्षिप्त रीति से चरणानुयोग प्रस्तुत किया है। इसके अन्तर्गत ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार एवं वीर्याचार का सम्यक् निरूपण हुआ है। मात्र हिन्दी पढ़कर जैन आचार परम्परा को संक्षेप में जानने के इच्छुकों के लिए यह ग्रन्थ उपयोगी है।

जे अप्पा से परमप्पा (आत्मा ही परमात्मा है)-भाग-1 एवं भाग-2, ***संग्राहक***- जेठमल गुलेचा, प्राप्ति स्थान- 269, सरदारपुरा, 4 बी रोड़, जोधपुर-342003, फोन नं. 0291-2434681, मो. 09351315749, ***पृष्ठ***- 320+440, ***मूल्य***-नित्य स्वाध्याय, सितम्बर-2012

श्रावकरत्न श्री जेठमल जी गुलेचा द्वारा संग्रह करके अनेक नई पुस्तकें तैयार की गई हैं। उसी शृंखला में दोनों पुस्तकें भी विशिष्ट सामग्री से युक्त हैं। प्रथम भाग में आत्मा के विकासक्रम के अन्तर्गत पुद्गल परावर्तकाल, सम्यक्त्व, कर्मक्षय प्रक्रिया, चरमशरीरी, यथाख्यात चारित्र आदि की चर्चा के साथ उपयोगी सामग्री संयोजित की गई है। द्वितीय भाग में अरिहन्त एवं सिद्ध भगवन् के वैशिष्ट्य एवं उनसे सम्बद्ध विविध जानकारियाँ प्रस्तुत की गई हैं। दोनों भाग स्वाध्यायियों के लिए उपयोगी हैं तथा निःशुल्क उपलब्ध हैं। श्री गुलेचा अपने द्वारा पूर्व प्रकाशित पुस्तकों को भी घर तक पहुँचाने हेतु भावना रखते हैं।

जीवन निर्माण की बातें (भाग-1)- श्री पारसमल चण्डालिया, ***प्रकाशक***- श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, नेहरू गेट के बाहर, ब्यावर, Email-samyagdarshan@gmail.com फोन-01462-251216, ***पृष्ठ***- 108, ***मूल्य***-10 रुपये, जून-2012

चिन्तनशील स्वाध्यायी श्रावक तथा 'सम्यग्दर्शन' के सह सम्पादक श्री पारसमल जी चण्डालिया द्वारा 'सम्यग्दर्शन' पत्रिका में जो विचार नियमित रूप से प्रकाशित किए जाते रहे हैं, उन्हीं में 1000 विचारों का संकलन प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है।

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(31 दिसम्बर, 2012)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 11	: लाल भवन से विहारकर तख्तेशाही रोड़ स्थित रत्न स्वाध्याय भवन पधारे हैं। जयपुर के उपनगरों को फरसने की सम्भावना है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5	: वीर भवन, मेड़तासिटी में सुख-शांतिपूर्वक विराजमान हैं।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 7	: सरस्वती नगर जैन स्थानक विराज रहे हैं। जोधपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 10	: पिपलोन (शाजापुर-मध्यप्रदेश) विराज रहे हैं। बड़ौद होते हुए भवानी मण्डी की ओर अग्र विहार सम्भावित है।
तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	: स्वाध्याय भवन, मेड़तासिटी में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। अग्र विहार जोधपुर की ओर संभावित है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	: किशनगढ़ से विहारकर पाटन होते हुए दांतरी पधारे हैं। अग्र विहार दूदू, जयपुर की ओर संभावित है।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	: बूंदी से विहारकर बनावा होते हुए नया गांव पधारे हैं। अग्र विहार देई की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3	: वैशाली नगर अजमेर विराजमान हैं। अजमेर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7	: रत्न स्वाध्याय भवन, महावीर कॉलोनी विराजमान हैं। अजमेर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	: तख्तेशाही रोड़, जयपुर स्थित रत्न स्वाध्याय भवन के पास में चोरडिया सदन में विराजमान हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 9	: किशनगढ़ से अजमेर की ओर विहार चल रहा है। 1 जनवरी को वैशाली नगर अजमेर पधारने की संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	: कोयम्बटूर से विहारकर सुरूर पधारे हैं। अग्र विहार तिरूर होते हुए इरोड़ की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4	: पाण्डिचेरी से विहारकर कडनूर पधारे हैं अग्रविहार पनरूटी की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	: वर्धमान रेजीडेन्सी, औरंगाबाद विराज रहे हैं। अग्र विहार जालना (महाराष्ट्र) की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	: वर्धमान नगर, हिण्डौनसिटी सुख शान्ति-पूर्वक विराजमान हैं। हिण्डौन के आस पास के क्षेत्रों में विचरण की संभावना है।
सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	: तख्तेशाही रोड़, जयपुर स्थित रत्न स्वाध्याय भवन के निकट चोरडिया सदन में विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3	: इन्द्रगढ़ जिला-बूंदी विराजमान हैं। अग्र विहार सुमेरगंज मण्डी की ओर संभावित है।

आचार्यप्रवर का जयपुर के उपनगरों में विचरण

25 आजीवन शीलव्रती बने

27 जनवरी 2013 को जैन भागवती दीक्षा

परमाराध्य, परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.आदि ठाणा श्रीमती राजकंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक स्वाध्याय भवन, महावीर नगर के सवाये चातुर्मास को यादगार बनाकर 29 नवम्बर को मालवीय नगर पधारे। विहार में श्रद्धालुओं का उत्साह संकेत कर रहा था कि परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर के इस पंचमासीय वर्षावास से हजारों लोगों ने स्वयं को कृतज्ञ

अनुभव किया है। पूज्य आचार्यप्रवर मालवीय नगर में दो दिन विराजे तथा क्षेत्रवासियों को धर्मोपदेश से लाभान्वित किया। 1 दिसम्बर को पूज्य आचार्यप्रवर बजाजनगर स्थित आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पधारे। यहाँ पर संस्थान के अधिकतर बालकों ने एकाशन एवं उपवास की साधना की तथा रात्रि में संवर आराधना की। 2 एवं 3 दिसम्बर को लाल कोठी विराजकर वीतराग वाणी का वर्षण किया। 4 दिसम्बर को बापू नगर, 5 को तिलकनगर क्षेत्र को लाभान्वित कर आपश्री संतमण्डली के साथ 6 से 10 दिसम्बर तक जवाहर नगर विराजे सबको प्रवचनामृत तथा धर्माराधना से लाभान्वित किया। 11 दिसम्बर को आपश्री तिलक नगर, 12 दिसम्बर को आदर्श नगर, 13 दिसम्बर को तिवाड़ी का बाग, 14 दिसम्बर को भाभा मार्ग एवं 15 दिसम्बर को चौमू हाउस पधारे। सभी स्थानों पर श्रद्धालुओं के द्वारा दर्शन-वंदन एवं प्रवचन लाभ का क्रम बना रहा।

16 दिसम्बर को सोडाला के श्याम नगर द्वितीय में स्थित धर्म पार्क पधारे। यहाँ पर मानसरोवर संघ की भावभीनी विनति पर पूज्य गुरुदेव ने 25 जनवरी को पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103 वें जन्मदिवस तथा 27 जनवरी 2013 को मुमुक्षु आशा जी छल्लाणी की जैन भागवती दीक्षा पर मानसरोवर विराजने की स्वीकृति प्रदान की।

17 दिसम्बर से क्रमशः नित्यानन्द नगर, नेमिनाथ सागर कॉलोनी, पांच्या वाला, चित्रकूट होते हुए हीरापुरा पधारे। 21 दिसम्बर को भांकरोटा, केशवपुरा पधारे। यहाँ से निर्वाण नगर, स्वामी विहार कॉलोनी होते हुए 23 दिसम्बर को सोडाला के आराधना भवन में तथा सायंकाल सिविल लाइन्स पधारे। यह मौन एकादशी का दिवस था। 24 दिसम्बर को गौरव नगर एवं सी-स्कीम पधारे। गुरुदेव ने 5-7 दिनों में प्रातः एवं सायंकाल दोनों समय विहार किया। 25 दिसम्बर को सी-स्कीम विराजकर 26 दिसम्बर को आपका लाल भवन, चौड़ा रास्ता में पदार्पण हुआ। यहाँ पर 26 से 29 दिसम्बर तक आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के छात्रों का आध्यात्मिक शिक्षण शिविर आयोजित हुआ। 27 दिसम्बर को पक्खी एवं चतुर्थी होने से दयाव्रत, एकाशन एवं उपवास की अच्छी संख्या में आराधना हुई। स्वास्थ्य पूर्णतः समीचीन न होने पर भी गुरुदेव ने विभिन्न उपनगरों के श्रद्धालुओं की भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए सभी क्षेत्रों को विचरण से लाभान्वित किया।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर के इस प्रवासकाल में शीलव्रती बनाने का क्रम निरन्तर बना रहा। महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. की प्रेरणा से अनेक नये शीलव्रती तैयार हुए तथा पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत के 25 खन्द हुए।

उपाध्यायप्रवर सकारण मेड़ता में

शान्त-दान्त गम्भीर, श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर

व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से चातुर्मासोपरान्त मेड़ता विराज रहे हैं। श्रद्धेय श्री दर्शनमुनि जी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री जितेन्द्र मुनि जी म.सा. के ऑपरेशन के पश्चात् चिकित्सक के परामर्शानुसार विहार संभव नहीं है। चातुर्मास के पश्चात् भी यहाँ बालक-बालिकाओं का रविवारीय शिविर उत्साहपूर्वक चल रहा है। प्रवचन, प्रार्थना में आशातीत उपस्थिति बनी हुई है। तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 अजमेर का चातुर्मास सम्पन्न कर यहाँ पधार चुके है तथा व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा के भी पधारने की संभावना है।

27 जनवरी 2013 को मुमुक्षु आशा छल्लाणी की दीक्षा

पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से मानसरोवर, जयपुर में मुमुक्षु आशाजी छल्लाणी की जैन भागवती दीक्षा 27 जनवरी, 2013 को होना निश्चित हुआ है। (विस्तृत सूचना अलग से आर्ट पेपर पर दी गई है।) वे व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. के सान्निध्य में विरक्तावस्था में अध्ययन रत हैं।

संघ की संचालन समिति की बैठक 26 जनवरी 2013 को जयपुर में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर की संचालन समिति की बैठक शनिवार 26 जनवरी, 2013 को सायंकाल 7 बजे जयपुर में रखी गई है। सभी सम्बद्ध सदस्यों से निवेदन है कि वे बैठक में आवश्यक रूप से उपस्थित रह कर संघहित में अपना योगदान करें।

-आनन्द चौपड़ा, महामंत्री

स्वप्निका जागृति-दिवस 23 मई, 2013 को

गुरु हीरा-गुरु मान के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में 'स्वप्निका' पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। सभी प्रतिभागियों को सूचित करते हुए हम प्रसन्नता का अनुभव करते हैं कि पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 51 वें दीक्षा-दिवस वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 23 मई, 2013 को स्वप्निका जागृति-दिवस रखा गया है। इस दिन स्वप्निका पुस्तिका की 12.00 से 12.45 बजे तक खुली पुस्तक अभ्यास परीक्षा आयोजित की जाएगी, जिसमें 50 प्रश्न पूछे जायेंगे। अपने-अपने स्थलों पर निश्चित समय पर यह परीक्षा आयोजित होगी। मुख्य परीक्षा- 10 नवम्बर, 2013 को दोपहर 12.00 से 2.00 बजे तक सभी स्थलों पर आयोजित की जाएगी। खुली पुस्तक परीक्षा का मॉडल पेपर जिनवाणी के आगामी अंक में प्रकाशित होगा। **सम्पर्क सूत्र-** नमन मेहता (पीपाड़), स्वप्निका संयोजक, मोबाइल नं. 9414116766

'मान व्याख्यानमाला' प्रश्न पुस्तिका में संशोधन

'मान व्याख्यान-माला' खुली पुस्तक प्रतियोगिता के प्रश्नों को निम्न प्रकार पढ़ेंः-

प्रश्नावली-3 का 25 वाँ प्रश्नः- 7 अगस्त 2000 को 7 अक्टूबर 2002 पढ़ें।

प्रश्नावली-6 का 13 वाँ प्रश्नः- 'परिश्रम' शब्द को 'परिजन' पढ़ें।

प्रश्नावली-9 का 1 प्रश्नः- 'विज्ञान' शब्द को 'विद्वान' पढ़ें।

प्रश्नावली-11 का 2 प्रश्नः- 'धुवाइ' शब्द को 'धुणइ' पढ़ें।

प्रश्नावली-11 का 5 वाँ प्रश्नः- 'दृष्टम' के स्थान पर 'दृष्टम्' तथा 'नष्टा' के स्थान पर 'नष्टम्' पढ़ें।

प्रश्नावली-11 का 19 वाँ प्रश्नः- पुस्तक में छपे 'अगुणस्स' के स्थान पर 'अगुणिस्स' पढ़ा जाए।

प्रश्नावली-13 का 11 वाँ प्रश्नः- 'रिती' शब्द को 'रीति' पढ़ें।

प्रश्नावली-14 का 1 प्रश्नः- .... दी पढ़ें।

नोटः- उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि **28 फरवरी, 2013** कर दी गई है तथा परिणाम तिथि 10 अप्रेल, 2013 की गई है।

'आत्म-जागृति प्रतियोगिता प्रश्नावली' में संशोधन

उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अंतिम तिथि **15 फरवरी, 2013** कर दी गई है।

प्रश्न पुस्तिका में कतिपय संशोधन इस प्रकार हैं-

1. प्रश्नावली 8.- प्रश्न 3 'सन् 89' के स्थान पर 'संवत् 89' पढ़ा जाए।
2. प्रश्नावली 10.- जैन प्रतीक चिह्न का क्रमांक (5) है।
   10.- प्रश्न 17- एक राजा की रानी का नाम।
3. प्रश्नावली 12. (2) 23815677, (3) 32215467, (4) 41215467, (5) 25315467, (6) 52815467, (7) 1538674, (8) 687467, (9) 818467, (10)72351467, (11) 52145467, (14) 5264467, (15) 46253467, (16)13553467, (17) 62551467, (20) 6843467

प्रश्न पुस्तिका का मूल्य रुपये 20/- एवं डाक द्वारा रुपये 30/-

संदर्भ पुस्तिका : जैन तत्त्व प्रकाश, नवतत्त्व थोकड़ा।

प्रश्न पुस्तिका प्राप्ति स्थानः- (1) श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, घोड़ों का चौक जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2636763, (2) श्रीमती सुनीता मेहता, 467-ए, सातवीं 'ए' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर, फोनः 0291- 2640757, (3) मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर (राज.) फोनः 0141-2575997

स्वाध्याय-संगोष्ठियों का आयोजन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ द्वारा गुरुद्वय आचार्य हीराचन्द्र-उपाध्याय मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी के अवसर पर आचार्य भगवन्त पूज्य 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103 वें जन्म-दिवस 25 जनवरी, 2013 पर स्वाध्यायियों के द्वारा एक स्वाध्याय संगोष्ठी का आयोजन करने का आह्वान किया गया है। आप अपने ग्राम-नगर में व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण कर पूज्य गुरुदेव के गुणों का स्मरण करें तथा 'स्वाध्याय एवं स्वाध्यायी' की महत्ता विषय पर संगोष्ठी आयोजित करें। संगोष्ठी प्रातः 8.30 से 10.30 बजे तक अथवा अपनी सुविधानुसार आयोजित कर इसकी सूचना कार्यालय को अवश्य प्रेषित करें। सम्पर्क सूत्रः- **श्री राजेश भण्डारी**, सचिव (094610-13878)

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 30 जून 2013 को होगी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 30 जून 2013, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी।

सभी महानुभावों से निवेदन है कि क्रमिक वृद्धि एवं संस्कार-शुद्धि के इस आध्यात्मिक परीक्षा कार्य में अधिकाधिक भाई-बहिनों को जोड़ने का प्रयास करावें। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें- सुरेश बी.चोरडिया, संयोजक-094440-28841, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-093515-89694, कार्यालय (फोन)-0291-2630490, www.jainratnaboard.com., E-mail: info@jainratnaboard.com

अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में तथा गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी के अवसर पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबन्ध का विषय "**स्वाध्याय एवं स्वाध्यायी की महत्ता**" रखा गया है। इस प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के बालक, बालिका, श्रावक एवं श्राविकाएं भाग ले सकते हैं। स्वाध्यायी इस प्रतियोगिता में अवश्य भाग लें।

निबन्ध मौलिक एवं तथ्यात्मक हो एवं 1000 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को क्रमशः 1100/-, 500/- एवं 250/- का नकद पुरस्कार तथा 100/- के 10 सान्त्वना

पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा। निबन्ध भिजवाने की अन्तिम तिथि 28 फरवरी 2013 निर्धारित है। अपने निबन्ध कार्यालय के पते पर भिजवायें- **स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जाधेपुर-342001 (राज.)**, फोन नं. 0291-2624891, 9414267824

शल्य चिकित्सा एवं विशाल रक्तदान शिविर सम्पन्न

श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा चक्षु सेवा समिति के संस्थापक स्व. श्री पुखराज जी अबानी, जोधपुर के 50 वें पुण्य-दिवस पर विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन 23 दिसम्बर, 2012 को सम्पन्न हुआ। शिविर में 174 रक्तदाताओं ने रक्तदान कर सामाजिक उत्तरदायित्व का अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय कार्य किया। इससे एक दिन पूर्व 22 दिसम्बर को इसी उपलक्ष्य में अबानी की स्मृति में अबानी परिवार द्वारा श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी के अन्तर्गत निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया जिसमें ख्याति प्राप्त सर्जन डॉ. राम गोयल एवं डॉ. गोपालचन्द गाँधी ने हर्निया एवं मस्से के आपरेशन किए। मरीजों को 5 दिन की निःशुल्क दवाइयाँ उपलब्ध करायी गई।

आन्ध्रप्रदेशीय रत्नसंघीय पारिवारिक स्नेह मिलन एवं आचार्य हस्ती सेवा सम्मान 13 जनवरी को

हैदराबाद- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् का आन्ध्रप्रदेशीय रत्नवंशीय पारिवारिक स्नेहमिलन तथा आचार्यश्री हस्ती सेवा सम्मान-2012 कार्यक्रम का आयोजन 13 जनवरी, 2013 को रामकोट स्थित जैन भवन में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना के मुख्य आतिथ्य में किया जा रहा है। कार्यक्रम में राष्ट्रीय महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा, अतिरिक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल का भी सान्निध्य प्राप्त होगा। तृतीय '**आचार्य श्री हस्ती सेवा सम्मान 2012**' श्री दिवाकर पाण्डेय (81 वर्षीय वरिष्ठ साहित्यकार, हैदराबाद) को प्रदान किया जाएगा। इस प्रसंग पर आन्ध्रप्रदेशीय रत्नवंशीय पारिवारिक निर्देशिका का विमोचन भी प्रस्तावित है। संघ उत्थान एवं गुरु दर्शनार्थ रत्नसंघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का दक्षिणांचल प्रवास का कार्यक्रम भी रहेगा।

संक्षिप्त-समाचार

देई (बूंदी)- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा कोटा के विज्ञान नगर के चातुर्मास को पूर्ण कर मार्गवर्ती ग्रामों में धर्माराधना कराते हुए बूंदी जिले के देई नगर पधारे। यहाँ पर श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह प्रशंसनीय है। ज्ञान-ध्यान सीखने सिखाने

का क्रम बना हुआ है। 19 वें तीर्थंकर श्री मल्लीनाथ जी के जन्मकल्याणक पर विशेष धर्म आराधना हुई। 5-5 सामायिक की साधना, एकाशन, आयम्बिल, दया, उपवास एवं तेले-बेले के प्रत्याख्यान हुए। महासती जी की सद्प्रेरणा से आचार्यप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती के प्रसंग पर पूरे वर्ष तक आयम्बिल व्रत की साधना किये जाने का शुभारम्भ हुआ। नियमित धार्मिक क्रियाओं से महासती मण्डल का यह प्रवास चातुर्मास काल की भाँति प्रेरक रहा। कोटा के श्रावक श्री रिखबचन्द जी एवं श्रीमती प्रेमलता चतर ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया।

कंवलियास (भीलवाड़ा)- सरलमना, सेवाभावी महासती श्री सन्तोषकंवर जी म.सा. के समाधिमरण पर विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में 13 नवम्बर,2012 को गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया, जिसमें पूज्या महासती जी के सरलता, सेवा आदि गुणों पर प्रकाश डाला गया। श्री अनिल जी सुराणा, अमोलकचन्द जी सुराना आदि ने भी अपने विचार रखे। नसीराबाद में भी चार लोगस्स द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

हिण्डौन सिटी- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के वर्षावास में धर्माराधना एवं तपश्चर्या की कड़ी में सभी वय के बालक-बालिकाओं, श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक-प्रतिक्रमण, आगम अध्ययन तथा अट्ठाइयाँ, तीन मासक्षपण (राजेश जैन, प्रवेश जैन, सतीश जैन) अनेक उपवास, ग्यारह, तेले, आयम्बिल, एकासन आदि तपस्याओं का कीर्तिमान स्थापित किया।

चेन्नई- श्रावक समुदाय द्वारा श्री जैन रत्न स्वाध्याय भवन में आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. की "50वीं दीक्षा जयन्ती" 19 नवम्बर, 2012 को जप-तप-त्यागपूर्वक मनायी गयी। इस अवसर पर श्री प्रदीप जी सेठिया ने आचारांग सूत्र का वाचन एवं विवेचन किया। कार्यक्रम-संचालक श्री जवाहरलाल जी कर्णावट ने आचार्यश्री एवं उपाध्यायश्री की जीवनी प्रस्तुत की। आचार्य श्री के संयममय जीवन पर श्रीमती सरिता सेठिया , श्री नरेन्द्र जी कांकरिया, श्री तरूण जी बोहरा एवं श्रीमती विनीता जी सुराणा ने प्रकाश डाला। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री पी.एम. चोरडिया ने आचार्यश्री की अप्रमत्तता एवं साधना का विवेचन किया। स्वाध्यायी श्री वीरेन्द्र जी कांकरिया ने 'स्वप्निका' पुस्तिका के नियमों की पूर्ण जानकारी दी। श्री सुमेरचंद जी बाघमार ने स्वाध्याय भवन में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के वर्ष 2005 चातुर्मास काल से चल रहे धार्मिक शिविरों, आगम-वाचन आदि गतिविधियों की पूर्ण जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में भी भंवरलाल जी लोढ़ा ने मांगलिक सुनाई।

-आर.नरेन्द्र कांकरिया

जोधपुर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के द्वारा संचालित छात्र-छात्राओं के रविवारीय संस्कार शिविर का कार्यक्रम नियमित रूप से चल रहा है। वर्ष 2013 के आयोजन हेतु स्व. सुश्रावक श्री केवलमल जी लोढ़ा, जयपुर के परिवार की ओर से स्वीकृति प्राप्त हुई है।

-राजेश भण्डारी, शिविर प्रभारी

जोधपुर- पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का103 वाँ जन्म-दिवस दिनांक 25 जनवरी, 2013 को उपस्थित हो रहा है। इस शुभ अवसर को श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा जीवदया-दिवस के उपलक्ष्य में मनाने का निर्णय लिया गया है। एतदर्थ युवक परिषद् द्वारा 103 बकरों को अभयदान देने का लक्ष्य रखा गया है। इस हेतु अधिक से अधिक श्रावक-श्राविकाएँ बकरों को अभयदान देने का लक्ष्य रखें। एक बकरे को छुड़वाने का शुल्क 1000/- रुपये रखा गया है, जिसे आप स्वाध्याय संघ कार्यालय अथवा युवक परिषद् कार्यालय घोड़ों का चौक में जमा कराकर रसीद प्राप्त कर सकते हैं।

-धीरज डोसी, निर्व्यसन एवं जीवदया संयोजक

मदनगंज-किशनगढ- 'कर्मग्रंथ (भाग-1 से 6)' पुस्तक एवं 'पच्चीस बोल की विचारणा' स्वाध्यायियों के लिए निःशुल्क उपलब्ध है, इच्छुक स्वाध्यायी वर्षभर में एक सौ सामायिक (नियम के अतिरिक्त) करने का संकल्प लेकर उक्त पुस्तक-प्राप्ति हेतु श्री छोटेलाल विजयराज मेहता (हरमाड़ा वाले), 25, महावीर कॉलोनी, बस स्टैंड के पास, मदनगंज-किशनगढ-305801, जिला-अजमेर (राज.) फोन नं. 96101-37828 से सम्पर्क कर सकते हैं।

गंगाशहर-भीनासर (बीकानेर)- तपस्विनी श्रीमती जतन देवी जी पटवा धर्मपत्नी श्री सम्पत लाल जी पटवा ने गर्मपानी के आधार पर 111 उपवास किए। इसके पूर्व तपस्विनी बहन ने 83, 61, 45,31 उपवास तथा दो बार 15 एवं 10 बार अट्ठाई तपाराधन किए।

अहमदाबाद- लालभाई दलपत भाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदाबाद में साउथ एशियन स्टडीज, जापान विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष प्रो. रिहो इसाका ने "साउथ एशियन स्टडीज इन जापान" विषय पर 28 दिसम्बर, 2012 को व्याख्यान दिया। यह आयोजन श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर पंकज जानी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

मुम्बई- जैन फुलवारी द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर सर्व जैन विवाह योग्य ग्रेज्युएट एवं अधिक शिक्षा प्राप्त युवक-युवती-परिचय सम्मेलन का आयोजन 10 फरवरी, 2013 को बिड़ला मातुश्री सभागृह, बॉम्बे अस्पताल के पास, मरीन लाइन्स, मुम्बई में प्रातः 9.00

बजे से प्रारम्भ होगा। प्रवेश शुल्क युवक-युवतियों के लिए 500 रुपये रखा गया है, जिसमें श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी सहित सभी जैन समुदाय के उच्च शिक्षित युवक-युवती भाग ले सकते हैं। सम्मेलन में भाग लेने के लिए उम्मीदवार को 30 जनवरी, 2013 तक संस्था कार्यालय, जैन फुलवारी, हिन्द इलेक्ट्रिक प्रिमाइसेस, नागु सयाजी वाड़ी, सामना प्रेस के पास, न्यू प्रभादेवी रोड़, मुम्बई-400025, फोन नं. 09930756598 में अपना आवेदन फोटो और प्रवेश शुल्क सहित जमा कराना अनिवार्य होगा। आवेदन प्रत्यक्ष अथवा डाक/कुरीयर द्वारा भी जमा करा सकते हैं। - *युगराज जैन*

बधाई/चुनाव

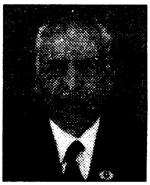

जोधपुर- 30 दिसम्बर, 2012 को कुन्द-कुन्द भारती, नई दिल्ली में आचार्य श्री विद्यानन्द जी एवं अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधिपति श्री दलवीर भण्डारी की उपस्थिति में डॉ. चंचलमल चोरडिया, जोधपुर को 'शाकाहार एवं अहिंसा' के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं हेतु 'अहिंसा इंटरनेशनल भगवानदास-शोभालाल-डालचन्द जैन शाकाहार जीवदया सम्मान पुरस्कार' प्रदान किया गया। पुरस्कार के रूप में इक्कीस हजार रुपये की राशि, शाल, साफा एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गये।

सवाईमोधापुर- श्री विनोद जी जैन, (पूर्व सचिव, श्री जैन रत्न युवक संघ) पार्षद एवं नगर कांग्रेस अध्यक्ष को जैन समाज के प्रतिनिधि सदस्य के रूप में राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास मण्डल, देवस्थान विभाग में पांच वर्ष के लिए नियुक्त किया गया है।

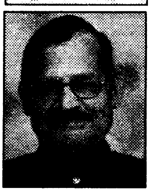

नई दिल्ली- मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुनर्गठित राष्ट्रीय संस्कृत परिषद् में बी.एल. इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी, दिल्ली के निदेशक प्रो. (डॉ.) फूलचन्द जी जैन 'प्रेमी' (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) पाली/प्राकृत भाषा एवं साहित्य के विकास, संरक्षण, संवर्धन तथा प्रचार-प्रसार हेतु प्रतिनिधि सदस्य नामित हुए हैं।

उदयपुर- मंजू जैन (महिमाश्री जी महाराज) ने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग से ''अंग आगम की प्राकृत कथाएँ : एक अनुशीलन'' विषय पर शोधकार्य पूर्ण कर पी-एच्. डी उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने अपना शोधकार्य प्रोफेसर एच.सी.जैन के निर्देशन में सम्पन्न किया।

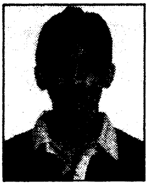

जोधपुर- श्री तुषार भण्डारी सुपुत्र श्रीमती मधुजी एवं श्री शान्तिचन्दजी भण्डारी, सुपौत्र श्रीमती प्रेमकंवरजी एवं स्व. श्री महाराजकुंवरचन्दजी भण्डारी ने निरमा कॉलेज, अहमदाबाद से बी.टेक (सिविल) प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया एवं सर्वश्रेष्ठ छात्र के रूप में भी स्वर्ण पदक प्राप्त किया। वे एम.टेक. हेतु दिल्ली आई.आई.टी. में चयनित हुए।

श्रद्धाञ्जलि

सुश्राविका पारसकंवर भण्डारी का 26 दिवसीय अद्‌भुत आदर्श संथारा सम्पन्न

सद्धर्म पर श्रद्धा एवं आचरण की प्रतिमूर्ति श्राविकारत्न श्रीमती पारसकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्रावकरत्न श्री इन्दरचन्द जी भण्डारी, चेन्नई का 26 दिवसीय संलेखना-संथारे के साथ 5 दिसम्बर, 2012 को सायं 4.45 बजे 79 वर्ष की वय में समाधिमरण हो गया। आपने 10 नवम्बर को प्रातः 7.50 बजे जैन भवन में चातुर्मासार्थ विराजित उपप्रवर्तक श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. 'प्रथम' के मुखारविन्द से चौविहार संथारा ग्रहण किया था।

परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., परमाराध्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., शासनप्रभाविका श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द एवं क्रियावान् संत-सतियों के प्रति दृढ़ श्रद्धालु सुश्राविका का जीवन धार्मिक व्रत-नियमों एवं त्याग-प्रत्याख्यानों से परिपूर्ण रहा। आपके रग-रग में जिनवाणी एवं धर्म पर अपार श्रद्धा थी। यही कारण है कि मामूली कफ की शिकायत होने से ही आपके पावन मन में संलेखना-संथारा स्वीकार करने की भावना जागृत हुई।

अपने अन्त समय को संथारा-समाधिपूर्वक व्यतीत करने की भावना विरले ही श्रावक-श्राविका के मन में उत्पन्न होती है। धन्य है वह श्राविका रत्न, धन्य-धन्य है उनकी अनन्य गुरुभक्ति, संघ भक्ति एवं दृढ़ धर्मिता। पूज्य आचार्य हस्ती के प्रेरक संथारे की छवि सुश्राविका के हृदय-स्थल पर अंकित थी। आपने अपने जीवनकाल में दो मासखमण, इक्कीस, ग्यारह, नौ तथा 16 अठाइयाँ एवं अनेक तेलों की तपस्याएँ करने के साथ अष्टकर्म चूर की आठ ओलियाँ, सिद्धि तप, 16 वर्षों से एकाशन एवं दो वर्षीतप पूर्ण किए। आप तपस्या के कई पारणे अभिग्रह सहित करती थीं। रात्रि चौविहार-त्याग, नित्य

सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, प्रति गुरुवार को पूर्ण मौन रखने के साथ ज्ञान पंचमी, मौन ग्यारस एवं रोहिणी तप की भी आराधना आपने की। इस वर्ष अक्टूबर माह में आपने कवल तप की आराधना की थी।

स्वाध्यायशील होने के कारण आपको उत्तराध्ययन सूत्र, नन्दीसूत्र, दशवैकालिक सूत्र, अनुत्तरौपपातिक सूत्र, सुखविपाक सूत्र एवं अनेक थोकड़े कण्ठस्थ थे। समाचारी की पूर्ण जानकारी होने से स्वास्थ्य एवं औषधि में भी आप पूर्ण विवेक रखती थीं। अपना सम्पूर्ण जीवन धर्म-साधना एवं आत्मकल्याण में लगाते हुए उन्होंने संलेखना पूर्वक संथारे का वरण किया एवं सजगता के साथ पण्डितमरण को प्राप्त किया। धन्य है ऐसी धर्म वीरांगना को, जिन्होंने संथारे के माध्यम से मृत्यु को भी महोत्सव बनाकर आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होते हुए जिनशासन की शोभा बढ़ाई। वे हर पल अप्रमत्त रहने का प्रयत्न करती थीं। उनके रोम-रोम में गुरु हस्ती बसते थे।

संघ एवं समाज की गतिविधियों में भी उनका अमूल्य योगदान रहा। सन् 1991 में आपकी अध्यक्षता में श्राविका सम्मेलन सम्पन्न हुआ। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, चेन्नई की वे संस्थापक अध्यक्ष रहीं तथा सन् 1998 से लगभग चार वर्षों तक कुशल नेतृत्व किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल में उपाध्यक्ष, निदेशिका एवं परामर्शदात्री का दायित्व वहन करने वाली श्राविकारत्न महावीर महिला मण्डल, चेन्नई की दस वर्ष तक अध्यक्ष रहीं। आपके नेतृत्व में महिला उत्थान के अनेक कार्यक्रम हुए। इसके अतिरिक्त आप प्रत्येक शनिवार को अध्यापन का कार्य भी संभालती थी। युवतियों को धर्म के सम्मुख करने हेतु आपकी सत्प्रेरणा से युवती मण्डल स्थापित हुआ। पर्युषणकाल में आपने स्वाध्यायी के रूप में अमूल्य सेवाएँ प्रदान कीं। प्रश्नव्याकरण सूत्र, जैन धर्म का मौलिक इतिहास एवं उत्तराध्ययन सूत्र पर प्रश्नमाला आदि के निर्माण का कार्य आपने दक्षतापूर्वक सम्पन्न किया। आपकी सत्प्रेरणा से समय-समय पर धार्मिक शिविरों का आयोजन हुआ। जिनवाणी पत्रिका में आपकी धारावाहिक कहानियाँ भी प्रकाशित होती रहीं।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सन् 2005 के चेन्नई चातुर्मास में तथा व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के चेन्नई वर्षावास में सभी धार्मिक गतिविधियों में आपकी सक्रिय भागीदारी रही। 2011 के वर्षावास में 24 तीर्थंकर आराधना शिविर में आप 24 दिनों तक महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में रहीं तथा इस दौरान आपकी भावना दीक्षा लेने की हुई, किन्तु संयोग नहीं बन सका। आप अपने परिवार से सदैव कहती रहीं कि मुझे बिना संथारे मत जाने देना। यही भावना आपके जीवन का पाथेय

बनी। 10 नवम्बर आपके जीवन में संथाराग्रहण करने की शुभ घड़ी आई। गुरु हस्ती, हीरा, मान के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाली श्राविका ने उनकी महती कृपा एवं रत्नसंघ के वरिष्ठ श्रावकों की साक्षी में शरीर की स्वस्थता रहते परिवार जनों का मोह छोड़कर, मृत्यु का भय त्यागकर पूर्ण निश्चय एवं सजगता में उपप्रवर्तक श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी म.सा. 'प्रथम' के मुखारविन्द से चौविहार संथारा ग्रहण किया। आपकी सुपुत्रियों श्रीमती तारा वेद, मंजु कुम्भट, कंचन छल्लाणी, रेणु चोरड़िया ने संथारे के समय सेवा का लाभ लिया। युवक परिषद् एवं श्रावक संघ के कार्यकर्ताओं ने भी भजन, जाप आदि का लाभ लिया। 5 दिसम्बर को आपका संथारा सीझ गया एवं 6 दिसम्बर को अन्तिम यात्रा में जैन/जैनेतर, स्थानकवासी, मूर्तिपूजक, तेरापंथी, दिगम्बर आदि सभी सम्मिलित हुए।

7 दिसम्बर 2012 को मरलेचा गार्डन, वेपेरी-चेन्नई में सकल संघ के तत्त्वावधान में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। उपाध्याय श्री प्रवीणऋषि जी म.सा. ने आपके संथारे में सहयोगी समस्त परिवारजनों को साधुवाद देते हुए संथारे की महत्ता पर विचार प्रकट किये। उपप्रवर्तक श्री गौतममुनि जी म.सा. ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि मैंने अपने जीवनकाल में संथारे के अनेक प्रत्याख्यान करवाए हैं, किन्तु सजग अवस्था में ऐसा दीर्घकालीन संथारा पहली बार देखा है। आपकी ज्येष्ठ पुत्रवधू श्रीमती सुशीला जी भण्डारी ने आपके साधनामय जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए आपके उपकारों का वर्णन किया। आपके कनिष्ठ सुपुत्र श्री अशोक जी भण्डारी ने उपस्थित जनसमुदाय के प्रति आभार प्रकट किया।

आप अपने पीछे भरापूरा, धर्मनिष्ठ श्रद्धानिष्ठ एवं संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं- **सुपुत्रः**- श्री प्रसन्नचन्द एवं अशोककुमार जी भण्डारी। **पुत्रवधूः**- श्रीमती मंजु जी एवं सुशीला जी भण्डारी, **सुपुत्रियाँः**- श्रीमती तारा प्रतापचन्द जी वैद, श्रीमती मंजु हरकचन्द जी कुम्भट, श्रीमती कंचन रणजीतमल जी छल्लाणी, श्रीमती रेणु शांतिलाल जी चोरड़िया। **सुपौत्र एवं पौत्रवधूः**- दीपक-समीका, दर्शन-स्नेहा, आनंद-दिव्या भण्डारी। **सुपौत्रीः**- पूजा अभिषेक छाजेड़, **प्रपौत्रः**- तरुण, शौर्य

आप चेन्नई रत्न संघ के कार्याध्यक्ष श्री महावीर चन्द जी भण्डारी की काकीसा तथा श्री हंसराज जी भण्डारी की भ्रातावधू थीं। गृहस्थ जीवन में आदर्श समाधिमरण का इतिहास रचने वाली श्राविका रत्न के जीवन पर कुछ विचाराभिव्यक्ति पृथक् से भी दी जा रही है-

अलग पहचान बनाई है

हम सबने अपने जीवन काल में अनेक श्रावक-श्राविकाओं की संथारा साधना देखी

है, किन्तु चेन्नई की बात की जाए तो विगत 100 वर्षों में भी ऐसा आदर्श संथारा जो कि पूर्ण विधि के साथ लिया गया हो एवं इतनी समाधि के साथ 26 दिनों तक चला हो, स्थानकवासी समाज में देखने में नही आया। सौभाग्यशाली है चेन्नई महानगर एवं उससे भी अधिक गौरवशाली है चेन्नई का रत्नसंघ, जहाँ पर ऐसी उच्चकोटि की साधक आत्मा के संथारा को दृष्टिगत करने का अहोभाग्य प्राप्त हुआ है।

पूर्ण जागृत अवस्था में लिए गए इस संथारे की खास बात यह थी कि करीब 2 माह पूर्व आप आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पास पधारीं एवं संथारा-संलेखना विधि को पूर्णतया समझा। चेन्नई पधारकर कवल तप किया। कवल तप यानी भोजन में एक कवा लेते हुए क्रमशः 28 कवल तक आगे बढना, पुनः 28 से घटते हुए 1 कवल तक आना। उनकी भावना निर्मल रही, क्योंकि उनकी गुरुवर्यों के प्रति अगाध श्रद्धा थी-

हस्ती गुरू से जलाया, ज्ञान का चिराग,
हीरा गुरू से खिलाया, साधना का बाग।
गुरू मान से बढ़ाया चारित्र का अनुराग,
गुणानुवाद के शब्दों में अर्पित है, भावों का पराग।

26 दिन की लम्बी साधना एवं अनंत वेदना को समभाव से सहन करते हुए 5 दिसम्बर 2012 को तीसरे मनोरथ को पूर्ण करते हुए नश्वर देह को त्याग कर आपने अपनी आत्मा को आत्म विशुद्धि से जोड़ लिया।

आप चेन्नई महिला मण्डल की अनमोल धरोहर थी। आज आप हमारे बीच में नहीं हैं। फिर भी आपके संथारे रूपी जीवन की पूंजी समूचे संघ को अध्यात्म के सिंचन में प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। *-उगमचंद कांकरिया, मंत्री-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई*

जीवन की कतिपय विशेषताएँ

अप्रमत्त जीवन- दृढ़धर्मी नियमित साधनाशील संघ-समर्पित मधुरभाषिणी, सरलमना, शांत स्वभावी, आदर्श सुश्राविका श्रीमती पारसकंवर जी भण्डारी ने अपने जीवन का हर पल सजगतापूर्वक व्यतीत किया। जब जब भी उनके निवासस्थान पर मैं मिलने गया, भले प्रातःकाल हो या दोपहर अथवा शाम का समय, उन्हें शास्त्रों एवं धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन या स्वाध्याय में लीन पाया । मैं उनसे पूछता, आप हर समय अध्ययन में ही लीन रहते हो? तब महान् साधिका उत्तर में कहती-प्रतियोगिता के प्रश्नोत्तर खोजने में आगम-शास्त्रों का पठन-पाठन सहज में हो जाता है। परिवार के सदस्य मेरी पूर्ण सेवा करते हैं। उन्होंने मुझे सांसारिक कार्यों से निवृत्त कर मुझ पर उपकार किया है।

निर्लिप्त जीवन– घर-परिवार में रहते हुए भी घर-परिवार उनके अन्तर में नहीं रहा। सजग अवस्था में उनका संथारा इस बात का साक्षी है। साधनामय जीवन का प्रतिफल संथारामय समाधिमरण होता है, परिजनों के साथ रहते हुए भी निर्लिप्त जीवन जिया जा सकता है, इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है आपका संथारामय पंडित मरण।

स्वधर्मी के प्रति आपकी सद्भावना– अपने जीवनकाल में आप स्वयं तो धर्म-साधना करते ही थे एवं साथ ही महिला स्थानक, साहुकारपेट में आगम-वाचन करते हुए श्रावक-श्राविकाओं को भी धर्म-साधना से जोड़ते थे। साहुकारपेट संघ के प्रत्येक धार्मिक कार्य में आपकी मुख्य भूमिका रही। जब भी आपसे मिलने का अवसर प्राप्त होता, आप आशीर्वचन में पूछती कि-आपकी सामायिक साधना कैसी चल रही है ? आपकी सत्प्रेरणा से कई स्वधर्मी भाई-बहिन सामायिक साधना से जुड़े ।

संघहितैषी चिंतिका– आपका जीवन सादगीमय रहा । आपकी हमेशा यही भावना रहती कि संघ-समाज के धार्मिक कार्यक्रम भी सादगीमय हों । चेन्नई में रत्नसंघीय स्नेह-मिलन कार्यक्रम के अगले दिन आपने मुझसे कहा कि आप सभी ने पुरुषार्थ कर कार्यक्रम सम्पन्न किया। उपस्थिति भी अच्छी रही, पर कार्यक्रम की क्या उपलब्धि रही, कौनसा ठोस निर्णय लिया गया, संघ-समाज सुधार का कौनसा प्रस्ताव पारित किया? जब भी विशाल जन समूह का आयोजन देखता हूँ तो आपके कहे हुए शब्द याद आते हैं।

आपका हमेशा यही चिंतन रहता कि संघ-समाज मात्र आयोजनवादी होकर ही न रह जाय, कुछ ठोस कार्य भी समाजहित में होना चाहिए।

-आर. नरेन्द्र कांकरिया, साहुकारपेट, चेन्नई

समूचे भण्डारी परिवार के साथ सम्पूर्ण संघ-परिवार भी परम आदरणीय श्राविकारत्न के इस आदर्श अनुपम संथारे की विमल साधना से धन्य-धन्य एवं गौरवान्वित है।

-ज्ञानेन्द्र बाफना, अध्यक्ष, श्री अ. भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

श्री जवाहरलाल कर्णावट, चेन्नई ने इस अवसर पर अपनी भावाभिव्यक्ति एक गीत के माध्यम से की, जिसकी कुछ कड़ियाँ यहाँ प्रकाशित हैं-

झीणी-झीणी उड़े रे गुलाल, चेन्नई री नगरी में,
इण संथारे रो आनन्द विशाल, आज म्हारी नगरी में।
सिज्यो संथारो इकताल, आज म्हारी नगरी में ।। टेर।।
पारस बाईसा रो आत्मबल सुहायो।
गौतममुनि जी संथारो पच्चखायो।
तप-त्याग सूं चमके थांरो भाल।। 1।। चेन्नई री नगरी में.....।

अंतिम इच्छा थांणी सुखदाई बणगी,

ढलता-ढलता थांणी आशा फलगी।

जीतली बाजी चाल ।। 2।। चेन्नई री नगरी में.....।

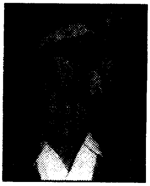

जोधपुर- संघ-सेवी, धर्मानुरागी सुश्रावक श्री अनराज जी कोचर मेहता का 21 दिसम्बर, 2012 को स्वर्गगमन हो गया। आपकी सभी चारित्रात्माओं तथा आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं समस्त साधु-साध्वियों के प्रति अगाध आस्था थी। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में आप सदैव तत्पर रहते थे। आप स्वयं ने त्याग-तपयुक्त संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था, जिसके फलस्वरूप कोचर मेहता परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में अग्रणी है। आपके सुपौत्र श्री श्रेयांस जी मेहता अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् में महासचिव पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना के श्वसुर थे।

चेन्नई- सुश्रावक श्री केवलचन्द जी संचेती (नागौर निवासी) सुपुत्र श्री तिलोकचन्द जी संचेती का 67 वर्ष की आयु में 6 नवम्बर, 2012 को देवलोकगमन हो गया। आप मधुरभाषी, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं सरल थे। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के प्रति पूर्ण समर्पित है एवं संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव अग्रणी रहता है।

जोधपुर- समर्पित धर्मानुरागी श्री चाँदमल जी नाहटा सुपुत्र स्व. श्री पूनमचन्द जी नाहटा का 14 नवम्बर, 2012 को देहावसान हो गया। आप स्नेहमय एवं मिलनसार धार्मिक व्यक्तित्व के धनी थे। आपका सम्पूर्ण परिवार आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीवृन्द के प्रति पूर्ण समर्पित है।

जरखोदा (बून्दी)- वीरदादी, उदारहृदया सुश्राविका श्रीमती पांची बाई जी धर्मपत्नी सुश्रावक स्व. श्री जीतमल जी जैन का 92 वर्ष की आयु में 16 नवम्बर, 2012 को स्वर्गवास हो गया। आप आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी सुशिष्या महासती श्री दीपिका जी म.सा. की सांसारिकपक्षीया दादीजी थीं। आप परोपकारी, मिलनसार एवं उदारमना थीं। सभी संत-

सतीवृन्द की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं।

उदयपुर- धर्मनिष्ठा सुश्राविका श्रीमती शान्ता जी धर्मपत्नी श्री चन्द्रसिंह जी मुणोत का 69 वर्ष की आयु में 25 अक्टूबर, 2012 को स्वर्गगमन हो गया। आप सरल स्वभावी, मिलनसार एवं मृदुभाषी थीं। आप अपने पीछे संस्कारित परिवार छोड़ कर गई हैं।

जयपुर- सुश्रावक श्रीमान् निर्मल कुमार जी कर्णावट का 20 दिसम्बर, 2012 को देवलोक गमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे।

बैंगलुरु- कर्मयोगी सुश्रावक श्री मोहनलाल जी मुथा सुपुत्र स्व. श्री सिरेमल जी मुथा का

74 वर्ष की वय में 9 दिसम्बर, 2012 को स्वर्गगमन हो गया। आप ऑल इण्डिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉंफ्रेन्स कर्नाटक शाखा के प्रान्तीय अध्यक्ष थे। आपका जीवन सरलता, दानवीरता, मिलनसारिता, स्वधर्मी-सहायता सेवा से ओतप्रोत था। आप कई धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। आप अपने पीछे धर्मसहायिका श्रीमती मैनाबाई, दो पुत्र एवं दो पुत्रियों का सुंसस्कारित तथा सेवाभावी परिवार छोड़कर गए हैं।

पाली मारवाड़- धर्मानुरागी मृदुभाषी सुश्रावक बी. शांतिकुमार जी सुराणा गोदपुत्र श्री

सुकनराज जी सुपुत्र स्व. श्री चम्पालाल जी धारीवाल का 58 वर्ष की आयु में 24 दिसम्बर 2012 को भिवड़ी (महाराष्ट्र) में स्वर्गवास हो गया। आप संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी, तीन पुत्रियाँ एवं एक पुत्र का संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी।

मौजपुर- दृढ़निष्ठ, अनुशासनप्रिय सुश्रावक श्री सुखदेवप्रसाद जी जैन का 90 वर्ष की उम्र में

19 दिसम्बर 2012 को देहावसान हो गया। मौजपुर जैन समाज के आप अध्यक्ष रह चुके थे। पूर्व में आप दिल्ली में रहते थे तथा वहां स्वतंत्रता संग्राम के समय नित्यप्रति गांधी की प्रार्थना सभा में जाया करते थे। आप अपनी दबंग आवाज के कारण पूरे मौजपुर में विख्यात थे। साहित्य पठन तथा लेखन में आपकी विशेष रुचि थी। कई सालों से प्रत्येक माह की जिनवाणी को पुन: अपनी कॉपियों में लिखा करते थे। यह क्रम उनके अन्तिम समय से कुछ दिनों पूर्व तक जारी रहा। आप स्वाध्याय संघ में कार्यरत श्री कमलेश मेहता के दादीससुर थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

14645 श्री राजेन्द्र कुमारजी जैन, बी-195, मयूरविहार, फेस-द्वितीय, नईदिल्ली (दिल्ली)
14646 श्री विपुल कुमारजी बाफणा, जे-100, एम.आई.डी.सी, जलगाँव (महाराष्ट्र)
14648 श्री धर्मेन्द्र कुमारजी जैन, 80 फीट रोड़, महेश नगर, जयपुर (राजस्थान)
14658 श्री राहुलजी सिंघवी, भगत की कोठी विस्तार योजना, जोधपुर (राजस्थान)
14661 डॉ. एस. सी. सिंघवीजी, 191, कमला नेहरू नगर, जोधपुर (राजस्थान)
14666 श्रीमती नम्रताजी कोचर, ईसमामिया बाजार, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
14677 श्री सुन्दरलालजी छाजेड़, डाकघर के पास, पुरानीलेन, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)

250/-(अर्द्धमूल्य योजना) जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता

श्री प्रसन्नचंदजी, पुनवानचंदजी, हस्तीमलजी, लिलमचंदजी, शांतिलालजी ओस्तवाल, भोपालगढ़-जोधपुर-मुम्बई-चेन्नई के सौजन्य से

14633 श्री विजयजी जैन, 64/298, हीरा पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14634 श्री आशिषजी जैन, 13/533, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14635 श्री पारसमलजी लोढ़ा, पोस्ट-धनोप, वाया-कोठिया, जिला-भीलवाड़ा (राज.)
14636 Shri Rajendraji Chordia, Bangaluru (Karnataka)
14637 Aakashji Merlecha, Bangaluru (Karnataka)
14638 Shri Vikramji Bagmar, Vepery, Chenai (Tamilnadu)
14639 श्री संतोषजी बाफणा, महाविदेह, सदर बाजार, राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)
14640 श्री मृणालजी जैन, 162/79, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर (राजस्थान)
14641 श्री महेन्द्र कुमारजी सुराणा, 83/194, हल्दीघाटी मार्ग, सांगानेर, जयपुर (राज.)
14642 श्री प्रवीण कुमारजी जैन, गुर्जर की थड़ी, गोपालपुरा, जयपुर (राजस्थान)
14643 श्री वीरेन्द्र कुमारजी जैन, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, महुवा, जिला-दौसा (राज.)
14644 श्री सुनील कुमारजी जैन, पंसारी बाजार, पुरानी धान मंडी, भीलवाड़ा (राजस्थान)
14647 Shri Pradeepji Hirawat, Vepery, Chenai (Tamilnadu)
14649 श्री प्रेमरत्नजी मेहता, गायत्री नगर विस्तार, मकान नं. 97, जयपुर (राजस्थान)
14650 श्री तपनजी जैन, 4-ए-15, महावीर नगर-तृतीय, कोटा (राजस्थान)
14651 श्री संदीपजी जैन, 2-र-6, विज्ञान नगर, कोटा (राजस्थान)
14652 श्री ईश्वरलालजी धारीवाल, मेन रोड़, गाँधी चौक, जामनेर, जलगाँव (महाराष्ट्र)
14653 श्री दिलीप कुमारजी धाडीवाल, काठेड गली, कोनर द्वारिका, नासिक (महाराष्ट्र)
14654 श्री रोहित कुमारजी डोसी, नया बास, ब्यावर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14655 श्री मुकेश कुमारजी जैन, महावीर नगर, सेक्टर नम्बर 4, उदयपुर (राजस्थान)
14656 श्री अजय कुमारजी राखेचा, पंचमुखी हनुमान मंदिर के पीछे, जलगाँव (महाराष्ट्र)

14657 श्री मनोजजी फुलफगर, शांतिनगर, हीरावाड़ी पंचवटी, नासिक (महाराष्ट्र)
14659 श्री सुरेशचंदजी जैन, शक्तिनगर रोड़-4, पावटा सी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14660 श्री राजेशजी सिंघवी, बनावतों का बास, सिटी पुलिस, जोधपुर (राजस्थान)
14662 श्रीमती वीणाजी सांड, शुवा भवन, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)
14663 श्रीमती दमयंतीजी बागरेचा, इमरतीया बेरे के पीछे, पावटा सी रोड़, जोधपुर (राज.)
14664 श्री कमलेश कुमारजी जैन, 71, तिलक नगर, छावनी, कोटा (राजस्थान)
14665 श्री मनीषजी चौपड़ा, जैन कॉलोनी, बैंक कॉलोनी, राईका बाग, जोधपुर (राज.)
14667 सुश्री दिव्याजी पटवा, रेलवे लाईन के पास, पावटा ए रोड, जोधपुर (राजस्थान)
14668 श्री संदीपजी सिंघवी, ए-59, शिव रोड़, रातानाड़ा, जोधपुर (राजस्थान)
14678 श्री दीपकजी जैन, 1 ख 33, कमला नेहरू नगर, पाली (राजस्थान)
14679 श्री निखिलजी सिंघवी, 700, आठवीं डी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)
14680 श्री जयप्रकाशजी जैन, नेताजी सुभाष नगर द्वितीय, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
14681 श्री राकेशजी जैन, रामेश्वरम् कॉलोनी, टोंक रोड़, सांगानेर, जयपुर (राजस्थान)
14682 श्री भागचंदजी जैन, वर्धमान नगर, हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (राजस्थान)
14683 श्री संतोष कुमारजी जैन, तरुछाया नगर, तारों की कूट, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)
14684 श्री एम.एस. गांगजी, हरी नगर. पी.एफ. कार्यालय के पास, जोधपुर (राजस्थान)
14685 श्री मनोजजी नाहटा, 62, सुशील नगर, भगत की कोठी, जोधपुर (राजस्थान)

250/- अर्द्धमूल्य-योजना (श्री लाभचंदजी कोठारी, जयपुर द्वारा धर्मपत्नी सौ. किरणजी कोठारी के सिद्धि तप सम्पूर्ण होने के उपलक्ष्य में)

14669 श्री अक्षयजी गाँधी, लाखणगाँव, तालुका-आवेगाँव, जिला-पूना (महाराष्ट्र)
14670 श्री सुमितजी मुथा, मेन रोड़, इचलकरंजी, जिला-कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
14671 श्री अक्षयजी जैन, मौखा पाड़ा, केथूनी पोल, कोटा (राजस्थान)
14672 श्री प्रणीतजी खिंवसरा, नीलमणि गणेशमंदिर के पास,मनमाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)
14673 सौ.कां. प्रणीताजी चौपड़ा, दत्त नगर, पड रोड़, पंचवटी, नाशिक (महाराष्ट्र)
14674 सौ.कां. अनीताजी बागरेचा, कजगाँव रोड़, पारोला, जिला-जलगाँव (महाराष्ट्र)
14675 सुश्री भाग्यश्रीजी ललवाणी, 916 बी, सोमवार पेठ, चाँदवड, नाशिक (महाराष्ट्र)
14676 श्री अक्षयजी लोढ़ा, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, पीथमपुर, जिला-धार (मध्यप्रदेश)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

11000/- श्री उमेशजी संचेती, चेन्नई, श्री केवलचन्दजी सुपुत्र श्री त्रिलोकचन्दजी संचेती (नागौर वाले) का दिनांक 06 नवम्बर, 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

5000/- श्री बुद्धिप्रकाशजी, नरेन्द्र कुमारजी, महेन्द्रजी जैन, कोटा, चि. गौरवजी सुपुत्र श्री नरेन्द्रजी जैन का शुभविवाह दिनांक 10 दिसम्बर, 2012 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री प्रकाशमलजी, सुनीलकुमारजी, हर्षजी बोथरा, चेन्नई, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के सपरिवार दर्शनलाभ करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री संजय जी गाँधी, जोधपुर, अपने पिताजी पूज्य स्व. श्री पारसमल जी एवं माताजी स्व. श्रीमती उगमकंवर जी गाँधी की पुण्यस्मृति में।

2100/- श्रीमती उर्मिलाबाई जी बुरड, चेन्नई, की तरफ से सहयोग हेतु भेंट।

1111/- श्री धनसुरेशजी, आशीष कुमारजी, अमितजी जैन, मंडीरोड-सवाईमाधोपुर, चि. सुमितजी सुपुत्र श्रीमती इन्द्राजी धनसुरेशजी जैन संग सौ.कां. हिमाजी सुपुत्री श्रीमती मंगलाजी प्रकाशजी जैन (उनियारा), कोटा के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री दानमलजी, इन्दिराजी जैन, महावीर नगर-जयपुर, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. व उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के अर्द्धशती दीक्षा पर्व 19 नवम्बर, 2012 को आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री राजेन्द्रजी, मन्जुलाजी जैन (जरखोदा वाले), जयपुर, सौ.कां. अंजलिजी का शुभविवाह चि. आशीषजी सुपुत्री श्री ओमप्रकाशजी इन्दिराजी जैन के संग दिनांक 07 दिसम्बर, 2012 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री धनरूपचंदजी, अमित कुमारजी मेहता (पीपाड़ वाले), बेंगलुरु, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन लाभ करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री आशीषजी, धर्मीचन्दजी ललवाणी, वेलदा-तापी, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन लाभ करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री प्रकाशचन्दजी, सुशील कुमारजी डूँगरवाल (थाँवला वाले), बेंगलुरु, पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त के दर्शन लाभ करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री धर्मचन्दजी, प्रदीप कुमारजी जैन (श्यामपुरा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. संदीपजी सुपुत्र श्री धर्मचन्दजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. नीलमजी सुपुत्री श्री मुकेश कुमारजी जैन के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री हस्तीमल बसन्तीदेवी सुराणा ट्रस्ट, कोलकात्ता-बेंगलुरु -नागौर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं संत-सतीवृन्द के दर्शन लाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री दिलखुशराज जी जैन, मुम्बई, अपने दोहिते नैतिक सुपुत्र वन्दना दीपक जी चौपड़ा, उज्जैन के जन्म के उपलक्ष्य में।

1000/- श्री महावीरचन्दजी, राजेश कुमारजी मूथा, बेंगलुरु, श्री मोहनलालजी मूथा की पावन स्मृति में सप्रेम भेंट।

1000/- श्रीमती मानकंवर जी सिंघवी, जोधपुर, अपने पौत्र मोहित जी सिंघवी सुपुत्र श्री राजेन्द्रचन्द जी सिंघवी का शुभविवाह सौ. कां. मेघना के साथ सुसम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री कल्याणप्रसाद जी जैन, वर्धमाननगर, हिण्डौन, अपने पुत्र चि. संतोषकुमार का शुभविवाह सौ. क्षमा सुपुत्री श्री पदमचंद जी जैन, गंगापुर सिटी के साथ 05.12.2012 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

501/- श्री माणकचन्दजी जैन (एण्डवा वाले), सोडाला-जयपुर, चि. नानेशजी सुपौत्र स्व. श्री सुन्दरलालजी, सुपुत्र श्री माणकचन्दजी जैन का शुभविवाह दिनांक 29 नवम्बर, 2012 को

सौ.कां. निशाजी, सुपौत्री श्री फूलचन्दजी, सुपुत्री श्री महेन्द्र कुमारजी जैन-चौथ का बरवाड़ा के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री दौलतचन्दजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्री प्रेमचन्दजी जैन सुपुत्र श्री दौलतचंदजी जैन का दिनांक 13 नवम्बर, 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

501/- श्री मदनलालजी, राजेन्द्र प्रसादजी, धर्मचन्दजी, सुरेन्द्रजी, विजेन्द्रजी जैन (पाटौली वाले), मानसरोवर-जयपुर, पूज्य पिताश्री स्व. श्री शंकरलालजी जैन की चौदहवीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री मुकेश कुमारजी, राकेश कुमारजी, लोकेश कुमारजी जैन (करेला वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री श्री प्रभुलालजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्रीमती स्वातिजी अनुपमजी गांग (यू.एस.ए.), कु. आनन्या के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री महेन्द्रजी गांग, सूरत, श्रीमती स्वाति गांग एवं श्री अनुपमजी गांग (यू.एस.ए. निवासी) के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

502/- श्रीमती ललिताजी महेन्द्रजी गांग, सूरत श्री महेन्द्रजी गांग के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती ललिताजी महेन्द्रजी गांग, सूरत, विवाह की सालगिरह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री राधेश्यामजी जैन (करमोदा वाले), सवाईमाधोपुर, सुश्री मोनिकाजी ने तृतीय श्रेणि शिक्षक भर्ती परीक्षा 2012 में 75.61 अंक अर्जित कर बूंदी जिले के नैनवाँ पंचायत समिति के बामनगाँव में पद नियुक्ति प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री भँवरलालजी, सुगनचन्दजी, संदीपजी बोथरा, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त के दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री अमरचन्द आर. जैन (संचेती), मल्कापुर-बुलढाणा, स्व. श्री राणीदानजी संचेती की छठी पुण्यस्मृति पर भेंट।

500/- श्री रामदयालजी जैन (रिटायर तहसीलदार), फाजिलाबाद-करौली, श्री त्रिलोकचंदजी जैन की दिनांक 31 अक्टूबर, 2012 को सेवानिवृत्ति हो जाने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री राजेन्द्रचंद जी सिंघवी, जोधपुर, सुपुत्र स्व. श्री किस्तूरचन्द जी सिंघवी द्वारा सप्रेम भेंट।

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

20000/- श्री प्रमोदजी लोढ़ा, महावीर नगर-जयपुर, पुस्तक 'शिवपुरी की सीढ़ियाँ' के पुनः मुद्रण के लिए आर्थिक सहयोग।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

240000/- श्री हरीश जी कवाड़ एवं परिवार, पुनमल्लै, चेन्नई।

60000/- श्री पी. दलीचन्द सुरेश कुमार जी कवाड़, पुनमल्लै, चेन्नई, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

60000/- श्री एस.एस. जैन संघ, तिरूवन्नमल्लै, चेन्नई, पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर, पंडितरत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा के तिरूवन्नमल्लै में ऐतिहासिक चातुर्मास की सफलता की खुशी में।

12000/- श्रीमती ऐश्वर्या एवं दीपक जी डोसी, ब्यावर (राज.)।

12000/- श्री मोहनलाल जी मोतीलाल जी जोगड, पीलखोड़, जलगांव (महा.), पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

12000/- श्रीमती मंजुला जी जैन, जबलपुर, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री बस्तीमल जी श्रेणिक जी चोरडिया, चेन्नई, श्रीमती उषा चोरडिया धर्मपत्नी श्री श्रेणिक जी चोरडिया पुत्रवधू श्री बस्तीमल जी चोरडिया के चौथे वर्षीतप का पारणा मदनगंज-किशनगढ़ में आचार्यश्री के सान्निध्य में पूर्ण होने की खुशी में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

पौष शुक्ला 8, शनिवार	**19.01.2013**	**अष्टमी**
पौष शुक्ला 14, शुक्रवार	**25.01.2013**	**चतुर्दशी, आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का 103वाँ जन्म-दिवस**
पौष शुक्ला 14, शनिवार	**26.01.2013**	**चतुर्दशी, पक्खी**
माघ कृष्णा 4, गुरुवार	**31.01.2013**	**उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 79 वाँ जन्म-दिवस**
माघ कृष्णा 8, रविवार	**03.02.2013**	**अष्टमी**
माघ कृष्णा 14, शनिवार	**09.02.2013**	**चतुर्दशी, पक्खी**
माघ शुक्ला 2, मंगलवार	**12.02.2013**	**आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 93 वां दीक्षा-दिवस**
माघ शुक्ला 8, सोमवार	**18.02.2013**	**अष्टमी**
माघ शुक्ला 14, रविवार	**24.02.2013**	**चतुर्दशी, पक्खी**

श्री महावीरायनमः

जय गुरु हीरा | श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः | जय गुरु मान

आचार्य हीराचन्द्र-उपाध्याय मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

प्रतिपल स्मरणीय, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्त्तण्ड, बाल ब्रह्मचारी, युगमनीषी, परमाराध्य

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा.

के 103वें जन्म-दिवस

शुक्रवार, दिनांक 25-01-2013

के अवसर पर गृहीत

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

क्रमांकः

संकल्प-पत्र

संकल्प गृहीता का नाम..

1. पर्युषण महापर्व पर सेवा देना
2. प्रतिदिन 15 मिनिट स्वाध्याय करना
3. प्रतिदिन सामायिक-व्रत आराधन के साथ आगम-स्वाध्याय
4. वर्ष में एक नया स्वाध्यायी बनाना
5. रात्रि भोजन त्याग (आजीवन/1 वर्ष/माह में 25 दिवस)
6. ज्ञानाराधना (50/25/11 थोकड़े जैनागम स्तोक कण्ठस्थ)
7. ब्रह्मचर्य व्रत धारण (आजीवन/1 वर्ष)

मैं देव-गुरु-धर्म की साक्षी से उक्त चिह्नित संकल्पों को श्रद्धाभक्ति एवं अहोभाव पूर्वक पालन करूंगा/करूंगी।

हस्ताक्षर

नोट- कृपया काउन्टर फार्म में ग्रहण किए हुए संकल्प क्रमांक चिह्नित (✓) व भरकर प्रधान कार्यालय जोधपुर को प्रेषित करावें।

संकल्प-ग्रहण पत्र

(1)........(2) ....(3) ....(4) ....(5) ....(6) ....(7) ....

संकल्प गृहीता का नाम..

पिता/पति का नाम..

पता..

निवेदक : | हस्ताक्षर

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 0291-2624891

ईमेल- swadhyaysanghjodhpur@gmail.com

ईस्वी सन् 2013 के घोषित अहिंसक अगते

(जो प्रतिवर्ष प्रभावी है)

राजस्थान सरकार स्वायत्त शासन विभाग के नोटिफिकेशन संख्या एफ. 1/609/एल.ए.जी./49 दिनांक 14.01.50, 20.11.67, 12.09.74, 29.09.88 एवं एफ.-29/विविध/डी.एल.बी./2000/1394-1617 दिनांक 18.5.2000 एवं स्वायत शासन विभाग 2001/7740 दिनाँक 28.08.02 के अनुसार ईस्वी सन् 2013 वर्ष में राज्य में घोषित अहिंसक अगताओं की माहवार सूची नीचे दी जा रही है। इन दिनों बूचड़खाने, कसाई खाने व पशुओं को कत्ल कर मांसादि का विक्रय करना कानूनन बंद है।

क्र.सं.	दिनांक	नाम अगता	वार	घोषित तिथि / दिनांक
1.	26 जनवरी	गणतन्त्र दिवस	शनिवार	26 जनवरी
2.	30 जनवरी	गांधी निर्वाण दिवस	बुधवार	30 जनवरी
3.	10 मार्च	महाशिवरात्रि	रविवार	फाल्गुन कृ. 14
4.	14 अप्रेल	स्था. अगता अम्बेडकर ज.	रविवार	14 अप्रेल
5.	19 अप्रेल	रामनवमी	शुक्रवार	चैत्र शु. 8
6.	19 अप्रेल	स्था.महा.ज्योतिराव फूले ज.	शुक्रवार	चैत्र शु. 9
7.	23 अप्रेल	भ.महावीर जयंती	मंगलवार	चैत्र शु. 13
8.	21 मई	आ.देवेन्द्रमुनि निर्वाण दिवस	मंगलवार	वैशाख शु. 11
9.	25 मई	बुद्ध पूर्णिमा	शनिवार	वैशाख शु. 15
10.	15 अगस्त	स्वतन्त्रता दिवस	गुरुवार	15 अगस्त
11.	28 अगस्त	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	बुधवार	भादवा कृष्णा 8
12.	09 सितम्बर	गणेश चतुर्थी	सोमवार	भादवा शु. 4
13.	10 सितम्बर	ऋषि पंचमी	मंगलवार	भादवा शु. 5
14.	18 सितम्बर	अनन्त चतुर्दशी	बुधवार	भादवा शु. 14
15.	02 अक्टूबर	गाँधी जयंती	बुधवार	2 अक्टूबर
16.	30 अक्टूबर	पेडा ग्यारस	बुधवार	कार्तिक कृ. 11
17.	02 नवम्बर	छोटी दीपावली	शनिवार	कार्तिक कृ. 14
18.	03 नवम्बर	दीपावली	रविवार	कार्तिक कृ. अमावस
19.	04 नवम्बर	स्था. अगता अग्रसेन जयंती	सोमवार	आसोज शु. 1
20.	17 नवम्बर	कार्तिक पूर्णिमा	रविवार	कार्तिक शु. 15

नोट-1. राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर खण्डपीठ के निर्णय रिट याचिका सं. 1170/88 दिनांक 26.07.88 तथा श्रम विभाग के आदेश सं. एफ.11/9/श्रम/86 दिनांक 22.12.88 के अनुसार **प्रत्येक शुक्रवार को भी अहिंसक अगता घोषित** है।

2. अगतों की पालनार्थ कृपया संबंधित पालिकाधिकारी, जिला कलेक्टर, उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार व पुलिस अधीक्षक, थानाधिकारी व श्रम विभाग अधिकारी से सम्पर्क करें।

-अध्यक्ष/मंत्री, जीव दया मण्डल ट्रस्ट (रजि.), टोंक (राज.)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

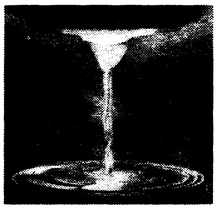
Electric Arc Furnace

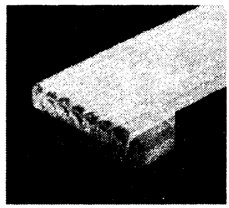
Billets

Rolling Mill

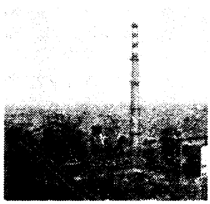
Captive Power Plant

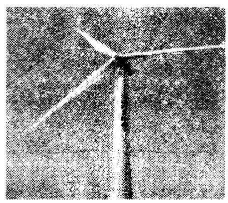
Windmill

With best wishes from

ISO 9001 2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

 # 29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के सफलता की ओर बढ़ते चरण

- छात्रवृत्ति योजना के माध्यम से रत्नसंघ की परम्परा एवं महिमा की यशकीर्ती का चारों ओर फैलाना।
- समाज में बढती विकृतियों के बावजूद नई पीढ़ी के छात्र-छात्राओं का धर्म एवं संघ से जुड़ना।
- रत्नसंघ में छात्रवृत्ति योजना के माध्यम से सामायिक, प्रतिक्रमण एवं पच्चीस बोल की जानकारी वाले नए युवा छात्र-छात्राएँ तैयार करना।
- छात्रवृत्ति योजना के कारण युवारत्न छात्र-छात्राओं ने जैन धर्म का क्रमिक अध्ययन अर्थात् आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के माध्यम से जैन धर्म के सिद्धान्तों को समझना।
- छात्रवृत्ति योजना द्वारा संचालित शिविरों के माध्यम से छात्र-छात्राओं का गुरुभगवन्तों की सेवा ज्ञान-ध्यान की ओर लगाव बढ़ा।
- योजना के माध्यम से कई धार्मिक अध्ययन कराने वाले छात्र-छात्राएँ तैयार, जो अपने स्थानीय क्षेत्रों में लगने वाले शिविरों में अध्यापन कार्य में सहयोग करते हैं।
- छात्रवृत्ति योजना के तहत संचालित शिविरों के माध्यम से अनेक छात्र-छात्राएँ संघ में धर्मनिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में तैयार।
- छात्रवृत्ति योजना के माध्यम से जैसे ही नए युवा छात्र-छात्राएँ संघ से जुड़े वैसे ही कई रत्नसंघ परिवारों में संघ के प्रति वापस जागृति।
- रत्नसंघ में शिक्षित युवाओं का आगमन संघ को चहुँमुखी विकास की ओर अग्रसर करने में सहायक।
- संघ के वीर परिवार एवं कर्मचारी परिवार के बच्चों के उच्चशिक्षा में पूर्णत: एवं विशेष रूप से सहयोग करना।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के शुभ अवसर पर एक वर्ष के लिए योजना का विस्तार कर दिया गया है। अत: आप सभी गुरु भाई 50वें दीक्षा वर्ष के शुभ अवसर पर उदारमना संघ-सेवी श्रीमन्तों, श्रेष्ठीजनों से विनयपूर्वक निवेदन है कि इस योजना में मुक्तहस्त से अर्थ सहयोग अवश्य प्रदान करावें एवं अपने सम्पर्क में आने वाले गुरुभाइयों में प्रेरणा करावें।

अनन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते है, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है।

Scholarship Fund Bank A/c Details
A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168

सहयोग राशि भेजने एवं योजना संबंधित अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

1. **Ashok Kavad,** Chennai (9381041097)
2. **Sumtichand Mehta,** Pipar (9414462729)
3. **Mahendra Surana,** Jodhpur (9309087760)
4. **Budhmal Bohra,** Chennai (9444235065)
5. **Rajkumar Golecha,** Pali (9829020742)
6. **Manoj Kankaria,** Jodhpur (9414563597)
7. **Praveen Karnavat,** Mumbai (9821055932)
8. **Kushalchand Jain,** Sawai Madhopur (9460441570)
9. **Jitendra Daga,** Jaipur (9829011589)
10. **Mahendra Bafna,** Jalgaon (9422773411)
11. **Harish Kavad,** Chennai (9500114455)
12. **Manish Jain,** Chennai (9543068382)

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Hasti   Jai Guru Heera   Jai Guru Maan

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 71 ★ अंक : 01 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जनवरी, 2013 ★ पौष, 2069

।।जय गुरु हीरा।।　　　　।।जय गुरु मान।।

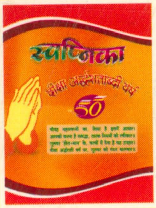

स्वप्निका

स्वप्निका क्या है?

स्वप्निका चौदह स्वप्नों के आधार पर बनी एक अनमोल पुस्तक है,
जो घर-घर की दस्तक है।
इसमें सिर्फ पृष्ठ ही नहीं, प्रज्ञा की पुष्टता एवं प्रेरणा की प्रधानता भी है।
इसमें सिर्फ लाइनें ही नहीं, अपितु लाइन पर चलने
की लगन भी संलग्न है।
इसमें सिर्फ शब्द ही नहीं, अपितु शब्दातीत साधना
के मधुर स्वर भी समाहित है।
इसमें सिर्फ अक्षर ही नहीं, अपितु अक्षय की
अनुभूति की अनुगुञ्ज भी है।
इसमें सिर्फ पेज ही नहीं, प्रगति का स्टेज भी है।
इसमें सिर्फ पंक्तियाँ ही नहीं, पंक से मुक्त
महापुरुषों की उक्तियाँ भी उल्लिखित हैं।
इसमें सिर्फ मुक्तक ही नहीं, मुक्त होने की
मंगल मनीषा का महासन्देश भी है।

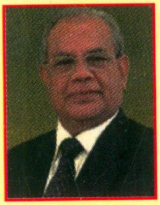
मोफत राज मुणोत

पुस्तिका ₹ 20/-

प्राप्ति स्थान

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन: 0141-2575997, 2571163 फैक्स: 2570753

विज्ञापन सौजन्य : कल्पतरू ग्रुप

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - विरदराज सुराणा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर
से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर - 302003 से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. धर्मचन्द जैन